वृहद
हस्तरेखा शास्त्र



हस्तरेखा शास्त्र

प्रणय रेखा

हृदय रेखा

शनि रेखा

मानस रेखा

जीवन रेखा

वृहद त्रिकोण

सूर्य रेखा

बुध रेखा

शनि रेखा



तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

- *प्रकाशक :*

  तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

  गांधी मार्ग, निकट ओडियन सिनेमा, मेरठ।

  फोन : (0121) 2516598, 3294144

  फैक्स : (0121) 2513756

  E-mail : tulsisahitya@epatra.com

- *पुस्तक :*

  हस्तरेखा ज्ञान

- *प्रस्तुति :*

  आबिद रिज़वी

- *आन्तरिक पृष्ठसज्जा :*

  दिव्य ग्राफिक्स, मेरठ।

- *मुद्रक :*

  नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ।

- *मूल्य :*

  20.00 रुपये मात्र

आपके भूत, वर्तमान और भविष्य की पूरी कहानी आपकी हस्तरेखाओं में छिपी है। आप हस्तरेखाओं का अध्ययन करके आयु, स्वास्थ्य, धन, सम्पत्ति, प्रेम, विवाह, स्वभाव, चरित्र, आदि जीवन से सम्बद्ध, प्रिय एवं अप्रिय, घटनाएं, जीवन की सफलता-असफलता की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। रेखाओं की अपनी भाषा होती है। रेखाओं की भाषा समझने के लिये गहन अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक 'हस्तरेखा शास्त्र' आपको हस्तरेखाओं की भाषा समझने में सक्षम बनायेगी। इस पुस्तक की अनमोल सामग्री सरल एवं रोचक शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

विषय-सूची

हस्त-रेखा विज्ञान

हस्त विज्ञान की उत्पत्ति के लिये जानने हेतु हमें संसार के इतिहास के आरंभ के दिनों की ओर देखना होगा और मनुष्य के आदिकाल के पूर्वजों का स्मरण करना होगा, जिन्होंने बड़े-बड़े साम्राज्यों, सभ्यताओं, जातियों और राजकुलों के नष्ट हो जाने के बावजूद अपने ज्ञान के भंडार को सुरक्षित रखा। हमारा तात्पर्य पूर्वी देशों में रहने वाले हिन्दू विद्वानों की ओर है जिनके दर्शन और प्रज्ञान को आज फिर से मान्यता देने का क्रम आरंभ हो गया है। सभ्यता के उस काल को आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इतिहास के पीछे जाना हमारे लिये सम्भव नहीं है। परंतु भारत की स्मारक इमारतों के खंडहर और गुफाओं में बने मंदिर, पुरातत्व-वेत्ताओं के साक्ष्य के अनुसार इतने पुराने हैं कि इतिहास भी उनके निर्माण काल को बताने में असमर्थ है। हस्त विज्ञान के इतिहास के लिये हमें प्रागैतिहासिक काल की ओर जाना होगा!

भारत की प्राचीन काल की स्मारक इमारतें हमें बताती हैं कि रोम या इजरायल की स्थापना से बहुत पहले इस देश में ज्ञान का कितना बहुमूल्य भंडार एकत्रित कर लिया गया था। प्राचीन काल की कुछ गुफाओं में बने मंदिरों में नरसिंही मूर्तियों की रहस्यपूर्ण आकृतियां अपनी मूक भाषा में यह बताती हैं कि यह ज्ञान यहां के विद्वानों को अन्य देशों से पहले था। ऐसे ही विद्वान हस्त विज्ञान के जन्मदाता थे और बाद में उनके बताये हुये सिद्धांत अन्य देशों में पहुंचे।

सामुद्रिक शास्त्र और ज्योतिष मनुष्य की वे प्रारंभिक वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं जो उसे सभ्यता के आरंभ में ही प्राप्त हुईं। तब से आज तक इस सामुद्रिक हस्त विज्ञान में निरन्तर विकास होता रहा है। आज भी इसके क्षेत्र में नये-नये आविष्कार हो रहे हैं। इस शताब्दी का सबसे बड़ा हस्तरेखाओं का ज्ञाता और आधुनिक युग का विश्वविख्यात भविष्य-वक्ता सर काउण्ट लुईस हेमन ने शताब्दियों से अविश्वास और उपेक्षा की धूलि में दबे सामुद्रिक शास्त्र का पुनरुद्धार किया। कीरो के नाम से विश्वविख्यात, जर्मनी निवासी महान् ज्योतिषाचार्य ने हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन-मनन और विश्लेषण कर इसी सदी के पूर्वार्द्ध में अनेक सच्ची भविष्यवाणियां कीं। अमेरिका के राष्ट्रपतियों, ब्रिटिश प्रधानमंत्रियों के अलावा अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्ष विश्वविख्यात अभिनेता-अभिनेत्री, कलाकार, वैज्ञानिक, उद्योगपति कीरो से अपना भविष्य जानने के लिये लालायित रहते थे, क्योंकि उसकी भविष्यवाणियां शत-प्रतिशत सत्य होती थीं। हस्तरेखा विज्ञान के क्षेत्र में उसकी ख्याति को अब तक विश्व का कोई भविष्यवक्ता स्पर्श नहीं कर पाया।

***

जब भी आप किसी का हाथ देखने के लिए पकड़ें तो वह या तो 1. गद्देदार नर्म हाथ होगा, 2. साधारण परंतु अच्छा हाथ या 3. शुष्क, सरल और खुरदरा हाथ अथवा 4. लचकदार हाथ होगा।

1. गद्देदार हाथः– ऐसे हाथ वाले व्यक्ति आमतौर पर सुस्त, गैर जिम्मेदार, अयोग्य होंगे। यह लोग मेहनत करना पसंद नहीं करते। बल्कि जीवन की खुशियों का मजा बगैर पैसा खर्च किये करना चाहते हैं। न तो दूसरों की मदद करते हैं, न ही अपनी। इनके दिमाग में चाहे कितना भी ज्ञान का भंडार हो, उसकी अभिव्यक्ति तथा उसका उपयोग करने में यह लोग असमर्थ रहते हैं। यह लोग घरेलू धंधों में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। वैसे इनकी प्रकृति अच्छी होती है। इनमें सहनशीलता कम होती है, जिससे मामूली कठिनाई से भी ये लोग घबरा जाते हैं, जिसका हल इनको आसानी से नहीं सूझता है और इधर-उधर सहायता के लिए झांकते हैं।

2. साधारण परंतु अच्छी त्वचा वाला हाथः– यह व्यक्ति बुद्धिमान, अच्छे विचारों वाले तथा प्रगतिशील होते हैं। यह लोग शांतिप्रिय होते हैं, और किसी भी कीमत पर शांति बनाये रखना चाहते हैं। यह दूसरों के अच्छे सुझावों को सुनते भी हैं, और मानते भी हैं। यह लोग कड़े शब्द सुनना और कहना पसंद नहीं करते। कल्पनाशील होते हुए भी हर बात को नैतिकता की दृष्टि से देखते हैं।

3. भद्दे और सख्त हाथः– इन लोगों की प्रकृति भी भद्दी होती है, जो इनकी बातचीत और इनके कार्यों से प्रकट होती है। यह लोग रूढ़िवादी होते हैं तथा आसानी से न अपने आप को बदल सकते हैं, और न ही दकियानूसी रीति-रिवाज बदलते हैं। जब इनको क्रोध आ जाये, तो यह लोग जानवरों की तरह व्यवहार कर सकते हैं। ऐसे हाथ आमतौर पर दिहाड़ीदार, मजदूरों, मैकेनिकों, मिस्त्रियों तथा अन्य हाथ के काम करने वाले व्यक्तियों में पाये जाते हैं।

4. लचकदार हाथः– यह लोग संतुलित विचारों वाले होते हैं तथा जीवन में बहुत उन्नति करते हैं। इनमें शीघ्र उचित निर्णय लेने की क्षमता होती है, और यह अपने आप को हर तरह के वातावरण में ढाल लेते हैं। इन लोगों में दूसरों की अपेक्षा सामान्य ज्ञान अधिक होता है तथा यह लोग यथार्थवादी होते हैं। इनको कोई भी जिम्मेदारी वाला काम सौंपा जा सकता है। ऐसे हाथ आमतौर पर डॉक्टरों, वकीलों, व्यापारियों तथा अन्य ऊंचे पदों पर लगे हुए व्यक्तियों में देखे जा सकते हैं।

आकार की दृष्टि से हाथों का वर्गीकरण इस प्रकार हैः

1. वर्गाकार हाथः– इस हाथ वाले व्यक्ति यथार्थवादी होते हैं, जो हर काम नियमानुसार करते हैं, तथा जीवन में अनुशासन को मान्यता देते हैं। यह खुले मैदान में योगासन और कसरत करने के शौकीन होते हैं, इनकी सेहत आमतौर पर ठीक रहती है। यह लोग स्पष्टवादी, विश्वसनीय होते हैं, तथा हर काम को सही ढंग से करने में विश्वास रखते हैं।

2. त्रिकोणाकार हाथः– यह व्यक्ति आदर्शवादी एवं कल्पनाशील होते हैं। यह लोग योजना बनाने में एवं लिखने में निपुण होते हैं। यह लोग दिमागी काम अधिक करते हैं तथा कला और साहित्य के शौकीन होते हैं। यह कठिनाइयों का सामना करने में प्रायः असफल रहते हैं, तथा भावनाओं पर कंट्रोल न होने के कारण शीघ्र क्रोधित हो उठते हैं।

हाथ को दो भागों में बांटा गया हैः 1. हथेली 2. उंगलियां नाखूनों सहित।

अगर हाथ की लम्बाई तथा उंगलियों की लम्बाई बराबर रहे तो जातक संतुलित चरित्र का होता है। वह गुणवान तथा अच्छी आदतों वाला इंसान होता है। अगर हथेली, उंगलियों से बड़ी हो तो व्यक्ति में व्यापारिक बुद्धि होती है, जिससे वह हर चीज का मूल्यांकन सही करता है तथा सही निर्णय लेता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भावनाओं में नहीं बहता।

अगर उंगलियों वाला भाग हथेली से लम्बा हो तो व्यक्ति सोचता अधिक है, काम कम करता है, या थोड़े काम को करने में अधिक समय लगाता है।

अगले अध्यायों में हम विस्तार से पढ़ेंगे कि हाथ से कैसे भविष्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

☆☆☆

हाथ की बनावट

आकार की दृष्टि से हम हाथों का वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते हैं।

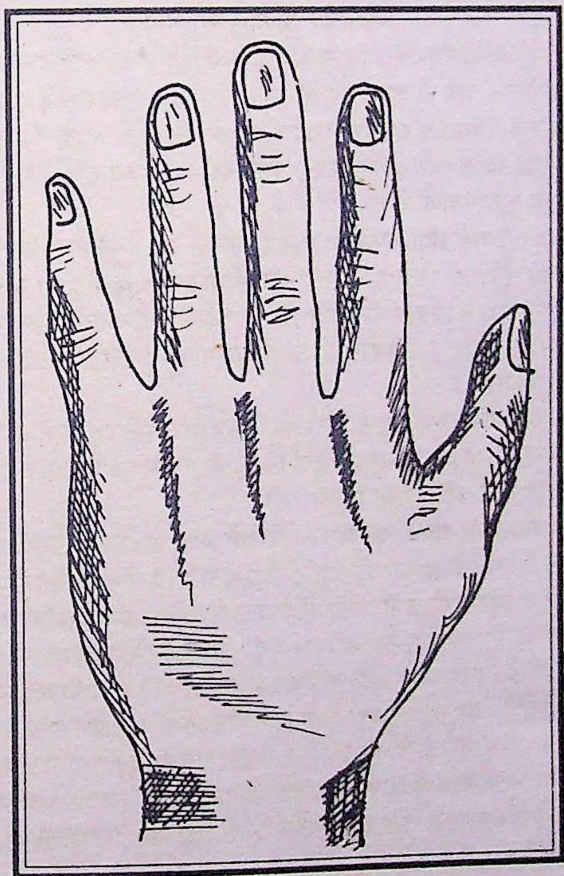
1. वर्गाकार अथवा समकोण हाथ (Square tape)
2. चमसाकार हाथ (Spatuate hand)
3. कलाकार हाथ अथवा नुकीले हाथ (Conical tape)
4. दार्शनिक हाथ (Philosopher's hand)
5. निम्नवर्गीय हाथ (Common hand)
6. मिश्रित हाथ (Mixed hand)
7. मूर्ख व्यक्ति का हाथ
8. कातिल का हाथ
9. औरत का हाथ

अपने अनुभव के आधार पर हम ऊपर के वर्गीकरण के बाद 1. चौड़ा और भारी हाथ 2. कोमल हाथ 3. अधिक रेखाओं वाला हाथ, 4. कम रेखाओं वाला हाथ इनके बारे में भी अध्ययन करेंगे जिससे हमें नये तथ्य मिलेंगे। इन सब प्रकार के हाथों वाले व्यक्तियों में क्या गुण और क्या अवगुण होते हैं, हम नीचे पढ़ेंगे।

समकोण हाथः– यह हाथ चौकोर होता है- हथेली, उंगलियां, अंगूठा सभी चौकोर होते हैं, उंगलियां पीछे से मांसल होती हैं, और उत्तरोत्तर पतली होती जाती हैं, जिनके फलस्वरूप उंगलियों में छिद्र नहीं होते। देश व समाज के विशिष्ठ व्यक्तियों के ऐसे ही हाथ देखने में आते हैं। देखने में यह हाथ सुंदर होता है। ऐसे व्यक्तियों की आकृति भी चौकोर होती है। खासकर इनका मस्तक चौकोर होता है। सारा शरीर मांसल, हृष्ट-पुष्ट व कोमल होता है। इनका प्रधान ग्रह बृहस्पति अथवा शुक्र होता है। पूर्ण समकोण हाथ में हाथ की उंगलियां टेढ़ी या तिरछी नहीं होतीं और भाग्य रेखा पूर्ण होती है। ऐसे व्यक्ति उच्च विचारों के, अच्छे रहन-सहन वाले, धनी, मानी, सेवा भावी, सच्चरित्र, कुटुम्ब वाले, प्रसिद्ध, धैर्य, सम्पन्न व बुद्धिमान होते हैं। इनमें हर चीज को देखने व परखने की शक्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों को जीवन में सभी प्रकार का सुख मिलता है।

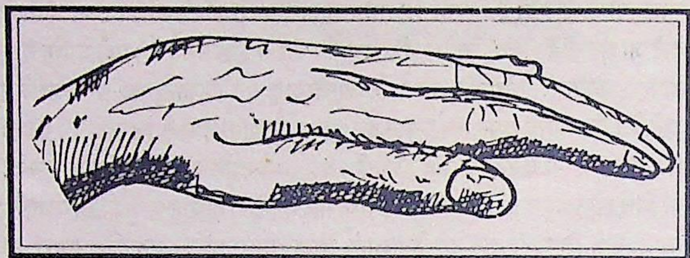
बृहस्पति बुद्धि व शासन का प्रतीक है अतः ऐसे व्यक्तियों में शासन करने की योग्यता व बुद्धिमता पायी जाती है। ये लोग रूढ़िवादी होते हैं, तथा समाज में प्रचलित आचार- विचार तथा रीति-रिवाजों का सम्मान करते हैं। इनमें अपने कुटुम्ब

को ऊंचा ले जाने की प्रबल आकांक्षा पाई जाती है। नम्रता के साथ-साथ यह लोग स्वाभिमानी भी होते हैं। अगर यह लोग नौकरी करते हों तो हमेशा उच्च पदों पर देखे जा सकते हैं। प्रायः स्वतंत्र जीवन यापन करना इन्हें पसंद है। यही व्यक्ति वैद्य, डॉक्टर, वकील, उद्योगपति, व्यापारी, जागीरदार, बड़े किसान, सेठ या राजा जैसे होते हैं। यह व्यक्ति धर्मशास्त्र एवं न्याय शास्त्र के ज्ञाता होते हैं। इनको ठंडे प्रदेशों में व्यापार करना व रहना पसंद होता है। यह लोग धार्मिक एवं व्यापारिक उत्सवों पर दिल खोलकर धन का व्यय करते हैं तथा मंदिर, स्कूल, धर्मशाला, कुआं, औषधालय बनवाने के लिए भी दान देते हैं। स्वार्थ सिद्ध करते हुये भी यह लोग दूसरों की



समकोण हाथ

भलाइ करत ह। अंतिम आयु में यह एकांतवास तथा ईश्वर चिंतन करते हैं। प्रायः आखिरी आयु इन्हें जीवन साथी के बगैर ही वितानी पड़ती है।



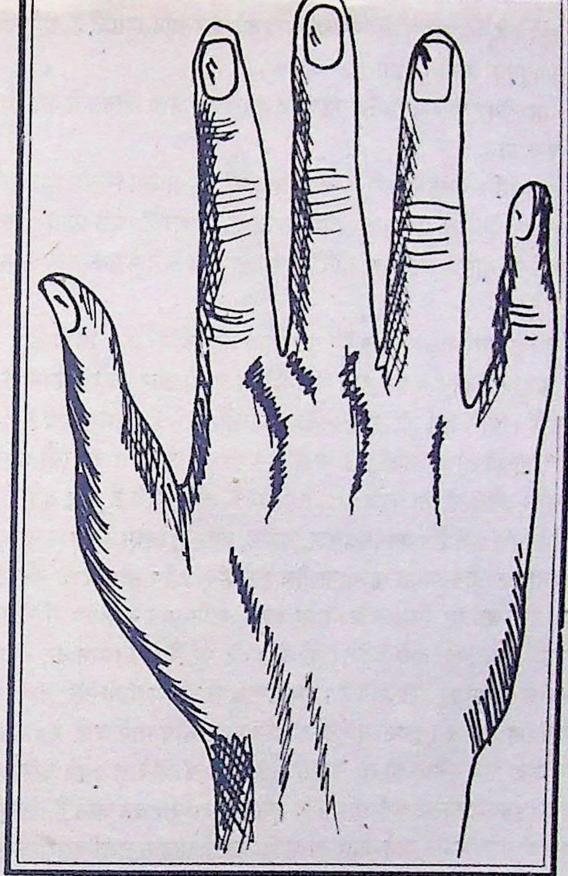
समकोण हाथ का ऊपरी भाग

यह व्यक्ति सम्मिलित कुटुम्ब के समर्थक होते हैं, तथा इनकी उन्नति के लिए अगर इन्हें कुछ त्याग भी करना पड़े, तो उसके लिए सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने प्रभाव से दूसरों के झगड़े चाहे वह कुटुम्ब के हों या गांव अथवा देश के, निपटा देते हैं। यह व्यक्ति स्वयं झगड़ा करना पसंद नहीं करते जब तक मजबूरी न हो। झगड़ा या मुकदमेबाजी से दूर रहते हैं।

इनके बाल शीघ्र सफेद हो जाते हैं। इनके वंश में किसी न किसी व्यक्ति की आंखों में खरावी होती है। मस्तक रेखा में शनि के नीचे थोड़ा भी झुकाव होने से या हृदय रेखा में शनि के नीचे दोष होने पर गुर्दे का दर्द, बवासीर रोग हो सकता है। शुक्र पर अधिक रेखायें होने की दशा में हृदय की बीमारियां व रक्त-चाप का रोग हो सकता है।

ऐसे व्यक्ति स्पष्ट रूप से किसी का विरोध नहीं करते। दूसरे से सहमत होने के पश्चात् ही यह अपनी सम्मति उन्हें विरोध के रूप में देते हैं। इनके सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्ति इनसे प्रसन्न रहते हैं।

चमसाकार हाथः– यह हाथ चमचे जैसी शक्ल के होते हैं। इनकी उंगलियां भी आगे से चमचे के आकार की अर्थात् चौड़ी होती हैं। कभी-कभी ऐसे हाथ कलाई की ओर से और कभी-कभी उंगलियों के पास से अधिक चौड़े देखे जा सकते हैं। आमतौर पर उंगलियां टेढ़ी-मेढ़ी नहीं पाई जातीं, अगर टेढ़ी हों तो यह हाथ की उत्तमता को बढ़ाती हैं। इनमें मंगल और बृहस्पति प्रधान ग्रह होते हैं। शनि का पर्वत कुछ नीचा होता है। यह हाथ न बड़ा होता है, न छोटा मगर समकोण हाथ से मिलता जुलता है। हाथ भारी हो तो भी उंगलियों में छिद्र होते हैं। इन हाथों में प्रायः जीवन रेखा और भाग्य रेखा में आपस में सम्बंध होता है तथा मस्तिष्क रेखा का हृदय रेखा से सम्बंध होता है। यह सम्बंध किसी गौण रेखा द्वारा दो रेखाओं को मिलाने से बनता है।



चमसाकार हाथ

यह व्यक्ति गर्म मिजाज, जल्दबाज तथा क्रांतिकारी होते हैं। यह किसी के नीचे काम करना बर्दाश्त नहीं करते। यह अपना भविष्य स्वयं बनाते हैं तथा अपने पैरों पर खड़े होना अधिक पसंद करते हैं। जैसे-जैसे इनकी आयु बढ़ती है यह व्यक्ति प्रभावशाली बनते जाते हैं। इनके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं और इनका पूरा जीवन संघर्षपूर्ण होता है।

इनका अपने कुटुम्ब के व्यक्तियों से सैद्धांतिक मतभेद होता है। अतः घर में सुख शांति नहीं मिलती। अपने घर में ही यह पहले क्रांति लाते हैं। यह लोग इतनी

उन्नति करते हैं, कि अपने वंश की प्रतिष्ठा को चार चांद लगाते हैं, इनका अंतिम समय सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

यह लोग हमेशा परिवर्तन को पसंद करते हैं। अतः जीवन में कई बार स्थान परिवर्तन करते हैं।

यह व्यक्ति पहले नौकरी करते हैं, बाद में कोई अपना स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं। यह लोग जीवन के उत्तरार्ध में अधिक उन्नति करते हैं। यह व्यक्ति जैक आफ आल ट्रेड एण्ड मास्टर आफ नन होते हैं। इनकी रुचि अनेक प्रकार के काम सीखने की होती है।

इनके पुत्र अधिक होते हैं। लड़कियों की संख्या कम रहती है।

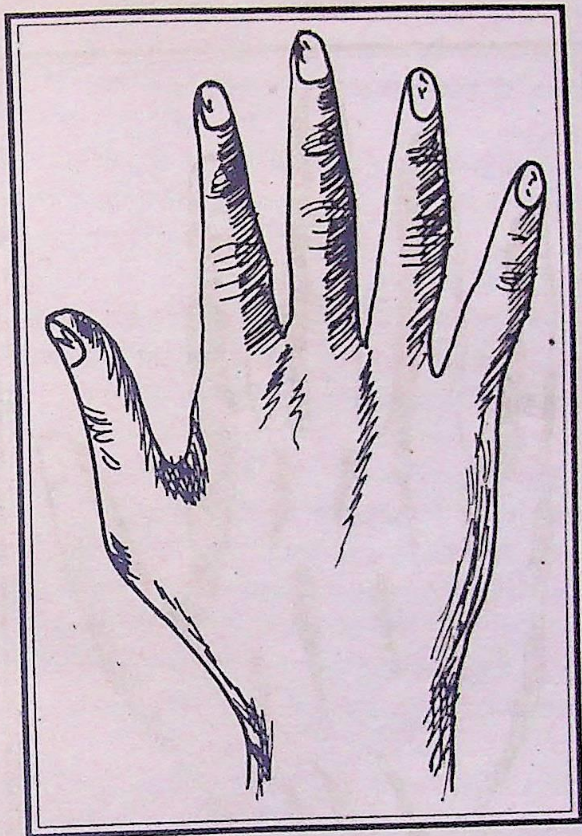
कलाकार हाथः— इस हाथ में उंगलियां लम्बी और नुकीली होती हैं, नाखून बड़े होते हैं। इनमें सूर्य की उंगली विशेष सीधी होती है, अगर हाथ की आकृति समकोण भी हो तो भी उंगलियां मोटी होने पर भी आगे से नुकीली होती हैं।

ऐसे व्यक्तियों की कला और साहित्य में रुचि होती है और यह आलोचना करने में निपुण होते हैं। यह चित्रकार, नर्तक, गायक, उत्तम श्रेणी के वादक बनते हैं। यह भावुक और अत्यंत कल्पानाशील होते हैं। विशेष भाग्य रेखा और सूर्य रेखा होने पर इन्हें प्रसिद्धि मिलती है। रहन-सहन, खान-पान से लेकर रति क्रिया तक सभी कार्य कलात्मक होते हैं। घर की सजावट पर विशेष ध्यान देते हैं, परंतु घर की ओर से लापरवाह देखे जाते हैं। समयाभाव के कारण पत्नी और बच्चों की ओर से लापरवाह होते हैं। इनके सूर्य और शनि ग्रह प्रधान माने जाते हैं। अगर इनके हाथ में शुक्र क्षेत्र उन्नत हो तो स्त्रियों के सम्पर्क में आने से इनमें चरित्र दोष आ जाता है। इनके अक्सर कई औरतों से अनैतिक सम्बंध बन जाते हैं। अगर स्त्रियों के हाथ में ऐसे लक्षण पाये जायें तो ऐसी स्त्रियां भावुक तथा दूसरों के प्रभाव में आने वाली होती हैं। सांसारिक दृष्टि से ऐसे लोग असफल ही देखे गये हैं।

चंद्र या बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत होने पर यह लोग सरल और शुद्ध होते हैं। यह लोग प्रसिद्धि के योग्य भी होते हैं, और इनको प्रसिद्धि भी मिलती है। इनके पास जाकर इनकी कला की प्रशंसा करके आप कोई भी काम निकलवा सकते हैं।

इनमें अत्यंत मानवीय गुण होने के कारण तथा कल्पनाशील होने के कारण यह व्यक्ति अपनी पत्नी तथा संतान में कम रुचि लेते हैं, फलस्वरूप गृहस्थ से यह लोग उदासीन और असंतुष्ट रहते हैं। इन व्यक्तियों में कोई न कोई शौक जरूर होता है— सिगरेट, शराब आदि को ये प्रेरणा स्रोत मानते हैं।

यदि ऐसे व्यक्तियों में मंगल का क्षेत्र उभरा हुआ हो तो यह उच्च कोटि के

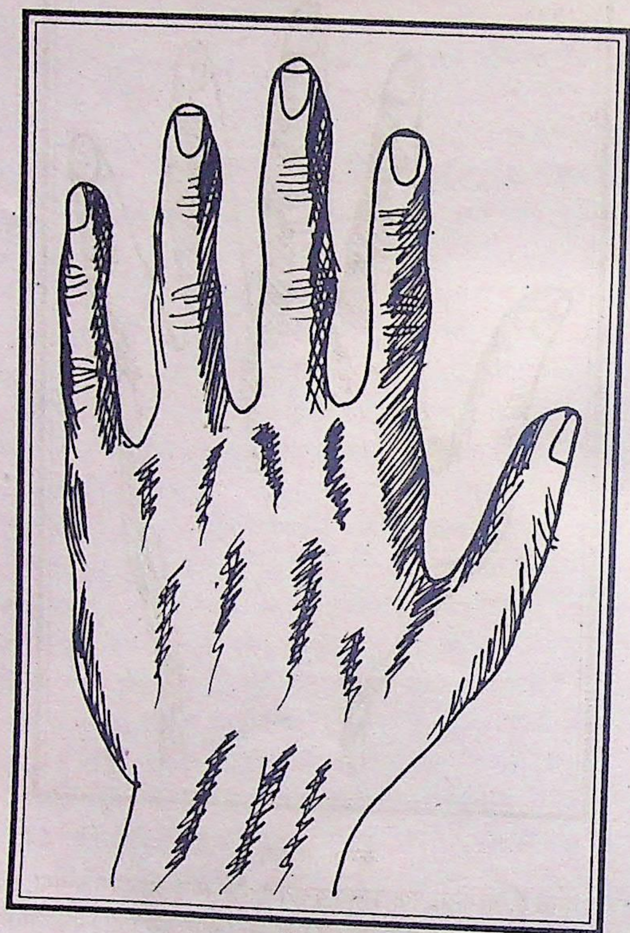


कलाकार हाथ

दस्तकार बनते हैं, जो कलात्मक वस्तुएं बनाते हैं, जैसे स्वर्ण आभूषण बनाना, सुंदर कपड़े बनाना, सुंदर कलात्मक फर्नीचर बनाना, सुंदर मूर्तियां बनाना। ऐसे व्यक्तियों का समाज में सम्मान तथा कुटुम्ब में विरोध होता है। यह व्यक्ति अपनी धुन में लगे रहते हैं।

कड़े परिश्रम के बाद व्यवसाय में सफल होते हैं, फिर इनकी समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ती है, परंतु अपने घर में विरोध का ही सामना करना पड़ता है।

दार्शनिक हाथः– दार्शनिक हाथ लम्बे आकार के होते हैं। इनमें हड्डियां साफ दिखाई देती हैं, उंगलियों में गांठें उभरी हुई होती हैं। नाखूनों वाला पर्व आधा चौकोर



दार्शनिक हाथ

होता है और आधा नुकीला, अंगूठा बड़ा होता है जिसके दोनों पर्व बराबर होते हैं। उंगलियां मिलाने पर हाथों में छेद दिखाई देते हैं।

यह लोग किसी भी विषय पर अपने विचार व्यक्त करने से पहले अच्छी तरह सोचते हैं। यह लोग सुंदरता की बजाय सच्चाई की तलाश में रहते हैं। किसी भी विषय के बारे में 'क्यों' की गुत्थी सुलझाने में लगे रहते हैं। प्यार की भावना के लिए इनमें महत्व कम रहता है। इन हाथों में सूर्य, बृहस्पति और शुक्र पर्वत उठे हुए होते हैं।

इन व्यक्तियों के घर में आमतौर पर लड़कियां अधिक जन्म लेती हैं। परंतु अगर बृहस्पति का क्षेत्र उभरा हुआ हो तो पहले लड़के पैदा होते हैं, फिर लड़कियां, ऐसे व्यक्तियों के संतान अधिक होती है।

यह व्यक्ति हमेशा कुछ न कुछ सोचते रहते हैं। अगर कहीं इनके हाथ में अधिक रेखाएं हों तो इस आदत की हद हो जाती है। अगर कहीं चंद्रमा का पर्वत अत्यंत उच्च हो तो पागलखाने तक पहुंच सकता है।

इनको स्वयं के लिए निर्णय लेने में विलम्ब हो जाता है, क्योंकि हर काम को करने से पहले ये बीसों बार सोचते हैं।

यह व्यक्ति अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं। कभी किसी को यह व्यक्ति गलत सलाह नहीं देते। हर बात को सही ढंग से कहने का इनको सलीका होता है।

यह व्यक्ति धन का संचय नहीं कर सकते। इन व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती। इन्हें कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ जाता है। यह लोग व्यापार में बहुत कम सफल होते देखे गये हैं। नौकरी में यह लोग ठीक रहते हैं।

यह व्यक्ति अपने आत्म-सम्मान का विशेष ध्यान रखते हैं। यह लोग सफाई पसंद, मिलनसार एवं प्रकृति सौंदर्य के उपासक होते हैं।

यह लोग साधु वृत्ति के, ईश्वर में विश्वास रखने वाले होते हैं। दान एवं परोपकार में संलग्न रहते हैं। यह लोग समाजसेवी अथवा किसी संस्था के संचालक बनते हैं।

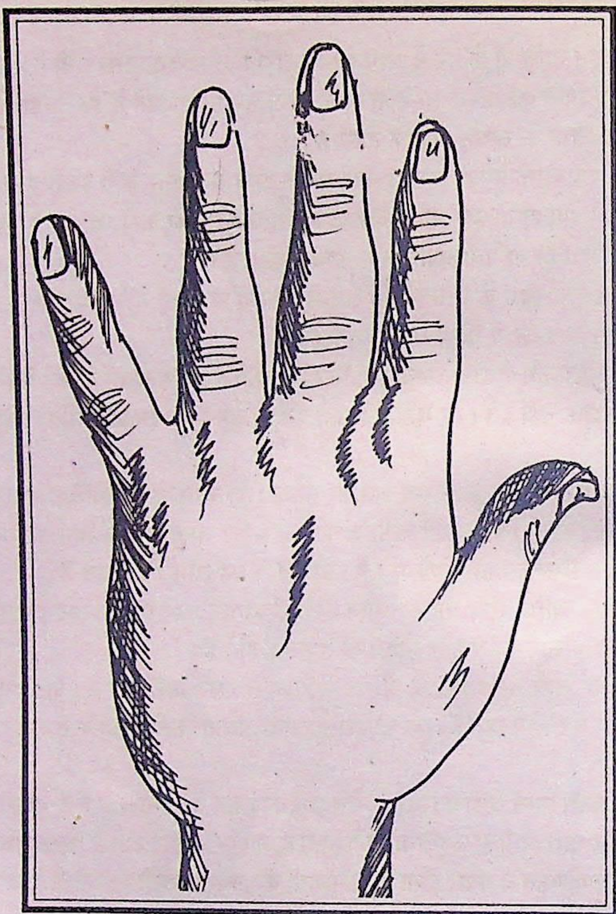
सबसे निम्न श्रेणी का हाथः– ऐसे हाथ की जिल्द बहुत मोटी होती है, हथेली मोटी और भारी होती है, उंगलियां छोटी होती हैं, नाखून भी छोटे होते हैं। ऐसा हाथ बेढंगा, अपरिष्कृत व गंवार होता है। उंगलियों की अपेक्षा हथेली बड़ी होती है, जो जातक की पशुवृत्ति दर्शाती है।

ऐसे लोग जानवर की तरह खाते-पीते हैं, मजदूरी करते हैं, सोते है, लड़ते हैं तथा विषय वासना में मस्त रहते हैं।

इन व्यक्तियों का अंगूठा छोटा और मोटा होता है। इनमें आत्मबल व साहस नहीं होता।

क्रोधावेश में आकर यह लोग कत्ल तक कर सकते हैं। ऐसे हाथ प्रायः निम्न वर्ग में पिछड़े लोगों में पाये जाते हैं। जहां शिक्षा का प्रसार है और सुसंस्कृत लोग रहते हैं, वहां ऐसे हाथ कम मिलेंगे।

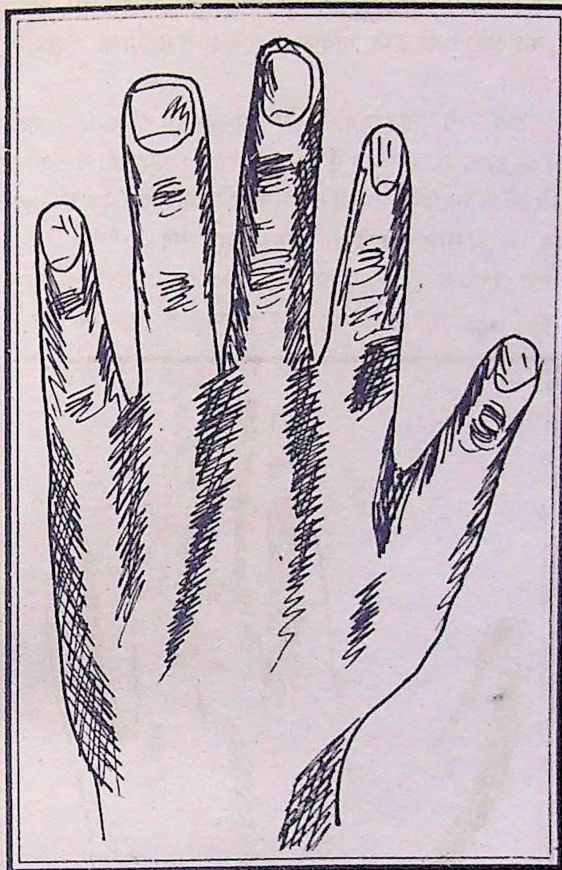
मिश्रित हाथः– बहुत से हाथ ऐसे होते हैं, जिनका आसानी से वर्गीकरण



सबसे निम्न श्रेणी का हाथ

नहीं किया जा सकता। न तो यह पूरी तरह वर्गाकार होते हैं और न ही चमसाकार, न नुकीले होते हैं। इनमें सभी प्रकार के हाथों के मिश्रित गुण पाए जाते हैं। हाथों की चार उंगलियां हैं तो कोई नुकीली होगी, कोई आगे से वर्गाकार तो कोई आगे से फैली हुई।

अगर ऐसे हाथ में मस्तक रेखा बलवान हो तो ऐसा व्यक्ति किसी ऐसे कार्य में अपनी बुद्धि लगाएगा जिसमें उसकी योग्यता विशेष हो उस कार्य में उसके अन्य गुण भी सहायक होंगे, जिन कार्यों में नीति का प्रयोग करता है, वहां यह चतुरता



मिश्रित हाथ

पूर्ण अपने कार्य में सफलता हासिल करेंगे।

यह लोग अपने आपको परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेते हैं। इनमें अस्थिरता, परिवर्तनशीलता बहुत होती है।

यदि हथेली किसी एक प्रकार की हो और उंगली भिन्न-भिन्न प्रकार की हों तो जातक में विभिन्न प्रकार के गुण तथा योग्यता होती है। इसके लिए दूसरे हाथों का जिनका ऊपर वर्णन किया गया है अध्ययन करें कि किस हाथ के गुण इस व्यक्ति में विशेष हैं।

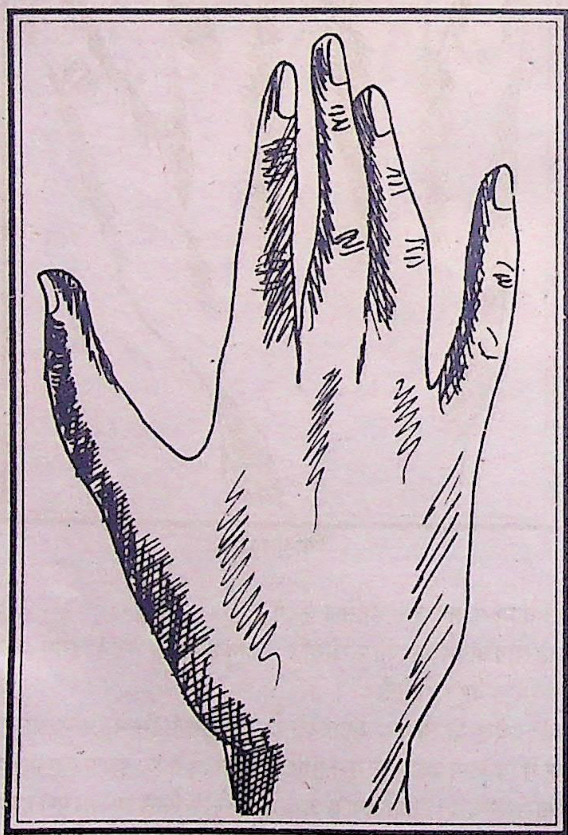
औरत का हाथः– औरत का हाथ अर्थात् घरेलू औरत, मां, पत्नी, बेटी, बहन

का हाथ। इस हाथ में औरत के सभी गुण आ जाते हैं। जैसे प्रेम, सहनशीलता, वफादारी, तर्क शक्ति की कमी, भविष्य में होने वाली घटना का पूर्वाभास, उसकी पसंद, नापसंद।

ऐसे हाथ न तो वर्गाकार होते हैं, न चमसाकार। यह प्रायः नुकीले देखे जा सकते हैं। इन हाथों की उंगलियों में गांठें नहीं होतीं। ऊपर की गांठ बिल्कुल नहीं होती। नीचे की गांठ मामूली सी मोटी हो सकती है, क्योंकि ऐसे हाथ वाले व्यावहारिक अनुशासन, कर्त्तव्य-पालन आदि की ओर झुकाव पसंद करते हैं।

अगर अंगूठा छोटा हो तो जातक कोई भी बात अपने दिल में नही पचा सकता।

अगर अंगूठा बड़ा हो तो स्त्री चुस्त चालाक होती है। ऐसी स्त्री विवाह को



औरत का हाथ

भी व्यापार की दृष्टि से देखता है। ऐसी औरत कई बार आदमियों की तरह व्यवहार करती हैं। कई बार तो यह व्यर्थ चिंताग्रस्त रहती हैं, और कभी-कभी यह हुकूमत करने वाले लहजे में बात करती हैं। जो स्त्रियां घर के काम काज की बजाय अन्य ऑफिस के कार्यों में अथवा समाज सेवा में कार्यरत रहती हैं उनके हाथों में अन्य लक्षण भी पाये जाते हैं।

भारी व चौड़ा हाथः– शरीर के अनुपात में आकार में बड़ा, लम्बा, गुदगुदा व चौड़ा हाथ होने पर उसे भारी हाथ कहते हैं। यह व्यक्ति धन सम्पत्ति में परिपूर्ण होते हैं। अगर शुरू में इनके पास धन सम्पत्ति कम हो तो शीघ्र ही स्वयं इसका निर्माण कर लेते हैं।

भारी हाथ वाला व्यक्ति यदि रेखाओं में विशेष दोष न हो तो व्यापार करता है, परंतु अंगूठा कम खुलने की दशा में इस प्रकार के व्यक्ति पहले नौकरी और बाद में व्यापार करते हैं। रेखाओं के दोषों को भारी हाथ काफी हद तक कम कर देता है।

यदि हृदय रेखा बृहस्पति की उंगली के पास तक जाए, भाग्य रेखा एक से अधिक हो, तो ऐसे व्यक्ति दान देते हैं। जैसे शिक्षा दिलाना, वस्त्र आदि से सहायता करना। यह लोग झगड़ा करने में विश्वास ही नहीं करते बल्कि अन्य लोगों के भी झगड़े निपटाते हैं।

यह व्यक्ति किसी को हानि पहुंचानां पसंद नहीं करते, क्योंकि इनमें मानवता अधिक होती है। यह व्यक्ति लगातार सफल होते देखे गये हैं।

भारी हाथ वाले व्यक्ति की यदि मस्तिष्क रेखा मोटी हो अथवा उंगलियां मोटी हो तो जीवन शांति पूर्ण नहीं रहता। इन्हें जमीन जायदाद सम्बंधी झगड़ों का सामना करना पड़ता है। नौकरी में हो तो नौकरी सम्बंधी मालिकों के साथ झगड़ा होता है। व्यापार होने पर व्यापार सम्बंधी झगड़े होते हैं।

यदि इनका हाथ कठोर या उंगलियां मोटी हों तो सम्बंधियों से अनबन रहती है। कन्या के विवाह के पश्चात् ससुराल में मानसिक तनाव रहता है। इनका पुत्र-वधू के साथ भी गुजारा कठिनता से होता है। इनका बड़ा पुत्र इसी कारण शीघ्र ही अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहता है।

अत्याधिक मोटे और भारी हाथ निकृष्ट फलदायक होते हैं। इनकी उंगलियां बहुत छोटी या बहुत मोटी देखी जाती हैं। अंगूठा भी छोटा व मोटा होता है। हाथ में रेखायें कमं होती हैं, जो स्पष्ट अथवा मोटी होती हैं। ऐसे व्यक्ति छोटा कार्य करने वाले जैसे घरेलू नौकरी, मजदूरी आदि शारीरिक श्रम करने में कुशल होते हैं।

ऐसे हाथों में मस्तिष्क रेखा का निकास मंगल क्षेत्र से होना, बुध की उंगली

छोटी या अधिक तिरछी होना व्यक्ति में पाशविकता का लक्षण दर्शाता है, कत्ल, चोरी, बलात्कार आमतौर पर ऐसे व्यक्ति ही करते हैं।

कोमल हाथः– जो हाथ छूने पर चिकना और दबाने में कोमल होता है उसे कोमल हाथ कहते हैं। अगर यह गुदगुदे भी हों तो यह विशेष फलदायक होते हैं। हाथ जितना भी कोमल, नरम, गुदगुदा होगा, जात का स्तर उतना ही ऊंचा होगा।

इस प्रकार के हाथ राजाओं, नवाबों, बड़े घर की स्त्रियों, व्यापारियों तथा सभी-वर्गों में पाए जा सकते हैं। इनका स्वाभाव नाजुक होता है। गर्मी में अधिक गर्मी महसूस करते हैं, तथा सर्दी में अधिक सर्दी महसूस करते हैं।

यह व्यक्ति आराम तलब होते हैं। बुद्धिमान और अधिक लिहाज करने वाले देखे गये हैं। यह लोग स्पष्ट रूप से विरोध नहीं कर सकते, फलस्वरूप जीवन में रुकावट आती है और हानि उठाते हैं। यह लोग भोग-विलास के शौकीन होते हैं। ये जीवन साथी के बिना नहीं रह सकते।

इन्हें अधिक घूमना-फिरना पसंद नहीं होता अतः इनका पेट खराब रहता है। गुदगुदे और नरम हाथ वाले व्यक्ति धनी परिवार में जन्म लेते हैं। और शीघ्र ही उन्नति करते हैं। इनकी चापलूसी करके इनसे लाभ उठाया जा सकता है।

ऐसे व्यक्ति पहले दुकानदारी और बाद में उद्योगपति बनते हैं। इनको जीवन में कई बार काम बदलना पड़ता है, परंतु लगातार उन्नति की राह पर चलते हैं। इनको परिश्रम कम करना पड़ता है, परंतु इन्हें लाभ अपेक्षाकृत अधिक होता है।

इनको अचानक धन लाभ होने के अवसर अधिक मिलते हैं। लाटरी, सट्टा, विवाह के शुभ अवसर पर लोभ, संतान से धन लाभ, पैतृक सम्पत्ति मित्रों से लाभ होता है।

इन व्यक्तियों को क्षय रोग, मूत्र रोग, पेट रोग, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, वायु रोग, वृद्धावस्था तक पहुंचते-पहुंचते हो सकते हैं।

कठोर हाथः– कठोर हाथ दो प्रकार के होते हैं। अत्यंत कठोर, छूने में बिल्कुल लकड़ी जैसा; दूसरा वह जो अत्याधिक कठोर न हो बल्कि इसका गठन सुंदर और मजबूत हो। अंगूठा कम खुलने या सख्त होने की दशा में कठोर हाथ अधिक दोषपूर्ण होता है। अगर अंगूठा पतला और लम्बा हो और अधिक खुले तो इस दोष से मुक्ति होती है।

कठोर हाथ वाले जातक को संघर्ष अधिक करना पड़ता है, परंतु लाभ अपेक्षाकृत कम मिलता है। यह व्यक्ति स्वभाव से सख्त, मेहनती व अनुशासित होते हैं। ये लोग जीवन में कम बीमार पड़ते हैं। अगर बीमार पड़ जायें तो बीमारी लम्बे समय तक चलती है।

ऐसे लोगों को दूसरों से सहयोग नहीं मिलता। परिवार या माता-पिता से भी ऐसे व्यक्ति कम लाभ उठाते हैं। इनका पूर्ण जीवन स्वनिर्मित होता है क्योंकि यह दूसरों से कर्ज लेना पसंद नहीं करते, अतः इन्हें सफलता देर से मिलती है। मरते दम तक यह काफी जमीन जायदाद इकट्ठी कर लेते हैं, और परिवार की नींव मजबूत कर जाते हैं फिर भी इन्हें तसल्ली नहीं होती यह व्यक्ति टैक्नीकल कार्य अथवा कारखाना चलाते हैं। सेना में कार्य करने वाले, किसान व दस्तकार व्यक्तियों के हाथ कठोर होते हैं। इन्हें मध्यायु के बाद पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

अधिक रेखाओं वाला हाथः– जिन व्यक्तियों के हाथ में अधिक रेखायें होती हैं। वह जीवन में अधिक सोचते हैं तथा बहुत देर बाद सफलता हासिल करते हैं। सोचने की आदत होने के कारण छोटी समस्या को भी बड़ा बना लेते हैं। जिस कारण इनका जीवन अशांतिपूर्ण रहता है। यह व्यक्ति स्वभाव के चिड़चिड़े और बोलने में तेज होते हैं। परंतु सभ्य और सचरित्र होते हैं। घर की ओर से लापरवाह होते हैं। कल्पनाशील भी होते हैं, परंतु अगर मस्तिष्क रेखा चंद्र क्षेत्र की ओर जाये तो कल्पना की हद हो जाती है तथा यह वहमी और सनकी बन जाते हैं।

हाथ में अधिक रेखाओं के होने से मुख्य रेखाओं का प्रभाव कम हो जाता है, अगर मुख्य रेखायें मोटी न हों तो फलादेश कहते समय कठिनाई होती है। आमतौर पर अधिक रेखाएं कोमल हाथों में पाई जाती हैं। कठोर हाथों में अधिक रेखायें नहीं होतीं।

यही व्यक्ति कोमल, तुनक मिजाज, छोटी-छोटी बात पर परेशान हो उठने वाले, चिंता करने वाले होते हैं। अगर शुक्र क्षेत्र पर मोटी रेखाएं अधिक हों तो इन व्यक्तियों को ब्लड-प्रेशर भी हो सकता है।

कम रेखाओं वाला हाथः– कई हाथों में बहुत कम रेखाएं देखी जा सकती हैं। यहां तक कि तीन चार मुख्य रेखाओं को छोड़कर अन्य रेखाएं दिखाई नहीं देतीं। इस प्रकार के हाथों में रेखाओं का झुकाव, दिशा, पतलापन, मोटापन आदि लक्षणों को देखकर निर्णय लिया जाता है। 60 प्रतिशत व्यक्तियों के हाथ इस प्रकार के देखे गए हैं।

यह व्यक्ति बहुत जल्दबाज होते हैं, और निर्णय करने में देरी नहीं करते। इन्हें क्रोध अत्याधिक आता है। इनकी मांग मुंह से निकलते ही अगर पूरी न हो तो यह क्रोध से घर का वातावरण बिगाड़ देते हैं। इनकी अपने सम्बंधियों, मित्रों या दूसरों से अधिक नहीं बनती। यहां तक कि मां बाप से भी नहीं बनती। अंगूठा कम खुला हो तो स्वभाव के चिड़चिड़े होते हैं।

यह लोग अधिक पढ़ना पसंद नहीं करते बल्कि कमाई की ओर अधिक ध्यान

देते हैं। पढ़ना छोड़कर कमाई की दिशा में चले जाते हैं।

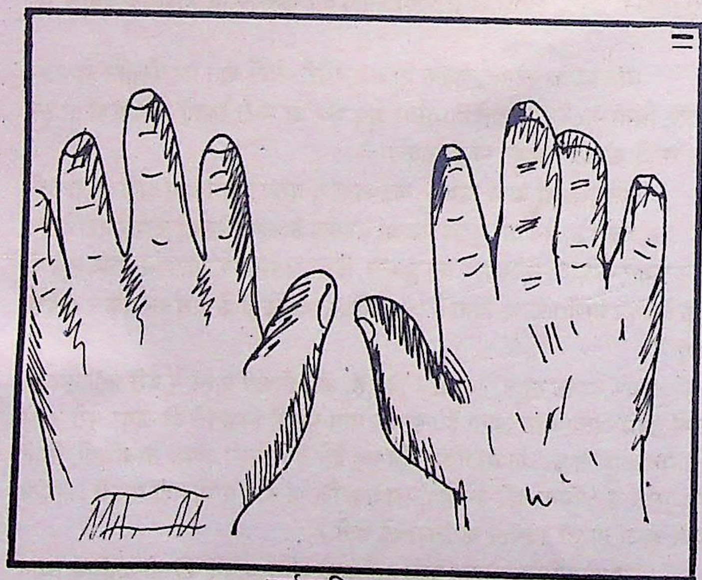
स्त्रियों के हाथ अगर ऐसे हों तो विवाह के पश्चात् मानसिक शांति में बाधा पड़ती है। अंगूठा कम खुलने पर ये महसूस बहुत करती हैं व रोने लगती हैं।

अगर कठोर हाथ में कम रेखायें हों तो व्यक्ति जीवन भर संघर्षरत रहता है। यह व्यक्ति सीधा, मेहनती और ईमानदार होता है। सीधेपन के कारण इनके साथ बार-बार धोखा भी होता है। बड़ी आयु में इन्हें वायु विकार, कफ, उदर रोग होने का डर रहता है।

मूर्ख व्यक्ति का हाथः— अब एक मूर्ख व्यक्ति के हाथ की आकृति दी जाती है- जिसका मस्तिष्क आधा विकसित है, और जो जीवन भर बच्चा ही रहता है।

इस हाथ की शक्ल ऐसी बदसूरत होगी कि जैसे हाथ पूरा बन न पाया हो। हथेली मोटी, नरम, तंग, उंगलियों से लम्बी होगी। इसका अंगूठा छोटा भद्दा दिखाई देने वाला हथेली के आधा भाग से ऊपर पर जुड़ा हुआ होगा। उंगलियां जितनी लम्बी होनी चाहिएं, उससे आधे साइज की होंगी। उंगलियों के पर्व टेढ़े और भद्दी शक्ल के होंगे।

कातिल का हाथः— ऐसे हाथ में हथेली मोटी, भारी, लाल रंग की होती है, और आम हथेली से चौड़ी बदशक्ल मगर छोटी होती है। उंगलियां सख्त होती हैं।



मूर्ख व्यक्ति का हाथ

आमतौर पर टेढ़ी आगे से फैली हुई। उनमें कोई गांठ नहीं होती मगर दूसरा कुछ मोटा और भद्दा दिखाई देता है। अंगूठे का प्रथम पर्वत ब्सनइइमक ऐसा दिखाई देता है जैसा कि आकृति में दिखाया गया है।

ऐसा निम्न लोगों की श्रेणी में शराबी, पशुवृत्ति वाले आदमियों में पाया जाता है। ऐसा हाथ पढ़े-लिखे लोगों में नहीं पाया जाता। नीच काम करने में ऐसा जातक खुशी महसूस करता है।

तीन प्रकार के व्यक्तिः– मोटे तौर पर अगर हम देखें तो संसार में तीन प्रकार के आदमी होते हैं–उत्तम, मध्यम और निकृष्ट।

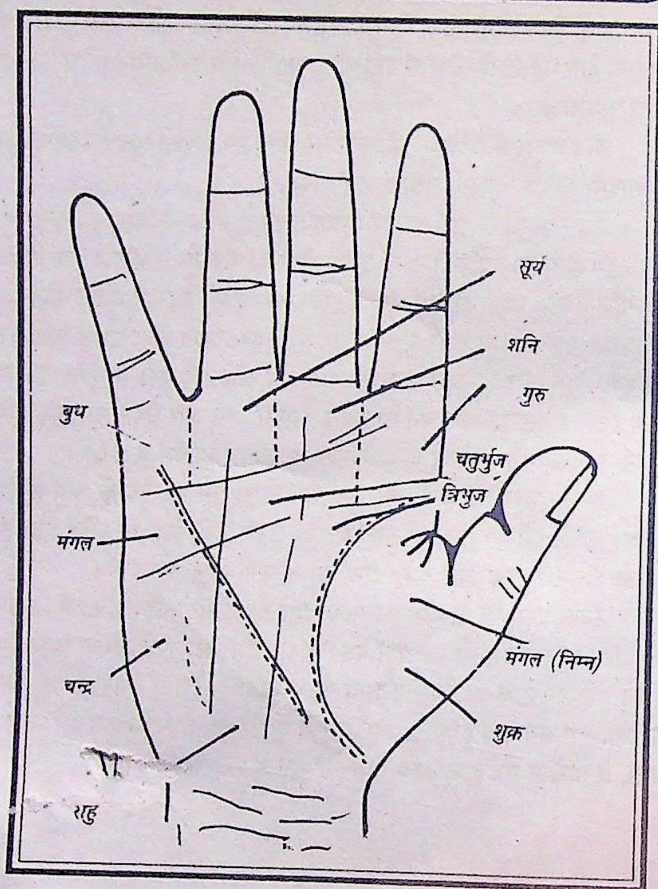
उत्तम पुरुषों के हाथ का मध्य भाग, कोमल, ऊंचा, कांतियुक्त, रक्त-मांस से परिपूर्ण होता है। उंगलियां सीधी, लम्बी होती हैं। नीचे का भाग उठा हुआ मिलाने से उंगलियां छिद्र रहित होती हैं, रेखायें सुंदर स्पष्ट होती हैं। ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, उदारचित्त, शांत प्रकृति वाले, सुंदर, भाग्यवान, मधुर वाणी बोलने वाले मानसिक, बलयुक्त, गुरु और साधुओं के भक्त, धन, पुत्र और स्त्री सुख से युक्त होते हैं। आयु रेखा से शुद्ध त्रिकोण बनें तो व्यक्ति अपनी लग्न और मेहनत से गृह, भूमि, वाहन, मान प्रतिष्ठा हासिल करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

मध्यम पुरुषों के हाथ तथा उंगलियों के मिलाने पर नीचे के भाग में छिद्र दिखाई देते हैं। ऐसे व्यक्ति परिश्रम से कार्य करने वाले, विश्वास रहित होते हैं। इनको जीवन में सुख और दुःख दोनों का सामना करना पड़ता है।

निकृष्ठ पुरुषों के हाथ का मध्य भाग गहरा ऊंचा नीचा होता है। रेखायें सभी छिन्न-भिन्न होती हैं। हाथ में बहु रेखा या तीन रेखा युक्त अथवा भाग्य रेखा रहित होते हैं। हाथ का रंग सफेद या काला होता है, रेखाएं देखने में भद्दी होती हैं, उंगलियां सब टेढ़ी होती हैं। ऐसे मनुष्य दुःखी, दरिद्री भाग्यहीन, क्रूर स्वभाव वाले, ये पाखंडी एवं दुष्ट हृदय वाले भी होते हैं।

☆☆☆

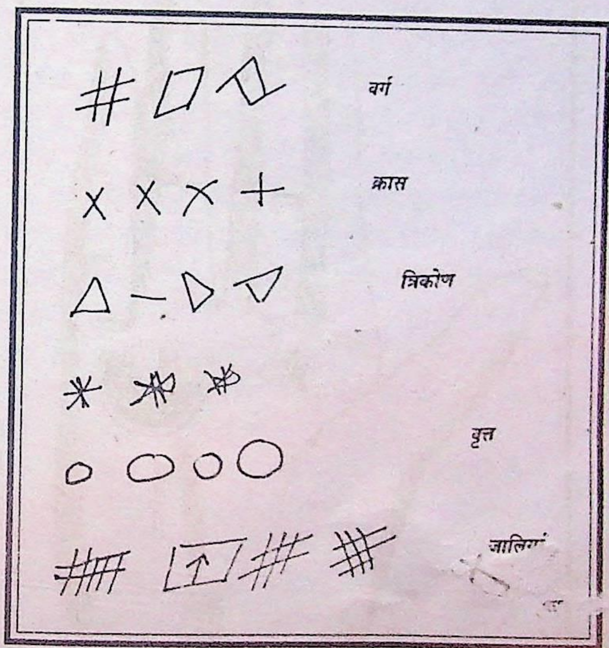
हाथ में विभिन्न पर्वतों की स्थिति



हाथ में पाये जाने वाले विभिन्न चिह्नः– हाथ के आकार के आधार पर हमें जातक के गुण अवगुण के बारे में पता चला। आइए, हम देखें कि हथेली पर विभिन्न ग्रहों के पर्वत कहां हैं, तथा हाथ में उनकी स्थिति से भविष्य सम्बंधी क्या ज्ञात कर सकते हैं।

मुख्य ग्रह क्षेत्र इस प्रकार हैं–

1. सूर्य पर्वत (Mount of the sun)
2. चंद्र पर्वत
3. मंगल पर्वत (प्रथम)
4. मंगल पर्वत (द्वितीय)
5. बुध पर्वत
6. गुरु पर्वत
7. शुक्र पर्वत
8. शनि पर्वत



अगर कोई भी क्षेत्र उभरा हुआ उन्नत हो तो जातक पर क्या प्रभाव डालता है, और अगर दबा हुआ हो तो क्या बुरा प्रभाव डालता है यह हम आगे इसी प्रकरण में पढ़ेंगे।

सूर्य पर्वतः– अनामिका के मूल स्थान में सूर्य पर्वत का स्थान है। हृदय रेखा से ऊपर अनामिका के मूल तक तथा शनि और बुध पर्वतों के बीच सूर्य पर्वत स्थित है।

यदि सूर्य पर्वत उभरा हुआ हो तो जातक कला प्रेमी, संगीत, साहित्य, शिल्पकला

में निपुण, आत्मविश्वासी, दयालु, धनवान, भाग्यवान्, भावुक, उदार, बुद्धिमान, धैर्यवान्, वक्ता एवं सम्मानित होता है। सूर्य आत्मा का अधिष्ठाता है तथा ग्रहों के बीच राजा है। सूर्य पर्वत अच्छा होने पर व्यक्ति राजकीय कार्यों में निपुणता तथा सफलता प्राप्त करता है। अगर हाथ में अन्य शुभ चिह्न हों तो ऐसा व्यक्ति राजसुख या पद प्रतिष्ठा हासिल करके सुखी जीवन व्यतीत करता है।



सूर्य पर्वत

अगर सूर्य पर्वत अत्याधिक उभरा हुआ हो तो जातक घमंडी, अविवेकी, वाचाल, चंचल, कृपण होता है, और पैतृक सम्पत्ति का नाश करता है। बाप-दादा

की कमाई को हर वक्त अपने मौज मेले में नष्ट करता है।

अगर सूर्य पर्वत नीचा हो तो जातक भाग्यहीन होता है। ऐसा व्यक्ति कपटी, अविवेकी, कला और साहित्य में रुचि विहीन, मूर्ख तथा निष्ठुर होता है।

यदि सूर्य पर्वत, बुध पर्वत के साथ मिला हुआ हो अर्थात् दोनों पर्वत इस प्रकार मिले हुए हों कि दोनों एक ही दिखें, तो जातक ईमानदार, व्यवसायी, विद्वान, पशुधन से युक्त, व्यवहार, कुशल होता है। स्त्री के हाथों में ऐसी स्थिति उन्हें सुंदर, सुखी, पति सेविका, हँसमुख, सुशील बनाती है।

यदि सूर्य पर्वत, शनि पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो जातक धन-धान्य से युक्त, भोग विलास में व्यस्त रहता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, साहसी, धार्मिक भी होता है। इसके कई नौकर होते हैं। इसके बड़े-बड़े अधिकारियों, मंत्री तक सम्पर्क होते हैं। अगर स्त्री के हाथ में सूर्य पर्वत शनि की ओर झुका हुआ हो तो ऐसी स्त्री क्रोधिनी, कार्य में असफल, चतुर व पति अनुरक्ता होती है।

यदि हाथ में सूर्य पर्वत के साथ-साथ चंद्र पर्वत भी उभरा हुआ हो, शेष पर्वत दबे हुए हों तो जातक शिल्प कला तथा साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है और अपने क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल करता है। ऐसा व्यक्ति न्यायप्रिय, विचारवाण तथा निष्कपटी होता है।

अगर सूर्य पर्वत के साथ-साथ बुध पर्वत भी उभरा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छा वक्ता, समझदार, शास्त्रज्ञ, लेखक होता है। यह लोग बड़े होकर सम्पादक, अध्यापक, वकील, इंजीनियर, व्यापारी बनते हैं।

यदि सूर्य और मंगल दोनों पर्वत उभरे हुये हों तो व्यक्ति सेना, पुलिस में उन्नति करता है। रासायनिक, शल्य, दंत, चिकित्सक भी ऐसे लोग बन सकते हैं। यह लोम उधमी व परिश्रमी होते हैं, और कभी भी निठल्ले नहीं बैठते। ऐसे लोग अधिकतर नीरोग रहते हैं। अधिकतर इन्हें खाज, खुजली, फोड़ा, फुंसी, नक्सीर, चोट इत्यादि का डर रहता है।

अगर सूर्य और बृहस्पति के पर्वत उच्च हों तो ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, उदार, मेघावी, विद्वान होता है। यह व्यक्ति पठन-पाठन में अधिक दिलचस्पी लेते हैं तथा सफल साहित्यकार व लेखक होते हैं। यह लोग प्रायः उच्च सरकारी पदों पर देखे गये हैं। अगर स्त्री के हाथ में दोनों पर्वत उच्च हों तो ऊपर लिखे गुणों के साथ-साथ वह 40 वर्ष की अवस्था के बाद धार्मिक कार्यों में, ईश्वर आराधना, तीर्थाटन में अपना चित्त लगाती है।

अगर सूर्य तथा शनि पर्वत समान रूप से उभरे हुये हों तो जातक अन्यायी, क्रूर, आतंक फैलाने वाला होता है। किसी को क्लेश पहुंचाना अथवा किसी का कत्ल

करना अथवा करवाना इसके लिए खेल होता है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसे लक्षण हों तो वह पर-पुरुषगामी, कुल्टा, वासनायुक्त होती है। ऐसी स्त्रियां वेश्या जैसी हो सकती हैं।

यदि सूर्य पर्वत और शुक्र पर्वत समान रूप से उभरे हुये हों तो जातक पराक्रमी, शक्तिशाली, धन-धान्य से युक्त परंतु स्त्री के वशीभूत रहते हैं। यह लोग अच्छे रहन-सहन, अच्छे खाने के शौकीन होते हैं। यह लोग संगीत कला, साहित्य में रुचि रखते हैं। इनको कोई न कोई ऐब लग जाता है जैसे सुरा-सुंदरी आदि। इनके दुश्मन अपने कुटुम्बी ही होते हैं।

अगर सूर्य पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक ऊंचे पद पर आसीन होता है। विज्ञान अथवा औषधि सम्बंधी विद्या या व्यवसाय में सफलता हासिल करता है।

सूर्य पर्वत पर तारा का चिह्न हो तो जातक यश और प्रसिद्धि प्राप्त करता है, परंतु यदि सूर्य पर्वत पर गुणा का चिह्न हो तो जातक का धन जुए अथवा सट्टे में नष्ट होता है।

यदि सूर्य पर चतुर्भुज का निशान हो तो शुभ होता है।

यदि सूर्य पर्वत दबा हुआ हो तो जातक को पीलिया, जिगर, हृदय, मस्तक मूत्राशय सम्बंधी रोगों का भय रहता है।

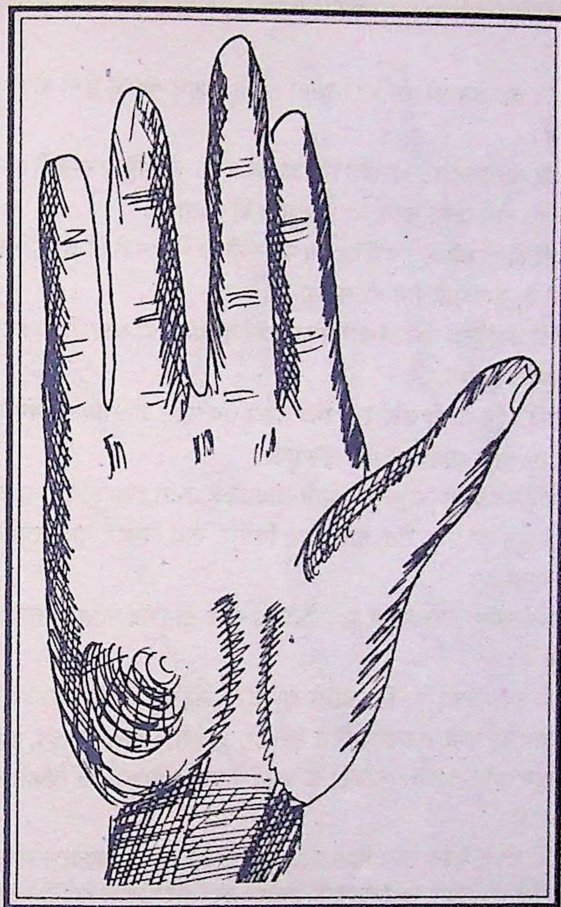
चंद्र पर्वतः– हथेली में शुक्र पर्वत के सामने, मंगल पर्वत के नीचे मणिबंध तक चंद्र का पर्वत अथवा चंद्र क्षेत्र कहते हैं।

यदि चंद्र पर्वत विकसित हो तो जातक सदाचारी, मधुरभाषी, दयालु, काल्पनिक, भ्रमणशील, मातृ सुख युक्त, थोड़ी अवस्था में विवाह करने वाला, साहित्यज्ञ, धन-धान्य से युक्त होता है। अच्छे तैराकों के हाथों में भी चंद्र क्षेत्र उभरा हुआ होता है।

यदि चंद्र क्षेत्र अत्याधिक उभरा हुआ हो तो जातक झूठ बोलने वाला, व्यसनी, मूर्ख, आलसी होता है।

यदि चंद्र क्षेत्र नीचा हो तो व्यक्ति अस्थिर चित्तवाला, रूखे स्वभाव वाला, कल्पना शक्ति से रहित होता है। ऐसे व्यक्तियों की स्मरण शक्ति प्रायः कमजोर होती है।

यदि चंद्र पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो उसमें मंगल के गुण भी पाए जाएंगे। ऐसा व्यक्ति भी अत्यंत क्रोधी और कभी अत्यंत शांत होगा। अगर चंद्र पर्वत केतु क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति दिवा स्वप्न देखने वाला, हवाई किले बनाने वाला शेखचिल्ली होता है। यदि हाथ में चंद्र और शुक्र पर्वत विकसित हों और



चंद्र पर्वत

शेष पर्वत दबे हुए हों तो जातक धनवान होता है और हर प्रकार के सुख भोगता है। इसी प्रकार अगर चंद्र और बुध क्षेत्र विकसित हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली और हँसोड़ प्रकृति का होता है। अगर चंद्र और बृहस्पति क्षेत्र समान रूप से उभरे हुए हों तो जातक वैभवशाली, उन्नतिशील, आजीवन सुखी होता है। यदि चंद्र क्षेत्र पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो जातक को पानी में डूबकर मरने का भय होता है। ऐसे व्यक्तियों को जलोदर रोग, कफ, विकार, मूत्र विकार आदि रोगों का भय रहता है।

यदि चंद्र पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो व्यक्ति गुप्त विधाओं में पारंगत होता है।

यदि चंद्र क्षेत्र पर वर्ग का निशान हो तो अशुभ चंद्र के सभी दोष समाप्त हो जाते हैं।

यदि चंद्र पर्वत पर एक खड़ी रेखा हो तो जातक को भविष्य सम्बंधी अन्तर्ज्ञान हो जाता है। होने वाली घटना का पूर्वाभास हो जाता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में चंद्र क्षेत्र पर जाली का निशान हो तो वह व्यभिचारिणी हो सकती है, उसे मृगी रोग हो सकता है।

यदि कोई रेखा जीवन रेखा से निकलकर चंद्र पर्वत पर आए तो जातक विदेश जाकर खूब धन कमाता है।

यदि मणिबंध से कोई रेखा निकलकर चंद्र पर्वत को लांघकर मंगल पर्वत पर जाए तो समुद्र यात्रा का योग बनता है।

यदि चंद्र पर्वत अशुभ हो (यानी अत्याधिक उभरा हुआ हो अथवा कमजोर हो) तो जातक को उदर रोग, वात, कफ विकार, वीर्य विकार, दमा, लकवा रोग का भय रहता है।

मंगल पर्वतः– हथेली में हृदय रेखा के नीचे और चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है।

यदि मंगल पर्वत विकसित हो तो जातक साहसी, प्रभुत्वाकांक्षी, बलशाली होता है। यह लोग परिश्रमी, लड़ाई-झगड़े में उत्साही, उपद्रवी, चंचल, खेलकूद, घुड़सवारी में रुचि लेने वाले होते हैं। सैनिकों के हाथों में प्रायः मंगल पर्वत विकसित देखा जा सकता है।

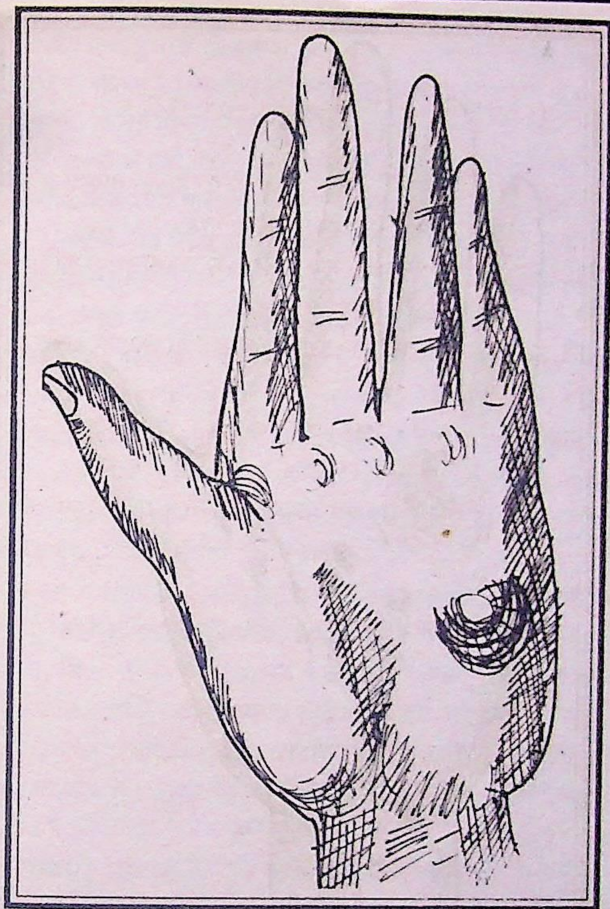
यदि मंगल पर्वत अत्याधिक उठा हुआ हो तो जातक अकारण क्रोध करने वाला, घमंडी, दुर्व्यसनी, विषयानुरागी, निर्दयी, दुराचारी होता है। छोटी सी बात पर झगड़ा मोल ले लेता है। यह व्यक्ति एक से अधिक विवाह करता है।

यदि मंगल पर्वत दबा हुआ हो तो व्यक्ति डरपोक, नास्तिक, पैतृक धन नष्ट करने वाला, व्यर्थ में झगड़ने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी पत्नी सुंदर होने पर भी दूसरों की स्त्री पर नजर रखता है।

यदि मंगल पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति या तो तलवार अथवा गोली से हत्या करता है अथवा आत्महत्या करता है।

यदि मंगल पर्वत पर गुणा का चिह्न है तो किसी के द्वारा हानि होती है।

यदि मंगल पर्वत पर काला बिंदु हो तो मुकदमेबाजी में जमीन-जायदाद सम्पत्ति



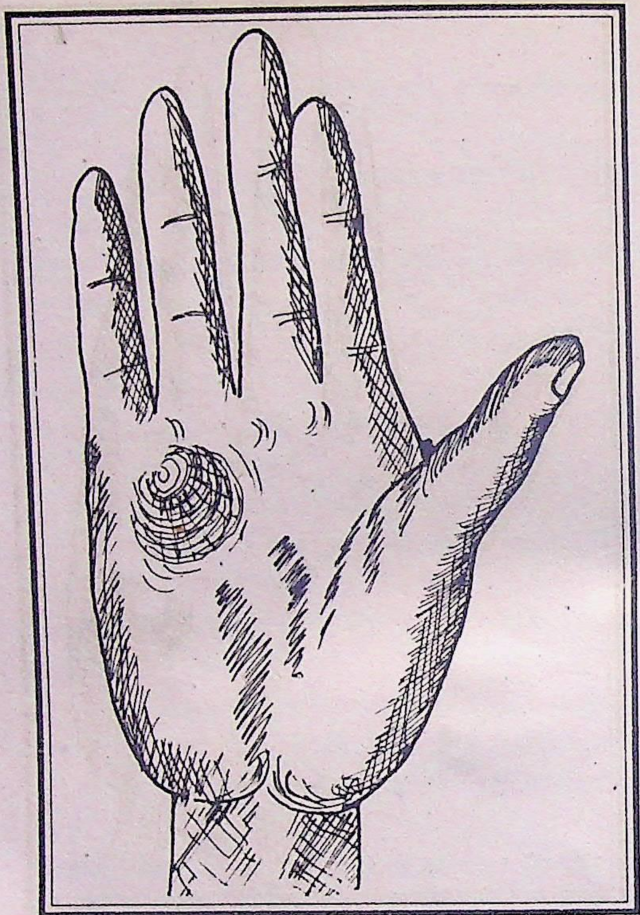
मंगल पर्वत

आदि का नुकसान होता है।

यदि मंगल पर्वत पर जाली का निशान हो तो जातक की अचानक मृत्यु होती है। ऐसा व्यक्ति आत्महत्या भी कर सकता है।

यदि मंगल पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो जातक उत्तम सेनाधिकारी युद्ध कुशल, पक्के निश्चय वाला होता है। यदि बुध पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो जातक अच्छा गणितज्ञ, चतुर व चालाक होता है।

बुध पर्वतः– यह पर्वत कनिष्ठिका उंगली के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर



बुध पर्वत

स्थित है। यदि बुध पर्वत उभरा हुआ है, तो जातक बुद्धिमान, कुशल वक्ता, कानून का ज्ञाता, वैज्ञानिक, कवि, धनी, प्रतिभावान होता है। यह व्यक्ति राजकीय उच्च सेवाओं में देखे जा सकते हैं। अच्छे बुध पर्वत वाले व्यक्ति व्यवसायी भी साबित होते हैं। यदि बुध पर्वत ऊंचा हो तो व्यक्ति अविश्वासी, ठग अभिमानी, द्वेषी, विश्वासघाती होता है। ऊंची विद्या पाने में कठिनाई आती है।

यदि बुध पर्वत नीचा हो तो जातक मंदबुद्धि, परिजनों का विरोधी एवं धनहीन होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या में भी अधिक तरक्की नहीं कर पाते। अगर बुध पर्वत,

सूर्य पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो जातक व्यापार कुशल, सम्पादक, वकील, नेता, ज्योतिषी आदि हो सकता है। यह लोग किताबी-कीड़े होते हैं। अगर स्त्री के हाथ में ऐसी स्थिति हो तो वह विधवापन का दुःख भोगती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध पर्वत उच्च हो तो वह राज्य में ऊंचे पद पर आसीन होती है। उनका यश चारों ओर फैलता है, परंतु उसका चरित्र अच्छा नहीं होता। यह विलासिनी नीच पुरुष अथवा नौकरों से प्रेम करने वाली होती है।

यदि बुध पर्वत पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो जातक विश्वासघाती एवं चोर होता है। इनको अपनी बेइज्जती से सावधान रहना चाहिए।

अगर बुध पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो ऐसा व्यक्ति मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। राजदूत एवं व्यापारी के रूप में पर्याप्त धन-सम्पत्ति अर्जित करता है।

अगर बुध पर्वत पर दो-चार खड़ी रेखायें हों तो वह डॉक्टर अथवा कैमिस्ट होता है। स्त्री के हाथ में ऐसी रेखाएं हों तो वह नर्स अथवा दाई होती है। यदि बुध पर्वत अत्यंत उच्च हो और उस पर गुणा का चिह्न हो तो जातक जुआरी होता है और अपनी पूरी सम्पत्ति दांव पर लगा देता है।

यदि बुध पर्वत अशुभ एवं निर्बल हो तो जातक मिथ्याभाषी होता है ऐसे व्यक्तियों को उदर रोग, मंदाग्नि, संग्रहणी, बवासीर, प्रेत बाधा का भय रहता है।

गुरु का पर्वतः– तर्जनी उंगली के मूल में मस्तिष्क रेखा के ऊपर के क्षेत्र को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। यदि यह पर्वत उच्च हो तो जातक तेजस्वी, देशभक्त, भाग्यवान, उदार, मंत्री, न्यायाधीश, सम्पादक, धर्माचार्य, अध्यापक, योगी साहित्य या भविष्यवक्ता होता है। ऐसा व्यक्ति पुत्र-पोत्र से युक्त, धन-धान्य से युक्त, सत्य वक्ता, स्वतंत्र प्रकृति वाला, विदेश भ्रमण करने वाला होता है।

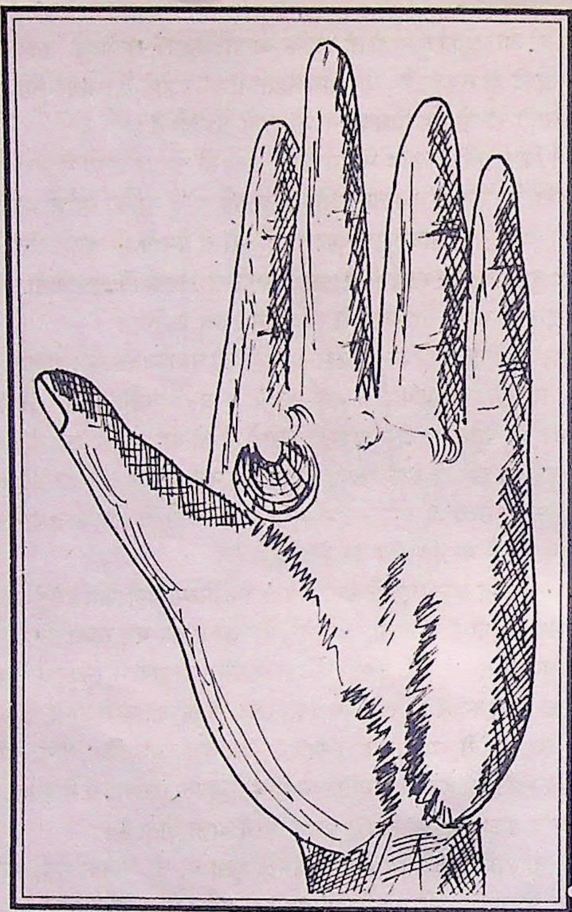
यदि बृहस्पति का पर्वत अत्यंत उभरा हुआ हो तो जातक धूर्त, स्वार्थी, अविश्वासी, मिथ्याभिमानी, क्रोधी, अपव्ययी होता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी काम जिम्मेदारी से निभाता है। अगर स्त्री के हाथ में पर्वत की ऐसी स्थिति हो तो वह पर पुरुष गामिनी होती है। पुत्र की अभिलाषा में निकृष्ट कार्य भी कर बैठती है।

यदि बृहस्पति का पर्वत नीचा हो तो जातक पराधीन, चिड़चिड़े स्वभाव वाला होता है।

यदि गुरु और बुध के पर्वत समान रूप से उठे हुए हों तो ऐसा व्यक्ति कवि, वैज्ञानिक, विद्वान लेखक, संगीतज्ञ और ज्योतिषी होता है।

यदि गुरु पर्वत पर एक सीधी रेखा खड़ी हो तो जातक को आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है।

यदि बृहस्पति क्षेत्र पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो जातक धनी, उदार, क्षमाशील,



बृहस्पति पर्वत

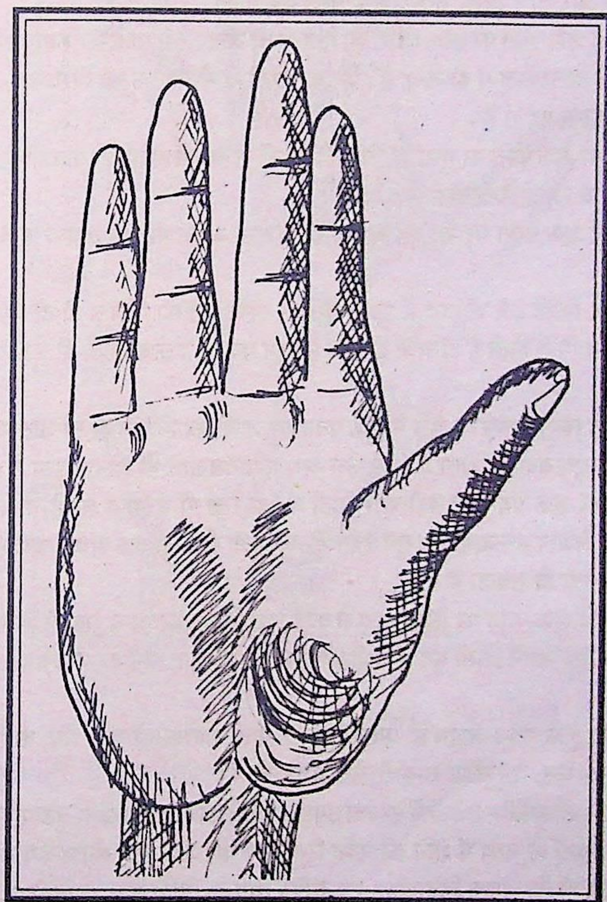
सौभाग्यशाली, शादी के बाद अधिक तरक्की करने वाला होता है।

अगर गुरु पर्वत पर त्रिशूल का निशान हो तो जातक धन ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है।

अगर गुरु पर्वत पर गुणा का चिह्न हो तो जातक का विवाह धनी और कुलीन परिवार में होता है।

यदि गुरु पर्वत पर वर्ग का निशान हो तो व्यक्ति असाधारण उन्नति करता है और राजकीय सेवाओं में उच्च पद प्राप्त करता है।

शुक्र पर्वतः– हथेली में अंगुष्ठ के मूल में मणिबंध तक उभरा हुआ क्षेत्र शुक्र पर्वत कहलाता है। शुक्र वीर्य का स्वामी माना गया है। शुक्र का भावार्थ ही वीर्य होता है। निर्बलता आदि से मनुष्य में शारीरिक बल का अनुमान एवं स्त्री सुख के बारे में पता चलता है। पर्वत अच्छा उठा हुआ हो तो जातक सदाचारी, उदार, उच्चाभिलाषी, संगीतज्ञ, नृत्यप्रेमी, सौंदर्य प्रेमी, कलाप्रेमी होता है। वकालत में भी नाम कमा सकता है।



शुक्र पर्वत

यदि शुक्र पर्वत अत्याधिक उभरा हुआ हो तो जातक व्यभिचारी, परस्त्री-गामी, निर्लज्ज, घमंडी होता है।

अगर शुक्र पर्वत दबा हुआ हो तो जातक वीर्य सम्बंधी रोगों से पीड़ित रहता है। यदि स्त्री के हाथ में शुक्र पर्वत की ऐसी स्थिति हो तो उसे योनि सम्बंधी रोग होते हैं।

यदि शुक्र और गुरु क्षेत्र उभरे हुए हों तो जातक समाज में ऊंचा पद प्राप्त करता है और लोग उससे सलाह लेना पसंद करते हैं।

यदि शुक्र पर्वत पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो जातक की माता का स्वर्गवास जातक के बाल्यकाल में हो जाता है। प्रेम के मामले में भी जातक को निराशा का सामना करना पड़ता है।

अगर शुक्र पर्वत पर गुणा का चिह्न किसी स्त्री के हाथ में हो तो वह कलहप्रिय, परनिंदक व राजद्रोहिणी होती है।

यदि शुक्र पर्वत पर वर्ग का निशान हो तो ऐसा व्यक्ति महात्मा अथवा ऋषि होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में शुक्र पर्वत पर स्पष्ट वृत्त का निशान हो तो वह परपुरुष-गामिनी होती है। स्त्रियों के हाथ में शुक्र पर्वत का ऊंचा होना ही काफी है।

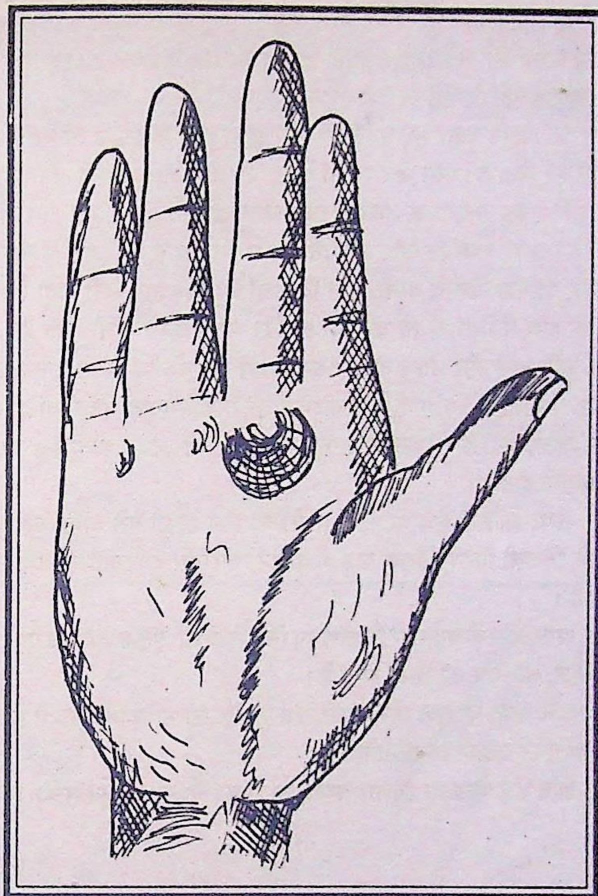
यदि किसी पुरुष के हाथ में शुक्र पर्वत पर जाली का निशान हो तो जातक धोखेबाज एवं बदमाश होता है। उसे जेल अथवा पागलखाने भी जाना पड़ता है।

अगर शुक्र पर्वत पर बड़ी-बड़ी आड़ी व टेढ़ी रेखाओं से बहुत लम्बी-चौड़ी जाली का निशान बन जाय और सूर्य पर्वत भी उठा हुआ हो तो जातक अच्छा गायक एवं अभिनेता हो सकता है।

यदि शुक्र पर्वत पर स्थित तारा से कोई रेखा निकलकर भाग्य रेखा से मिले तो जातक को अपने किसी मृत सम्बंधी की धन-सम्पत्ति प्राप्त होने का योग बनता है।

यदि शुक्र पर्वत अशुभ हो एवं दबा हुआ हो तो जातक को गुप्त रोग, वीर्य विकार मूत्र रोग, जननेंद्रिय सम्बंधी रोग हो सकते हैं।

शनि का पर्वतः— हथेली में मध्यमा उंगली के नीचे हृदय रेखा से ऊपर बृहस्पति एवं सूर्य पर्वतों के मध्य में शनि का पर्वत स्थित है। यदि शनि क्षेत्र समान रूप से उभरा हुआ हो तो जातक चिंताशील, एकांतप्रिय, संयमी, चिकित्सक, रासायनिक, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति विचारशील, योगाभ्यासी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। यह अपनी पत्नी से इतना प्रेम नहीं करते जितना करना चाहिए।



शनि पर्वत

यदि शनि का पर्वत अत्याधिक विकसित हो तो जातक दुराचारी, व्यभिचारी, कुविचारी, क्रूर कर्म करने वाला, तमोगुणी होता है। ऐसा व्यक्ति वात रोगी, उदर शूल, मूत्राशय का रोगी होता है। शंकालु, निर्दयी होता है। यदि कहीं सेवारत हो तो एक बार सस्पैंड जरूर होगा।

यदि शनि पर्वत अधिक नीचे दबा हुआ हो तो जातक आपत्तियों से घिरा रहता है। ऐसा व्यक्ति झूठ बोलने वाला, जुआरी, व्यसनी, अदूरदर्शी, घमंडी, कलंकी, राजदंड पाने वाला होता है।

यदि शनि पर्वत गुरु पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो जीवन का पहला आधा भाग कष्टमय बीतता है। दूसरा आधा भाग सुखमय व्यतीत होता है। इस बीच व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति होती है।

यदि शनि पर्वत सूर्य पर्वत की ओर झुका हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति उदास प्रकृति का होता है। ऐसा होने पर भी व्यक्ति परिश्रमी और यशस्वी होता है। इनमें यदि शनि पर्वत अत्याधिक उच्च हो तो जातक चरित्रहीन, ठग, धूर्त और निकम्मा होता है। अगर बृहस्पति और शनि के क्षेत्र समान रूप से उभरे हुए हों तो जातक विद्वान, धार्मिक विचारों वाला, गुप्त विद्याओं का जानकार, धनी होता है। अगर स्त्री के हाथ में ऐसा हो तो वह भगवान का भजन करने वाली होती है।

यदि शनि और मंगल के क्षेत्र समान रूप से उभरे हुए हों तो जातक अत्यंत क्रोधी, अत्याचारी, ठग, डाकू कत्ल करने वाला, मिथ्याभिमानी एवं नीचों की संगति करने वाला होता है। अकारण झगड़ा करना इसकी आदत होती है। यह लोग वेश्यागामी होते हैं।

अगर शनि के क्षेत्र पर स्टार (तारे) का चिह्न हो तो ऐसे व्यक्ति को सांप के काटने, बिजली गिरने, हिंसक पशु के काटने, बारम्बार दुर्घटनाग्रस्त होने का भय होता है।

अगर शनि के पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो जातक ज्योतिष गुप्त विद्या, सामुद्रिक, तंत्र-मंत्र का ज्ञानी होता है।

शनि पर्वत पर एक सीधी खड़ी रेखा जातक को भाग्यवान बनाती है जिससे दिन प्रतिदिन उसकी उन्नति होती है।

शनि क्षेत्र पर क्रास (गुणा) अथवा जाली का निशान दुर्भाग्य सूचक गिने गए हैं।

☆☆☆

अंगूठा बनावट और व्यक्तित्व

यदि अंगूठा सीधा, ऊंचा, चिकना, गोल, दाहिनी तरफ घूमा हुआ हो, इसके दोनों पर्व बराबर हों तो जातक धनवान होता है।

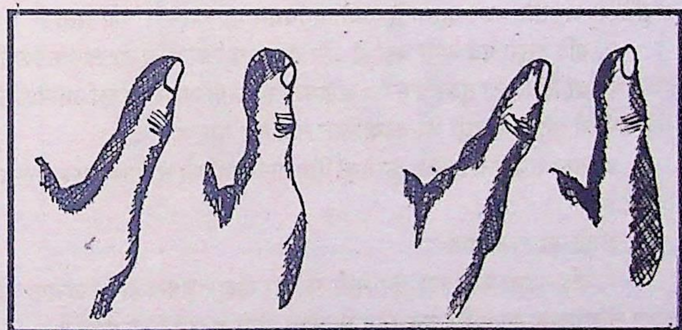
जिसके अंगूठे के मूल में एक भी यव हो वह मनुष्य धनवान होता है। जिसके अंगूठे के पर्वों में यव का निशान हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान होता है।

जिसके अंगूठे के बीच में 'यव' का चिह्न हो तो वह धन, स्वर्ण, रत्न आदि हासिल करता है।

अंगूठे के मूल में जितने 'यव' निशान हों उतने पुत्र होते हैं।

अंगूठा जितना बड़ा, ऊंचा और पुष्ट होगा उतनी ही बुद्धि और शक्ति जातक में होगी।

इसके विपरीत यदि अंगूठा छोटा हो या हथेली में बहुत नीचा हो तो मनुष्य में आत्मशक्ति और बुद्धि दोनों कम होंगी।



अंगूठे के चित्र

अगर अंगूठा लम्बा और सुंदर हो तो जातक बुद्धिमान तथा सभ्य व्यवहार वाला होगा।

अगर अंगूठा छोटा, बेडौल, मोटा और हाथ के अधिक नीचे हो तो मनुष्य जानवरों की तरह असभ्य और मूर्ख होता है।

यदि किसी के अंगूठे का नाखून वाला पर्व अत्याधिक लम्बा हो तो वह व्यक्ति तानाशाही प्रकृति वाला होता है। ऐसे मनुष्य से खुशामद करके आप अपना काम निकलवा सकते हैं।

यदि नाखून वाला पर्व अत्याधिक छोटा हो तो जातक के विचारों में दृढ़ता नहीं होती।

यदि नाखून वाला पर्व अत्याधिक चौड़ा हो तो जातक जिद्दी स्वभाव वाला होगा।

अगर अंगूठा पीछे की ओर झुका हुआ है, तो जातक उदार होगा।

अंगूठे के पर्वः– अंगूठे के दो पर्व होते हैं–प्रथम पर्व वह होता है, जिसमें नाखून होता है। दूसरा पर्व इससे नीचे होता है। तीसरा पर्व इसमें नहीं होता।

प्रथम पर्व में आत्मशक्ति, आत्मबल, इच्छा की दृढ़ता का विचार किया जाता है।

दूसरे पर्व से तर्क शक्ति, विचार शक्ति, ऊहापोह करना आदि देखा जाता है।

आम अंगूठे की लम्बाई कितनी होनी चाहिए ? देखने के लिए अंगूठे की जड़ से सिरे तक पूरी लम्बाई को नापें, इसे पांच भागों में बांटें। दो हिस्सों में प्रथम पर्व आना चाहिए और बाकी के तीन हिस्सों में दूसरा पर्व आना चाहिए। अगर कोई पर्व इससे कम अथवा अधिक है तो फलादेश इस प्रकार होगा।

1. यदि प्रथम पर्व सामान्य से अधिक लम्बा हो तो जातक अपनी इच्छा या प्रवृत्ति के अनुसार काम करता है, तर्क या विचार को काम में नहीं लेता।

2. यदि दूसरा पर्व बहुत बड़ा हो और पहला पर्व छोटा हो तो जातक किसी भी विषय पर विचार तो सूक्ष्मता से एवं बुद्धिमता से करेगा आत्मबल एवं आत्मशक्ति की कमी से अपने विचारों को कार्यान्वित नहीं कर सकेगा।

3. अतः सफलता हांसिल करने के लिए दोनों पर्वों की सामान्य लम्बाई होना जरूरी है।

अंगूठे का पहला पर्वः

1. यदि पहला पर्व मोटा और भारी हो और नाखून चपटा हो तो जातक को बहुत तेज गुस्सा आता है। वह क्रोध में अपने आपे से बाहर हो जाता है।

2. अंगूठे का आगे का भाग 'गदा' की तरह हो तो क्रोधावेश में जातक उचित अनुचित का ध्यान नहीं रखता।

3. अगर प्रथम पर्व और दूसरे पर्व के बीच की गांठ सख्त हो तो यह भी क्रोध का ही लक्षण है।

4. अगर पहला पर्व छोटा और कमजोर हो और शुक्र क्षेत्र उभरा हुआ हो तो जातक कामवासना के वशीभूत हो जाता है। उसको अपने मन पर नियंत्रण नहीं रहता। अगर किसी स्त्री का पहला पर्व ऐसा हो तो वह जल्दी ही परपुरुष के बहकावे में आ जाती है।

अंगूठे का दूसरा पर्वः

यदि दूसरा पर्व बहुत लम्बा हो तो जातक किसी भी विषय पर लम्बी बात करता है, परंतु किसी पर भी विश्वास नहीं करता।

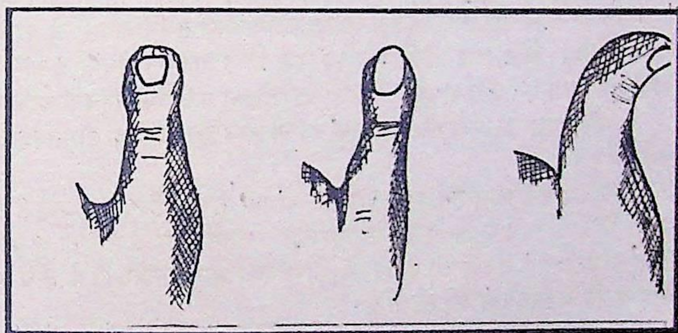
यदि दूसरे पर्व की लम्बाई साधारण हो तो जातक में तर्क शक्ति अच्छी होती है, और हर बात के प्रत्येक पहलू पर गम्भीरता से विचार करता है।

यदि दूसरे पर्व की लम्बाई कम हो तो जातक में तर्क शक्ति कम होती है।

अगर पहला पर्व अत्यंत छोटा हो तो जातक में बुद्धि की कमी होती है। ऐसे आदमी काम पहले करते हैं, और सोचते बाद में हैं।

अगर दूसरा पर्व पतला हो तो व्यक्ति नीति कुशल होतो है। अगर यह अत्यंत पतला हो तो जातक की स्नायु शक्ति कमजोर हो जाती है, और जातक विचार करते-करते घबरा जाता है।

अंगूठे में लचकः– जिस व्यक्ति का अंगूठा लचकदार होता है, और पीछे की ओर मुड़ जाये, वह अन्य व्यक्ति, स्त्री अथवा पुरुष से शीघ्र ही मैत्री स्थापित कर लेता है।



जिनका अंगूठा सीधा और सख्त होता है, और आसानी से पीछे नहीं मुड़ता, वह अन्य लोगों से शीघ्र सम्पर्क स्थापित करने में नाकामयाब रहते हैं। वह किसी से शीघ्र घुलते-मिलते नहीं।

जिन लोगों के अंगूठे अत्याधिक लचीले हों, और बहुत पीछे की ओर मुड़ जाते हों, ऐसे व्यक्ति बहुत खर्चीले और उदार हृदय होते हैं। यह लोग विशेष मिलनसार होते हैं। इन व्यक्तियों को पंजाबी में लाई-लग भी कहते हैं। वह लोग अपना कोई लक्ष्य निर्धारित करने के बाद उस तक कठिनता से ही पहुंचते हैं।

जिन व्यक्तियों के अंगूठे में लचक नहीं होती, वह अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाते और धन संचय में लगे रहते हैं। इनमें सांसारिक कार्य, क्षमता, परिश्रम आदि गुण होते हैं, परंतु इनमें प्रेम प्रदर्शन, सौंदर्य का आकर्षण, विचारों का विस्तार आदि गुण नहीं होते।

☆☆☆

उंगलियों की विशेषताएं और व्यक्तित्व

यदि उंगलियां मिलने पर उनके मूल में छिद्र हों तो जातक निर्धन होता है। जिसकी उंगलियां मिली हुई हों और नीचे छिद्र न हों, वह व्यक्ति धनी होते हैं।

यदि उंगलियां पतली हों तो जातक की स्मरण शक्ति तीव्र होती है।

अगर उंगलियां चपटी हों तो जातक की स्मरण-शक्ति तीव्र-होती है।

मोटी उंगलियां निर्धनता की सूचक हैं।

अगर उंगलियों के पर्व लम्बे हों और शुक्र स्थान पर रेखाएं हों तो अनेक पुत्र होते हैं।

उंगलियों की परस्पर लम्बाईः– तर्जनी उंगली, मध्यमा उंगली के नख वाले पर्व की आधी लम्बाई तक पहुंचनी चाहिए। अनामिका तर्जनी उंगली के बराबर होनी चाहिए। कनिष्ठिका इससे एक पर्व छोटी होनी चाहिए। अर्थात् अनामिका का नख वाला पर्व जहां से शुरू होता है, कनिष्ठिका वहां तक पहुंचनी चाहिए।

यदि उंगलियां लम्बी हों और उनके पर्व भी लम्बे हों तो जातक सौभाग्यशाली होता है।

यदि उंगलियां मिलाने पर तर्जनी और मध्यमा के बीच छेद हो तो जातक की आयु के प्रथम भाग में धनहीनता का सूचक है। मध्यमा और अनामिका के बीच छिद्र मध्य भाग में धनहीनता बताता है। अनामिका और कनिष्ठिका के बीच का छेद बुढ़ापे में निर्धनता का सूचक है।

यदि अनामिका के नख वाले पर्व तक कनिष्ठिका पहुंच जाए तो जातक धनी होता है। ऐसा जातक लम्बी आयु भोगता है।

स्त्री के हाथ की उंगलियांः– इनमें गांठें नहीं होती। उंगलियों के पर्व बराबर होते हैं, नाखून वाला पर्व कुछ नुकीला होता है। उंगलियों की त्वचा अत्यंत कोमल होती है। इनके पृष्ठ भाग पर बाल अथवा खुरदरापन न हो।

ऊपर लिखे गुणों के विपरीत अगर लक्षण हों तो स्त्री दुःख पाती है। अन्य दोष इस प्रकार हैं--तीन की जगह चार पर्व होना, सूखी, मांसरहित उंगलियां, छोटी उंगलियां होना, इनमें विरल रहे।

पाश्चात्य मतानुसारः– यदि उंगलियां अत्यंत लम्बी हों तो जातक क्रूर प्रकृति का होता है, तथा दूसरों के कार्य में गलती ढूंढने की कोशिश करता है। ऐसे व्यक्ति दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं।

अगर उंगलियां लम्बी हों तो जातक में विश्लेषणात्मक योग्यता होती है। यह

लोग हर काम को तरकीब से करते हैं, तथा उसकी छोटी-छोटी बारीकियों तक जाते हैं। यह लोग अच्छे प्रबंधक साबित हो सकते हैं।

अगर उंगलियां लम्बी और पतली हों तो जातक चतुर एवं नीतिज्ञ होता है।

यदि उंगलियां छोटी हों तो जातक में किसी भी बात को शीघ्र समझने की शक्ति होती है। अगर गांठें न निकली हों तो इनमें INTUITION की मात्रा भी अधिक होती है।

अगर उंगलियां अत्यंत छोटी हों तो जातक प्रायः सुस्त और स्वार्थी होता है। इनमें कर्त्तव्यपालन करने की आदत नहीं होती।

यदि उंगलियों के अग्र भाग नुकीले हों और उंगलियों में गांठ दिखाई न दें तो जातक कला और साहित्य का प्रेमी, धार्मिक विचारों वाला होता है। यह लोग कल्पना के मनोराज्य में विचरते रहते हैं, तथा कार्य करने की क्षमता इनमें कम होती है। सांसारिक दृष्टि से यह लोग निकम्मे होते हैं। परंतु अगर ऊपर की गांठ कुछ-कुछ दिखाई दे तो थोड़ी बहुत काम करने की क्षमता होती है। अगर दूसरी गांठ भी कुछ उन्नत हो तो यह लोग धन संचय का बराबर ख्याल रखते हैं।

यदि उंगलियां साधारण नुकीली और चिकनी हों तो ऊपर की गांठ होने से जातक को कला और साहित्य के क्षेत्र में सांसारिक सफलता दिलाती है। नीचे की गांठ भी उन्नत हो तो व्यावहारिक दृष्टि से अपनी कला को बेचकर धन कमाता है।

यदि उंगलियों के अग्रभाग चतुष्कोणाकार हों तो जातक व्यापारिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह व्यक्ति स्वतंत्र प्रकृति का होता है। यदि दोनों गांठें उन्नत हों तो जातक बैंकिंग, कानून, विज्ञान क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। यह लोग काव्य और कला को ज्यादा महत्व नहीं देते।

अगर उंगलियों के अग्रभाग फैलें हुए हों तो जातक खोजी प्रकृति का होता है। यह लोग कर्मठ होते हैं, और तब तक काम करते रहते हैं जब तक थक न जाएं। ऊपर की गांठ उन्नत होने से जातक में अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति होती है। नीचे की गांठ उन्नत होने से यह लोग क्रियाशील रहते हैं। यह लोग खेल कूद के शौकीन होते हैं। यह व्यक्ति आदर्शवाद में विश्वास नहीं रखते।

तर्जनी (Index Finger):– इसे पहली उंगली अथवा तर्जनी अथवा बृहस्पति की उंगली भी कहते हैं। इसके नीचे बृहस्पति का क्षेत्र होता है। अगर बृहस्पति का क्षेत्र दबा हुआ हो परंतु यह उंगली लम्बी हो तो जातक का बृहस्पति शुभ हो जाता है, और इसके दोष समाप्त हो जाते हैं।

अगर यह उंगली साधारण लम्बी हो तो जातक हुकूमत करना चाहता है।

यदि उंगली छोटी हो तो जातक में बृहस्पति के अवगुण आ जाते हैं–जातक को सम्मान नहीं मिलता।

अगर यह उंगली अत्यंत लम्बी हो तो जातक में क्रूरता आ जाती है।

यदि तर्जनी मध्यमा के बराबर हो तो जातक में तानाशाही की प्रवृत्ति आ जाती है। नैपोलियन के हाथ में यही स्थिति थी।

यदि तर्जनी अनामिका से बहुत बड़ी हो तो जातक में ऊंची महत्वाकांक्षा होती है। अगर दोनों उंगलियां बराबर हों तो जातक में यश और धन कमाने की इच्छा बराबर बनी रहती है।

अगर तर्जनी अनामिका से छोटी हो तो जातक में तरक्की करने की चाह कम रहती है।

मध्यमा (Second Finger):– मध्यमा उंगली का साधारण लम्बी होना जातक की दूरदर्शिता की निशानी है। व्यक्ति स्वाध्यायी, विद्याभ्यासी, एकांतप्रिय होता है।

अगर मध्यमा उंगली अत्यंत लम्बी हो तो जातक गमगीन बना रहता है।

यदि यह उंगली टेढ़ी हो तो जातक को हिस्टीरिया रोग हो सकता है। उसमें हिंसक प्रवृत्ति आ जाती है।

यदि यह उंगली छोटी हो तो व्यक्ति में गम्भीरता की कमी रहती है।

यदि मध्यमा चपटी हो तो ऐसा व्यक्ति शक करने वाला होता है।

यदि यह उंगली चौरस हो और तीसरा पर्व लम्बा हो तो जातक गणितज्ञ होता है।

यदि मध्यमा नोकदार हो तो जातक सांसारिक व आध्यात्मिक विचारों से हीन लफंगा और अविश्वासी होता है। अगर उसके साथ अंगूठा भी छोटा हो तो निर्लज्ज, दूसरों को फंसाने वाला होता है।

अगर किसी स्त्री की मध्यमा उंगली अधिक लम्बी हो तो उसे बाल विधवापन का दुःख सहन करना पड़ता है। वह व्यभिचारिणी होती है।

यदि मध्यमा का प्रथम पर्व लम्बा हो तो जातक अंधविश्वासी होता है। दूसरा पर्व लम्बा हो तो यांत्रिक कला (मशीन) आदि में निपुण होता है। अगर उंगली गांठहीन चिकनी हो तो जातक गुप्त विद्याओं, यंत्र-मंत्र का ज्ञाता होता है। अगर तृतीय पर्व लम्बा होता है तो सीमित खर्च करने वाला होता है।

यदि मध्यमा उंगली तर्जनी की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति कुविचारी होता है।

अनामिका (Third Finger):– इसके नीचे सूर्य का क्षेत्र होता है। अतः इसे सूर्य की उंगली भी कहते हैं। अगर सूर्य का पर्वत दबा हुआ हो अथवा अशुभ हो परंतु अनामिका उंगली लम्बी और सीधी हो तो अशुभ सूर्य क्षेत्र के दोष समाप्त हो जाते हैं, अर्थात् उसमें सूर्य के गुण आ जाते हैं।

अगर अनामिका साधारण लम्बी हो तो जातक कला और साहित्य का पुजारी होता है, तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

अनामिका का नुकीला होना इसके गुणों में वृद्धि करता है। ऐसा जातक धार्मिक

कार्यों में व्यय करने वाला, चित्रकार, प्राकृतिक दृश्यों का अनुयायी होता है।

यदि अनामिका तर्जनी से भी लम्बी हो तो जातक बिना सोचे कार्य कर बैठने पर प्रायः असफल देखा गया है। अगर बुध पर्वत उन्नत हो तो सफलता मिल सकती है। यदि अनामिका मध्यमा के बराबर लम्बी हो, दूसरा पर्व उन्नत हो, मंगल पर्वत भी उभरा हुआ हो तो जातक सट्टा, लाटरी में रुचि लेता है।

अगर अनामिका टेढ़ी हो तो जातक व्यापार में खूब धन कमाता है परंतु साथ ही उसे अपयश भी मिलता है।

यदि अनामिका तर्जनी से छोटी हो तो उसे व्यापरिक क्षेत्र तथा घरेलू जीवन में सफलता मिलती है।

अगर अनामिका का तीसरा पर्व लम्बा हो तो जातक में अहंकार और दिखावापन अधिक होगा। अगर इसके साथ ही दूसरी गांठ भी उन्नत हो तो अपने स्वास्थ्य की ओर में लापरवाह होकर धन कमाने की धुन में लगा रहता है।

कनिष्ठिका (Fourth Finger):– इसके नीचे बुध पर्वत होता है अगर बुध पर्वत दबा हुआ हो और दोषपूर्ण हो तथा यह उंगली दोष रहित लम्बी हो तो उसमें बुध के गुण आ जाते हैं, और अशुभ बुध का दोष दूर हो जाता है।

यदि कनिष्ठिका अथवा बुध की उंगली साधारण हो तो जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है।

अगर बुध की उंगली लम्बी हो तो जातक प्रभावशाली, कुशल वक्ता, सम्पादक, अध्यापक, कथावाचक हो सकता है। जातक कई विषयों में प्रवीण होता है। अगर कनिष्ठिका अत्याधिक लम्बी हो तो जातक में क्रूरता आ जाती है। ऐसे व्यक्ति बहुत जल्दबाज होते हैं।

अगर बुध की उंगली तर्जनी के बराबर हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ होता है। छल तथा प्रपंच से भी अपना काम निकाल लेता है। ऐसे व्यक्ति विद्वान, वैज्ञानिक या रासायनिज्ञ भी होते हैं।

अगर यह उंगली मध्यमा के बराबर हो तो विज्ञान सम्बंधी कार्यों में जातक की विशिष्ट योग्यता होती है।

अंगूठे और हथेली का जोड़ः– यदि अंगूठा हथेली से दूर करने पर समकोण बनाए तो भी अच्छा लक्षण है। अगर हथेली के साथ न्यून कोण (30^0-35^0) बनाए तो अच्छा लक्षण नहीं है। अधिक कोण बनाए तो भी यह अच्छा लक्षण नहीं है।

यदि अंगूठा हथेली के साथ अधिक कोण बनाता है तो जातक अत्यंत स्वतंत्र प्रकृति का होगा और हर कार्य अपनी इच्छानुसार करेगा। ऐसे व्यक्ति अपनी मनमानी करते हैं। इन लोगों को अपने नीचे दबाकर रखना कठिन है।

जिनके हाथों में अंगूठा उंगलियों के पास रहता है; वे सदैव दूसरों पर आश्रित रहते हैं। उनके मन में भविष्य के बारे में शंका एवं घबराहट बनी रहती है। उनमें इतनी क्षमता नहीं होती कि वह किसी विषय पर स्वयं निर्णय पर पहुंच सकें और

अपने विचारों को कार्यान्वित कर सकें। यह लोग अपना भेद किसी को नहीं बताते।

यदि हथेली से दूर ले जाने पर अंगूठा समकोण बनाए तो ऐसा प्राणी भाग्यशाली, बुद्धिमान, निष्पक्ष तथा सबका भला करने वाला होता है। किसी भी मामले में सही फैसला करने में सक्षम होता है।

उंगलियों का उद्गम स्थानः– हथेली में मध्यमा सबसे ऊंचे स्थान पर होती है। तर्जनी इससे कुछ नीचे स्थान से प्रारम्भ होती है। अनामिका तर्जनी से भी नीचे स्थान पर स्थापित होती है। कनिष्ठिका सबसे नीचे स्थान से प्रारम्भ होती है।

इनमें से कोई उंगली अगर अपने निर्धारित स्थान के नीचे से आरम्भ होती है तो उसकी शक्ति कुछ कम समझी जाती है। यदि ऊंचाई पर स्थापित है तो उसकी शक्ति अधिक समझी जाती है।

पर्वों की लम्बाईः– हर उंगली की लम्बाई के साथ इनके तीन भाग प्राकृतिक रूप से हमें अलग नजर आते हैं।

उंगली के प्रथम नाखून वाले पर्व का सम्बंध मास्तिष्क से रहता है। जो भी पर्व जितना कम या अधिक लम्बा होगा, उसके हिसाब से प्राणी के शरीर पर उसका प्रभाव पड़ता है। शुभ और सारा हिसाब इन पर्वो की लम्बाई से ही लगाया जाता है। किसी-किसी हाथ में उंगलियों में पर्वों की संख्या तीन से कम या अधिक भी पाई जाती है, ऐसे हाथ को अशुभ ही माना जाता है। पर्वों के बारे में हम इस प्रकार अनुमान लगाते हैं।

1. पहला पर्व उंगली से ऊपर वाला यदि यह पर्व अधिक लम्बा हो तो ऐसे लोग मस्तिष्क सम्बंधी कार्यों में अधिक ध्यान देते हैं।

2. यदि उंगलियों की बनावट सामान्य तथा अधिक नुकीली हो तथा पहला पर्व लम्बा हो, तो मस्तिष्क कार्य के गुणों में काफी वृद्धि हो जाती है।

3. बीच वाला पर्व यदि अधिक लम्बा हो तो ऐसे लोग व्यवसायिक कार्यों में अधिक तेज होते हैं।

4. यदि उंगलियों की बनावट सामान्य तथा नुकीली हो तथा दूसरे पर्व अधिक लम्बे हों तो ऐसे लोगों को अध्यात्म और व्यावसाय दोनों कार्यों में सफलता मिलती है।

5. यदि उंगलियों की बनावट चौकोर हो तथा उसके दूसरे पर्व अधिक लम्बे हों तो ऐसे प्राणी काम धंधे, व्यापार के क्षेत्रों में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं।

जिन उंगलियों के तीसरे पर्व अधिक लम्बे हों और साथ में कुछ चौड़े भी अधिक हों उनकी उंगलियों को जोर से मिला देने पर कोई सुराख दिखाई न दे, तो ऐसे लोगों के बारे में यही कहा जाएगा कि वे खाने-पीने के बहुत शौकीन हैं। खाने का स्वाद उनकी कमजोरी बन जाता है।

☆☆☆

हाथ के नाखून और व्यक्तित्व

हाथ के नाख़ूनों से जातक के स्वभाव का, सौभाग्य का पता चलता है। उंगलियों का प्रथम भाग जितना लम्बा हो, उसकी आधी लम्बाई नाखूनों की होना उत्तम माना गया है। यह आगे की ओर कुछ बड़े, पीछे की ओर कुछ छोटे होने चाहिएं। अगर यह निर्मल तथा ललाई लिये हुये हैं, और इनकी ऊंचाई कछुए की पीठ की तरह उन्नत हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

जिसके हाथ में नाखून पीलापन लिये हुए जल्दी टूटने वाले हों, वह व्यक्ति नपुंसक होता है।

अगर नाखूनों के अग्रभाग फैले हुये हों, सीप की शक्ल के हों, फटे हुये दिखाई दें या छोटे हों तो जातक दरिद्र होता है।

अगर नाखून टेढ़े अथवा रेखा युक्त हों तो जातक दरिद्र होता है।

यदि नाखून त्वचा में धंसे हुए हों और रूखे हों अर्थात् कांतिहीन हों तो जातक सुखी नहीं रहता।

अगर नाखूनों पर श्वेत बिंदु हों तो जातक पराधीन होकर अपना जीवन व्यतीत करता है।

अगर व्यक्ति के नाखून शेर के नाखूनों जैसे हों तो जातक क्रूर होता है।

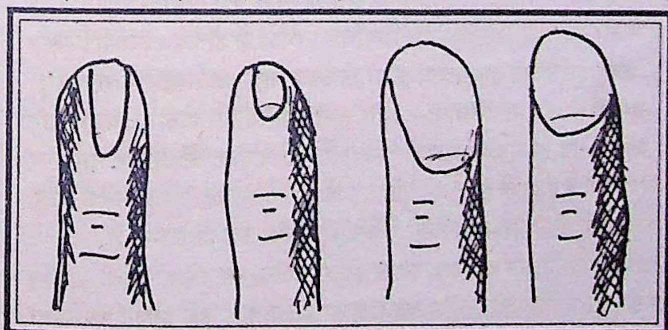
यदि स्त्री के हाथ में नाखून उंगली के अग्रभाग से कुछ आगे निकले हुए, गुलाबी रंग के हों तो स्त्री ऐश्वर्यशालिनी होती है।

स्त्री के नाखूनों पर सफेद बिंदु हों तो वह व्यभिचारी होती है।

मोटे तौर पर हम नाखूनों को चार भागों में बांट सकते हैं।

1. लम्बे नाखून 2. चौड़े नाखून
3. छोटे नाखून 4. तंग नाखून

इनका फलादेश नीचे दिया गया है।



लम्बे नाखूनः–लम्बे नाखून वाले व्यक्तियों की वायु प्रकृति होती है। रात को सोते समय तनिक भी असावधानी से बरसात या जाड़ों में इनकी गर्दन या कमर अकड़ जाती है। इनके सीने और फेफड़े कमजोर होते हैं। विशेषकर उन व्यक्तियों में यह आम बात होती है जिनके नाखूनों पर चंद्र चिह्न हों, नाखूनों पर घाटियां हों और टेढ़े-मेढ़े होकर मांस-पेशियों में धंसे हुये हों। इनको नजला, जुकाम, इंफ्लुएंजा, बच्चों को निमोनिया की शिकायत रहती है। इनका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है।

चौड़े नाखूनः–चौड़े नाखून वाले व्यक्तियों को हमेशा कोई न कोई बीमारी लगी रहती है। इनके गले में टांसिल, मुंह में काक बढ़ जाना तथा गर्मी में छाले पड़ जाना, जिगर या तिल्ली का क्रमशः खराब रहना, जीभ के दोनों किनारों का मांस ऊंचा उठ जाना। यह व्यक्ति क्रोधी होते हैं। इन्हें मियादी अथवा बारी के आने से बुखार बहुत सताते हैं। अगर इन्हें नशीली वस्तुओं के सेवन का शौक हो जाए तो इन्हें मृगी बेहोशी आदि के रोग हो सकते हैं।

छोटे नाखूनः–जिन व्यक्तियों के हाथ में छोटे नाखून हों वे मनुष्य सदा ही किसी न किसी दर्द से पीड़ित रहते हैं। सिर दर्द, आंख दर्द, कान दर्द अक्सर होता है। और बड़ी जल्दी बात को भूल जाते हैं। परिश्रमी और मेहनती होते हुए भी अधिक देर तक लगातार काम नहीं कर सकते। चंचल स्वभाव होने के कारण हँसी मजाक में समय व्यतीत करते हैं। यह व्यक्ति किसी का रौब अथवा दबाव सहन नहीं कर सकते अतः विशेष उन्नति नहीं कर पाते। अगर इनके नाखून, टेढ़े तिरछे, मुड़े हुए, मांस-पेशियों के अंदर धंसे हुए हों तो इन्हें हृदय रोग, उन्माद रोग, अर्ध-भंग आदि रोग हो सकता है।

तंग नाखूनः–जिन व्यक्तियों के हाथ में नाखून अत्यंत तंग व छोटे होते हैं। उन लोगों में दयाभाव कुछ कम होता है, और अहंभाव कुछ अधिक होता है। यह लोग कमजोर स्वास्थ्य, डरपोक और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। शक्की मिजाज होते हैं, तथा दूसरों की आलोचना करने के लिए मौके की तलाश में रहते हैं।

नाखूनों पर चंद्र का निशानः– अगर सभी उंगलियों पर छोटा चंद्र का निशान हो तो जातक का हृदय बड़ा कमजोर होता है। वह तनिक सी आपत्ति आने पर भी घबरा जाता है। उसके हृदय की गति बढ़ जाती है। कई बार तो अचानक किसी बड़ी आपदा के आने पर हृदय-गति रुकने पर देहांत तक हो सकता है।

अगर यही निशान बड़े आकार का हो तो जातक को हमेशा नजला, जुकाम सताता है। ऐसे व्यक्ति को पसीना बहुत आता है। पानी से इसे हमेशा भय रहता है।

अगर चंद्र का निशान अत्यंत छोटा हो तो यह शुभ माना जाता है। यह हृदय के बल को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति धैर्य और शांति से घंटों लगातार परिश्रम कर सकता है। विषय परिस्थितियों में भी यह व्यक्ति धैर्य और साहस से काम करता है। इसको बीमारी भी कम लगती है।

हथेली में पाये जाने वाले चिह्नः– हस्त परिक्षकों ने असंख्य हाथों का परीक्षण करने के बाद हाथ में पाये जाने वाले विभिन्न चिह्नों के बारे में बताया है। हमारे ऋषि-मुनियों ने भी प्राचीन धर्म ग्रंथों और पुराणों में इन चिह्नों के विभिन्न फलादेश पर प्रकाश डाला है।

जिन चिह्नों के विषय में विचार किया जाता है, उनमें से महत्वपूर्ण चिह्नों का फलादेश इस प्रकार है।

शंखः–अगर हाथ में यह चिह्न पाया जाए तो जातक विदेश यात्रा करता है, तथा विदेशों से उसे धन लाभ होता है। उसकी प्रवृत्ति धार्मिक होती है तथा वह साधु संतों की सेवा करता है। मंदिर, धर्मशाला के लिए भी दान देता है।

चंवरः–अगर हथेली में चंवर का निशान हो तो जातक उच्चाधिकारी का पद प्राप्त करता है।

चक्रः–जिसके हाथ में चक्र हो, वह राजा के समान होता है। यह उसके वैभव और शक्ति का प्रतीक है।

गदाः–जिसके हाथ में गदा का निशान हो, उसमें शासकीय योग्यता होती है। उसमें अद्‌भुत शारीरिक बल होता है।

पदमः–जिसके हाथ में पदम हो, वह व्यक्ति उदार हृदय होता है। वह राजकीय सेवाओं में उच्चाधिकारी होता है।

स्वास्तिकः–यह धनी व्यक्तियों के हाथों में पाया जाता है। ऐसा व्यक्ति राजा का मंत्री, संस्था का संचालक, अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है।

रथः–जिस व्यक्ति के हाथ में रथ का चिह्न हो, उसके पास अपना वाहन, स्कूटर, मोटर साइकिल अथवा कार होती है। यह लोग धनी, बुद्धिमान और मिलनसार होते हैं। शत्रुओं पर इन्हें विजय प्राप्त होती है।

छत्रः–यह राजा का प्रतीक है, जिस व्यक्ति के हाथ में यह निशान हो, वह राष्ट्राध्यक्ष, प्रदेशाध्यक्ष अथवा किसी अन्य ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित होता है।

त्रिशूलः–यह शक्ति का प्रतीक है। जिसके हाथ में यह निशान हो, वह धनी, सम्पन्न वैभवशाली होता है। इसकी धार्मिक प्रवृत्ति होती है।

ध्वजः–जिसके हाथ में ध्वज का निशान होता है, वह व्यक्ति दुनिया में प्रसिद्ध होता है। इसे जीवन में उच्च पद प्राप्त होता है।

पर्वतः–जिस व्यक्ति के हाथ में पर्वत का निशान हो, वह पर्वत के समान अडिग विचारों वाला होता है वह किसी भी विषय पर सोच-समझकर जो फैसला लेता है, उस पर अमल करता है, किसी के पीछे नहीं लगता। आमतौर पर ऐसा निशान सरकारी भवन बनाने वाले व्यापारियों के हाथों में देखा जा सकता है।

हाथीः–हाथ में इस निशान का होना ऐश्वर्य का प्रतीक है। जातक हाथी की सवारी करने वाला सौभाग्यशाली कोई राजा या उसके समान होता है। बड़े-बड़े व्यापारियों, ऊंचे पदाधिकारियों के हाथों में यह निशान देखा जा सकता है।

कल्पवृक्षः–जिस व्यक्ति के हाथ में कल्पवृक्ष हो, वह बहुत वैभवयुक्त होता है, बड़े भवनों का स्वामी होता है तथा अनेक नौकरों से युक्त होता है। दान की प्रवृत्ति होने के कारण इसके द्वार पर याचकों की भीड़ लगी रहती है।

हलः–जिस व्यक्ति के हाथ में हल का निशान हो, वह कृषि कर्म करने वाला, किसान होता है।

लक्ष्मीः–जिसके हाथ में लक्ष्मी का चिह्न हो, वह अपार धन-सम्पत्ति का मालिक बनता है। उसकी स्त्री भी लक्ष्मी के समान सुंदर और सौभाग्यशाली होगी।

जहाजः–अगर हाथ में जहाज का निशान हो तो जातक समुद्र पार दूसरे देशों की यात्रा करता है, बड़ा व्यापारी बनता है।

कमंडलः–साधुओं की सेवा करने वाला, धर्म का प्रचार करने वाला, दूर देशों की यात्रा करने वाला होता है।

सिंहः– अगर सिंह का निशान हो तो जातक बड़ा बहादुर, दूसरों पर राज्य करने वाला होता है। वह कभी भी नहीं हारता है तथा राज वैभव से युक्त होता है।

घोड़े का निशानः–अगर घोड़े की आकृति हाथ में पाई जाए तो जातक सेवा में ऊंचा पद प्राप्त करता है। जातक को मोटर गाड़ी आदि सवारी का सुख मिलता है।

सिंहासनः–उच्च पदाधिकारी, राजा या मंत्री।

कलशः–हाथ में कलश का निशान हो तो जातक धार्मिक यात्रा करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला होता है। वह देव मंदिर अथवा धर्मशाला बनवाता है।

सूर्यः–जिसके हाथ में सूर्य का निशान हो, वह व्यक्ति तेजस्वी होता है, तथा किसी सरकारी पद पर विराजमान होता है।

मोरः–मोर का निशान नृत्य कला अथवा संगीत से सम्बंधित प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हाथों में पाया जाता है।

फूलमालाः–फूलमाला का निशान अगर हाथ में पाया जाय तो जातक धनी,

प्रतिष्ठित, समाजसेवी होता है। इसे हर जगह शत्रुओं पर विजय प्राप्त होता है।

ऊपर दिये गये चिह्नों के अलावा कुछ अन्य चिह्न भी हाथ में पाये जाते हैं।

सवाल उठता है कि क्या यह निशान हाथ में पूर्णतया स्पष्ट दिखाई देते हैं ? ऐसा बहुत कम पाया जाता है। यह चिह्न अधिकतर अस्पष्ट और अधूरे होते हैं। हस्त-रेखा अध्ययन करने वालों को असंख्य हाथ देखने के बाद कहीं जाकर पता चलता है कि अमुक हाथ में कोई ऐसा निशान है कि नहीं।

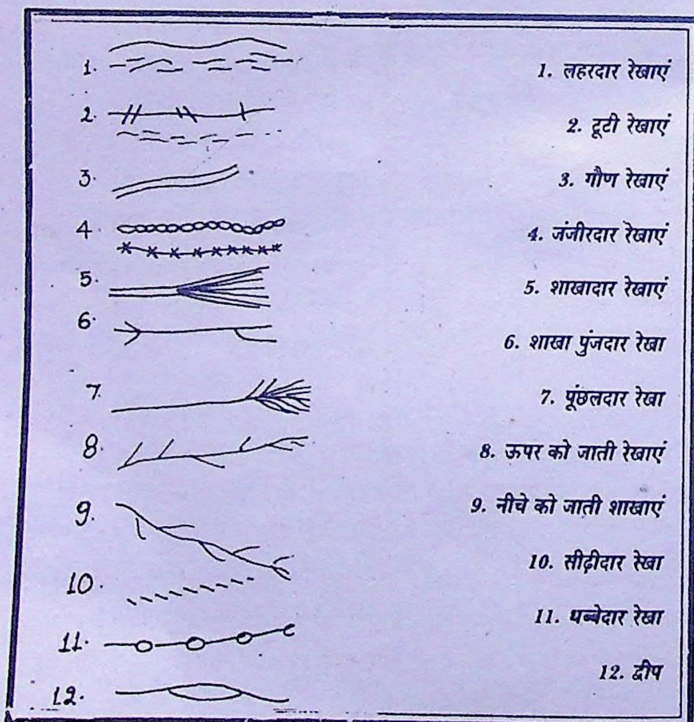
☆☆☆

आपका हाथ और रेखाएं

हाथ में निम्नलिखित मुख्य रेखाएं पाई जाती हैं:

1. जीवन रेखा
2. मस्तिष्क रेखा अथवा मस्तक रेखा
3. हृदय रेखा
4. भाग्य रेखा
5. स्वास्थ्य रेखा अथवा बुध रेखा
6. सूर्य रेखा
7. मंगल रेखा
8. विवाह रेखा
9. मणिबंध रेखाएं

इसके अलावा अन्य रेखाएं इस प्रकार हैं:



1. शुक्र वलय रेखा (Girdle fo Venus), 2. प्रभाव रेखाएं, 3. इन्टयूशन रेखा, 4. यात्रा रेखाएं, 5. संतान रेखाएं।

हर रेखा का अपना क्या महत्व है, आइये रेखाओं के बारे में विस्तृत ज्ञान प्राप्त करें, हाथ में पायी जाने वाली मुख्य रेखाएं इस प्रकार हैं।

जीवन रेखाः— इस रेखा को आयु रेखा, पितृ रेखा, गोत्र प्रगूढ़ रेखा भी कहते हैं, यह रेखा अंगूठे और तर्जनी के बीच से प्रारम्भ होकर गोलाई बनाती हुई, शुक्र क्षेत्र को घेरती हुई मणिबंध या उसके समीप तक जाती है।

अगर जीवन रेखा सुंदर, पुष्ट और गोलाई लिए हो तो जातक स्वस्थ, दीर्घायु, ऐश्वर्ययुक्त होता है।

अगर यह रेखा खंडित हो तो जातक को असफलता और अपमान का सामना करना पड़ता है।



अगर रेखा चलते हुए बीच में जाकर पतली और कमजोर हो जाए तो जीवन के उस भाग में जातक की सेहत कुछ खराब रहती है।

अगर जीवन रेखा पीली सी हो और चौड़ी हो तो जातक की सेहत कमजोर रहती है, स्वभाव भी कुछ बुरा होता है। ईर्ष्यालु स्वभाव भी हो सकता है।

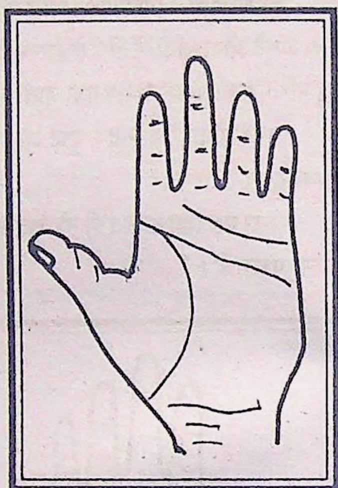
अगर जीवन रेखा लाल रंग की और गहरी हो तो जातक का क्रोधी स्वभाव होता है अक्सर उसे बुखार हो सकता है।

हाथ में स्पष्ट लम्बी जीवन रेखा हो, परंतु भाग्य रेखा और सूर्य रेखा न हो

तो जीवन नीरस, एक जैसा रहता है, कोई खास घटना नहीं होती। पैसा इकट्ठा करने के कम अवसर आते हैं।

बृहस्पति के क्षेत्र के नीचे जीवन रेखा जंजीरदार हो तो बचपन में सेहत अच्छी नहीं रहती है।

अगर चंद्र पर्वत को छूती हुई जीवन रेखा शुक्र के पर्वत को अधिक घेरे में लेती है, तो उसकी लम्बाई बढ़ जाती है। इस दशा में व्यक्ति की आयु बढ़ जाती है।





अगर जीवन रेखा बृहस्पति के क्षेत्र से आरम्भ होती है तो मनुष्य की कोई बड़ी आकांक्षा पूरी होती है।

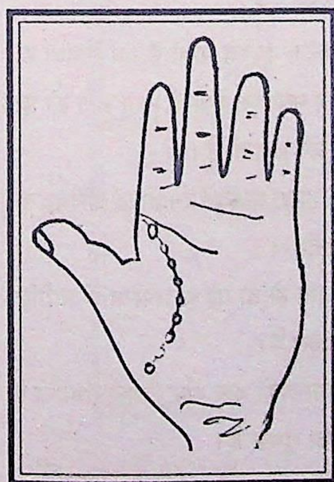
अगर जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा के आरम्भ से ही अलग चलती है, तो व्यक्ति में अथाह जीवन शक्ति होती है, और उसमें आगे बढ़ने की भावना रहती है। यह उनके लिए लाभदायक है जो स्टेज पर भीड़ के सामने भाषण देते हैं। उपदेशकों, वकीलों, अध्यापकों तथा अभिनेताओं के लिए यह अच्छा योग है।

अगर जीवन रेखा छोटी हो तो जातक की उम्र भी थोड़ी होती है।

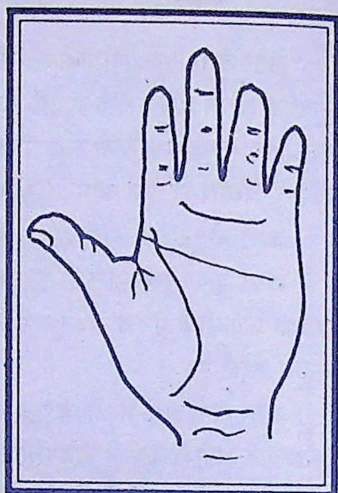
अगर जीवन रेखा छोटी हो परंतु स्वतंत्र (अर्थात् जीवन रेखा से न जुड़ी हो) स्वास्थ्य रेखा सीधी बुध के पर्वत तक जाए तो यह छोटी जीवन रेखा के दोष को समाप्त करती है।

अगर दोनों हाथों में जीवन रेखा छोटी हो आयु की गणना करके देखें, जहां यह समाप्त होती है, वहां ही जीवन का अंत समझें। अगर जीवन रेखा, एक अच्छी मस्तिष्क रेखा के शुरू में ही कुछ फासले पर हो तो जातक किसी भी विषय पर बहुत जल्दी से निर्णय लेता है, किसी भी हालत में अपना फैसला जल्दबाजी में सुनाता है, जिसके कई बार प्रतिकूल परिणाम निकल सकते हैं।

अगर जीवन रेखा सीढ़ीनुमा बनी हुई हो जैसा कि बताया गया है कि मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। अगर पूरी लाइन ऐसी हो तो सारा जीवन ऐसा रहता है या रेखा के जिस भाग में ऐसी स्थिति हो, आयु के उस भाग में स्वास्थ्य में खराबी रहेगी।



अगर जीवन रेखा, जंजीरदार हो तो जातक का शरीर बड़ा नाजुक होता है, स्नायु दौर्बल्य, शरीर में कोई न कोई दर्द रहता है।



अगर जीवन रेखा के आरम्भ में कोर्क बनता हो तो व्यक्ति वफादार होता है, उस पर विश्वास किया जा सकता है।

अगर जीवन रेखा से एक शाखा बृहस्पति क्षेत्र को चीरती हुई चली आये तो जातक अपनी महत्वाकांक्षा में सफलता हांसिल करता है।

अगर जीवन रेखा के दोनों ओर नीचे की शाखाएं हों तो यह धन और स्वास्थ्य की हानि का संकेत समझा जाना चाहिए।

अगर जीवन रेखा के दोनों ओर ऊपर की ओर शाखाएं हों, तो स्वास्थ्य ठीक रहता है।

महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होती हैं, और जीवन में पर्याप्त मात्रा में धन मिलता है।

अगर जीवन रेखा से शाखाएं निकलकर मस्तिष्क रेखा के मध्य भाग को छूती हैं, तो यह जातक को मान सम्मान और धन दिलाती हैं।

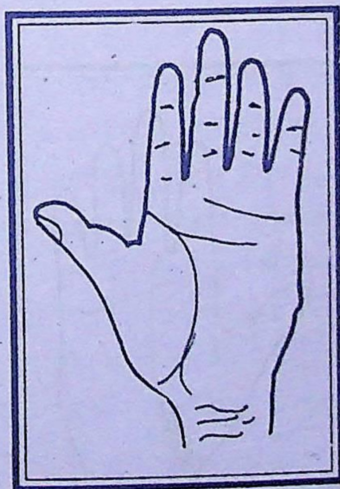
अगर जीवन रेखा के आरम्भ से एक बड़ी शाखा अर्द्धवृत्त बनाती हुई मणिबंध तक आए तो जातक को सिरदर्द की शिकायत रहती है।

अगर जीवन रेखा के अंत में कोर्क बनता हो तो यह वृद्धावस्था में शारीरिक कमजोरी, अधिक श्रम और गरीबी का संकेत है।

अगर जीवन रेखा पूरी होने से पहले समाप्त हो जाए और उसकी समाप्ति पर काला बिंदु हो तो यह दुर्घटनाग्रस्त मृत्यु का सूचक है।



अगर जीवन रेखा बीच में ही समाप्त हो जाए और उसके समानांतर कुछ रेखाएं हों तो यह अचानक मृत्यु का योग बनाती हैं। अगर समानांतर रेखाएं न हों तो मृत्यु तो होती है पर अचानक नहीं।



अगर जीवन रेखा के अंत में बड़ा कोर्क बनता है तो जीवन के अंतिम भाग में आमवात रोग दर्शाता है। व्यक्ति की मृत्यु गरीबी में अपने जन्म स्थान से दूर कहीं होती है।

अगर जीवन रेखा के अंत में बनने वाले कोर्क की एक शाखा चंद्र पर्वत तक कलाई की ओर आए तो यह लम्बी समुद्र यात्रा का सूचक है।

अगर जीवन रेखा के अंत में दो-तीन क्रास बने हुये हों तो जातक गुणवान और मिलनसार होते हुए भी सफलता से दूर रहता है तथा बुढ़ापे में गरीबी और स्वास्थ्य में खराबी देखनी पड़ती है।

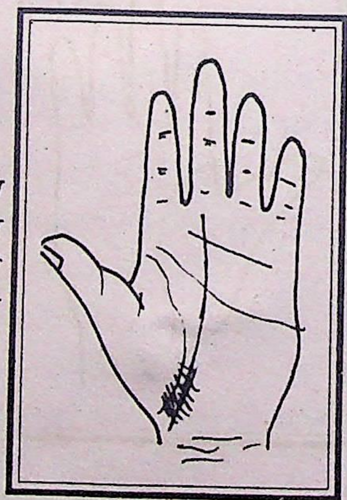
अगर जीवन रेखा अंत में पुच्छलदार रेखा बन जाय तो जातक को अंतिम जीवन में धन हानि होने के कारण गरीबी देखनी पड़ती है।

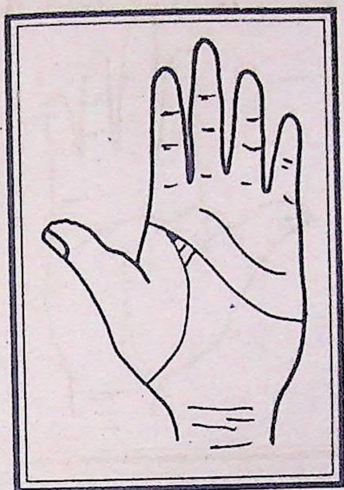
अगर जीवन रेखा से ऊपर उठने वाली शाखाओं को प्रभाव रेखाएं काटें। जितनी शाखाएं काटें, उतने ही मुकदमे होंगे और कानूनी तलाक होगा।

अगर जीवन रेखा अंतिम भाग में पुच्छलदार बन जाय और उससे एक शाखा चंद्र पर्वत तक आए तो जातक क्रैक मस्तिष्क होता है।

अगर जीवन रेखा उद्‌गम स्थान पर मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा से जुड़ी हो तो यह अचानक मृत्यु की सूचना देती है।

अगर जीवन रेखा के समाप्ति स्थल पर बहुत सी आड़ी तिरछी रेखाएं काटें और बीच में भाग्य रेखा भी सम्मिलित हो तो बचपन की गलतियों से बुढ़ापे में जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है।





अगर जीवन रेखा के आरम्भ में दो-तीन कोर्क बनें (बृहस्पति क्षेत्र के नीचे) तो जातक के माता-पिता को मान-सम्मान तथा बड़ा धन लाभ हो, जिससे जातक को भी बाद में लाभ रहे।

अगर ऊपर बनने वाले कोर्क क्रास में बदल जाएं तो मुकदमे हारने का योग बनता है, जिससे मान-सम्मान और धन की हानि होती है।

अगर जीवन रेखा के दो तिहाई भाग पर एक शाखा नीचे की ओर आए तो जीवन शक्ति के कम होने का संकेत है।

अगर जीवन रेखा के दो-तिहाई हिस्से पर एक शाखा उभरकर चंद्र क्षेत्र पर आए तो जातक घूमने-फिरने का शौकीन होता है, मन अशांत और अस्थिर रहता है। एक जगह टिकता नहीं।

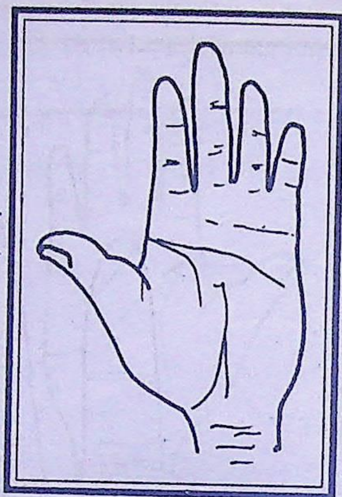
अगर जीवन रेखा के केंद्र में काला बिंदु होकर उसमें से एक छोटी शाखा नीचे आए तो यह जोड़ दर्द, गठिया रोग, की सूचक है।

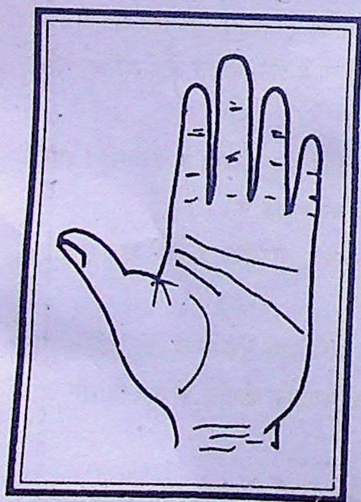
अगर जीवन रेखा टूटकर सीढ़ीनुमा बनी हो तो जीवन के इतने भाग में जातक का लगातार स्वास्थ्य खराब रहता है।

अगर जीवन रेखा बीच में टूटी हो और जीवन रेखा के दोनों टुकड़ों को एक छोटी रेखा क्रास करके मिलाती हो तो यह भयानक बीमारी के बाद आराम आना बताती है।

अगर जीवन रेखा बीच में टूटी हुई हो और दोनों टुकड़े एक वर्ग द्वारा मिलाए गए हों तो यह किसी बड़े शारीरिक कष्ट से बचाव दर्शाते हैं।

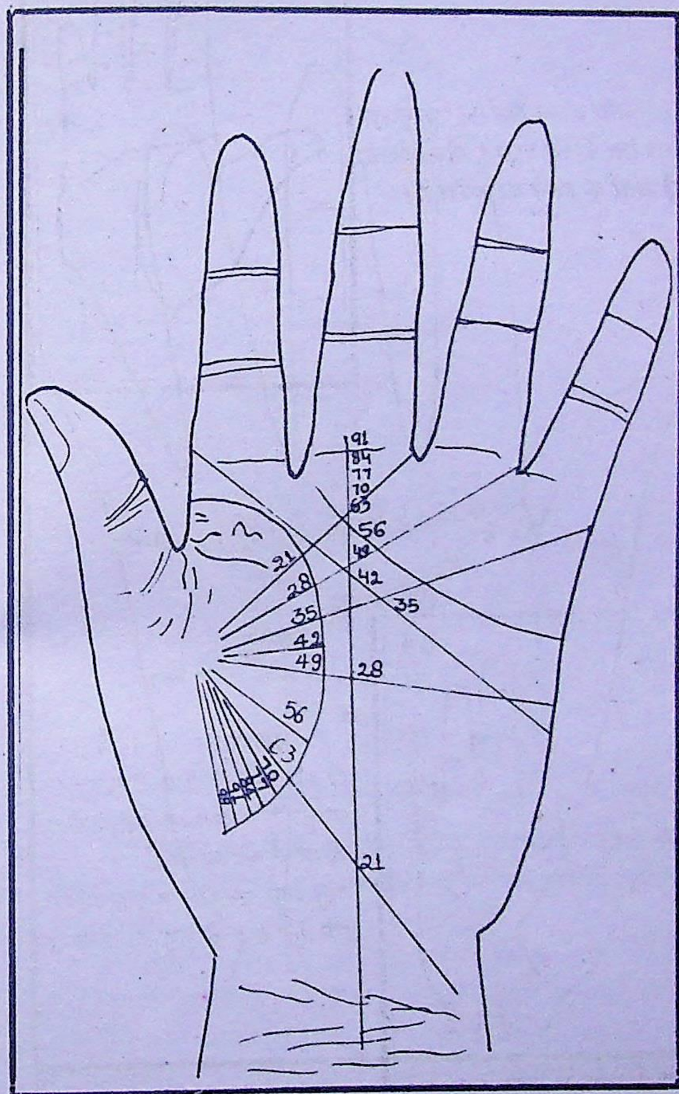
अगर जीवन रेखा का एक टुकड़ा भाग्य रेखा में मिल जाता है, तो यह किसी बड़े खतरे के टलने का संकेत है।





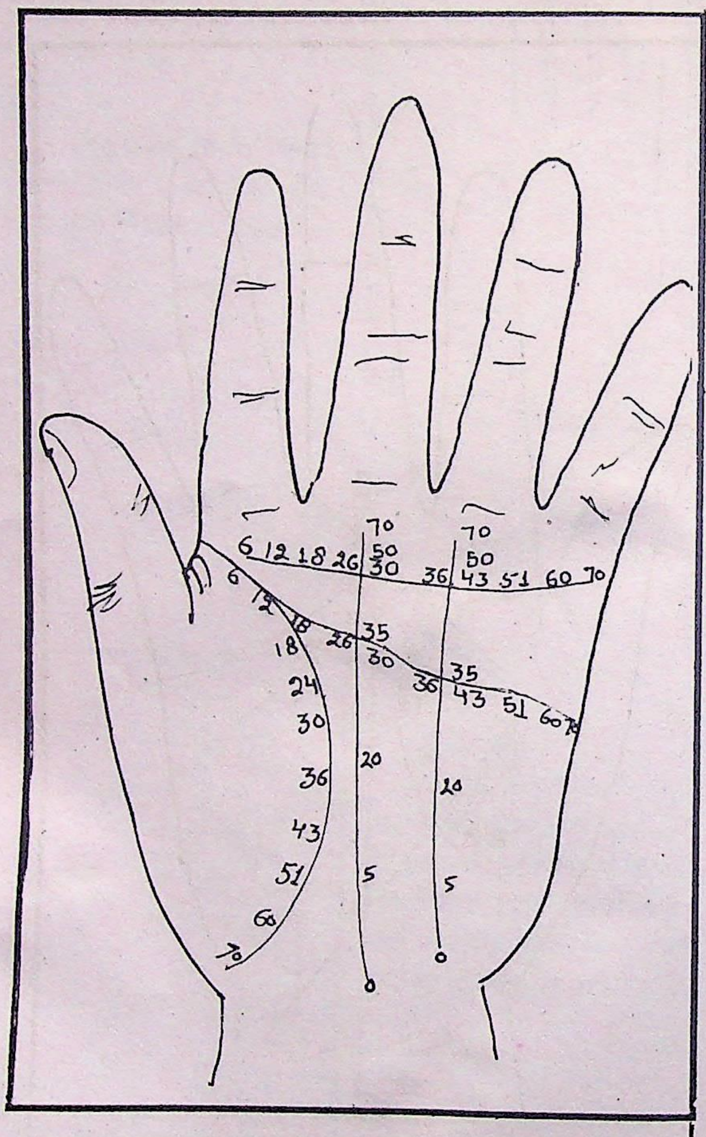
अगर जीवन रेखा बीच में टूटी हुई हो और दोनों हिस्से वाली रेखाएं टूटने पर कुछ देर समानांतर चलें तो किसी बड़ी बीमारी के बाद जातक आराम पाता है। परंतु अगर दोनों रेखाएं शुक्र पर्वत की ओर मुड़ जाएं तो मृत्यु का संकेत है।

अगर जीवन रेखा बीच में से मुड़कर चंद्र पर्वत तक चली आए, तो गम्भीर स्त्री रोग होने की सूचना देती है।



घटना कब घटेगा ?

जीवन रेखा से किस स्थान से क्या आयु समझनी चाहिए, यह नीचे आकृति में समझाया गया है।

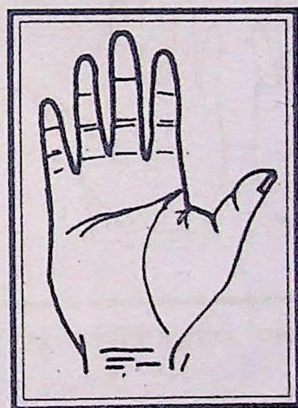


इसी प्रकार भाग्य रेखा पर किस स्थान से क्या उम्र समझनी चाहिए, यह भी इस चित्र में दिखाया गया है। जो रेखा जिस स्थान पर दोषयुक्त होती है, वहां पर गणना करके देखें, क्या आयु बनती है, तो जातक के उस आयु तक पहुंचने पर उस दोष की प्रकृति के अनुसार घटना घटेगी। किस प्रकार की घटना घट सकती है, यह बात हम हर रेखा पर दिये गये विस्तृत प्रकरण में पढ़ सकते हैं।

कई व्यक्तियों के हाथ छोटे होते हैं, या रेखाएं वृत्ताकार अथवा सीधी यानी बड़ी और छोटी होती हैं, वहां पर क्या आयु पढ़नी चाहिए, यह चित्र द्वारा समझाया गया है।

अतः अनकों हाथ के बाद अनुभव से हस्त-रेखा विशेषज्ञ अपनी भविष्यवाणी में सफल हो सकता है।

मस्तिष्क रेखाः– हाथ के मूल एवं हथेली के किनारे के भाग से निकलकर अंगूठे और तर्जनी के बीच वाले भाग तक तीन रेखाएं जाती हैं, इन्हें गोत्र, द्रव्य एवं आयु रेखा कहते हैं।



गोत्र रेखा को जीवन रेखा, द्रव्य रेखा को धन, वैभव सम्पन्नता रेखा भारतीय विद्वानों-मनीषियों ने कहा है, परंतु पाश्चात्य विद्वानों ने इसे मस्तिष्क रेखा या शीर्ष रेखा कहा है।

हथेली में मस्तिष्क रेखा का स्पष्ट, पुष्ट, सुदृढ़ होना नितांत आवश्यक है क्योंकि बुद्धिविहीन जीवन व्यर्थ है। इसी से जीवन में प्रतिष्ठा, यश, मन, धन, सम्पन्नता आदि प्राप्त होती है। यदि बुद्धि विकृत हो गई हो तो सम्पत्ति, मान-सम्मान सभी कुछ नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में जीवन रेखा से इसका महत्व कम नहीं है।

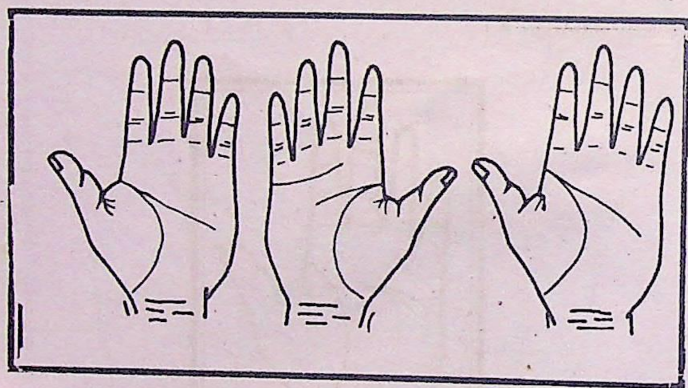
अब तक मैंने लाखों हाथ देखे हैं। उनसे यह ज्ञात होता है कि मस्तिष्क रेखा का कोई निश्चित उद्गम स्थल नहीं है। भिन्न-भिन्न स्थानों से मस्तिष्क रेखा निकलती है। मुख्यतः ऐसे छः स्थान हथेली में देखे जा सकते हैं।

1. जीवन रेखा को काटती हुई प्लूटों एवं हर्षल पर्वतों को पृथक करती हुई हथेली के दूसरी तरफ जाती है।

2. जीवन रेखा के उद्गम स्थल से निकलकर हथेली के मध्य भाग में समाप्त होती है।

3. जीवन रेखा के बराबर चलती हुई काफी आगे जाकर अपना मार्ग बदलती है।

4. जीवन रेखा के पास से चलकर हथेली को भी दो भागों में विभक्त करती है।



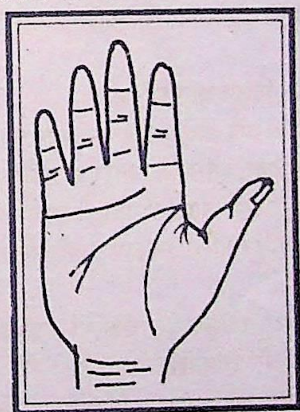
5. गुरु पर्वत से निकलकर हृदय रेखा के निकट से हथेली के उस पार तक जाती है।

6. मस्तिष्क और हृदय रेखा परस्पर मिलकर हथेली के उस पार तक जाती हैं।

प्रथम प्रकारः– यह रेखा जिस हाथ में होती है उसे श्रेष्ठ नहीं मानते हैं, क्योंकि जीवन रेखा को काटती है जिससे जीवन में कई दुर्घटनाएं होती हैं, जिसके कारण वह शरीर और मानसिक रूप से दुर्बल रहता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होना तथा दूरदर्शिता न होने से समय-समय पर अपना ही अहित करना इनके जीवन का प्रमुख रूप है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में एक भी मित्र एवं हितैषी नहीं होते हैं। इनमें प्रतिशोध की भावना इतनी अधिक होती है कि ये निरंतर उसी में जलते रहतें हैं क्योंकि इनमें प्रतिशोध की क्षमता एवं बुद्धि नहीं होती है, ऐसे व्यक्ति निम्न स्तर के संकीर्ण विचार धाराओं के होते हैं।

द्वितीय प्रकारः–ऐसी मस्तिष्क रेखा वाले व्यक्ति जीवन में निःसंदेह महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। यह रेखा अत्यंत श्रेष्ठ मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति के चिंतन एवं कार्य-प्रणाली में सामंजस्य रहता है। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण इनमें स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता होती है। इनमें अत्याधिक तर्क शक्ति होती है। ईश्वरवादी होते हुए भी अंधविश्वासी नहीं होते हैं। यह प्रेम के क्षेत्र में भी गम्भीर होते हैं। ऐसे व्यक्ति की प्रगति देशाटन से होती है। इनकी प्रेरणा श्रोत नारी ही रहती है ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, कलाकार, दयालु, प्रेम, करुणा आदि गुणों से विभूषित होते हैं, परंतु यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी, लहरदार, जंजीरदार और टूटी फूटी न हो अन्यथा इसके गुणों में न्यूनता आ जाती है।

तृतीय प्रकारः–ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अत्याधिक महत्वाकांक्षी एवं प्रबल आत्मविश्वासी होता है। यह दूसरे से काम निकालना भली प्रकार जानता है। येन-केन प्रकरेण अपने कार्य को सिद्ध कर लेता है। यह जीवन में कई प्रकार से धन अर्जित करता है और यह धनोपार्जन में सिद्धहस्त होता है। प्रायः व्यापारियों के हाथ में यह रेखा पायी जाती है। इनमें हीन भावना भी अत्याधिक होती है, जिसके कारण इनका कोई अंतरंग मित्र नहीं होता है। ऐसे व्यक्ति एकांतप्रिय होते हैं, फिर भी भौतिक रूप से ये लोग सफल कहे जाते हैं।



चतुर्थ प्रकारः–ऐसे व्यक्ति अत्यंत भाग्यशाली होते हैं। इनके जीवन में आकस्मिक लाभ की घटनाएं निरंतर घटती रहती हैं। इनका विवाह, शिक्षा, व्यापार, नौकरी आदि घटनाएं आकस्मिक संयोग से श्रेष्ठ हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करते हैं। जन्म स्थान तो निश्चित रूप से छूट जाता है। इस रेखा को यदि संयोग रेखा कहा जाय तो गलत न होगा, क्योंकि इस व्यक्ति

के जीवन में जो भी भौतिक उपलब्धियां होती हैं, वह पराक्रम से नहीं, केवल भाग्य एवं संयोगवश ही होती हैं।

पंचम प्रकारः–ऐसी मस्तिष्क रेखा वाला व्यक्ति स्वतंत्र प्रवृत्ति का होता है। वह न तो किसी के कार्य में हस्तक्षेप करता है और न अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप पसंद करता है। यदि यह रेखा, स्पष्ट गहरी एवं निर्दोष है तो व्यक्ति जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करता है क्योंकि इनमें आत्म-विश्वास, विवेक और निर्णय लेने की क्षमता होती है। यदि यह रेखा कटी एवं लहरदार तथा हृदय रेखा के अत्याधिक निकट है तो वह व्यक्ति मानसिक रूप से दुर्बल हो जाता है। इतना अधिक भावुक हो जाता है कि अनेक बार वह समाज विरोधी कार्य कर बैठता है, हत्या एवं आत्महत्या तक कर बैठता है। इनमें आत्मसयंम नहीं होता है। इनका रहन-सहन भी गंदा होता है।

षष्ठ प्रकारः–प्रायः यह रेखा कम हाथों में देखने को मिलती है। यह रेखा अत्यंत निम्न कोटि की होती है ऐसे व्यक्ति अत्याधिक कठोर, निर्दयी, क्रोधी तथा भावनाशूंय होते हैं। इनके पास हृदय नाम की कोई वस्तु नहीं होती है। यह रेखा अपराधी प्रवृत्ति के लोगों के हाथ में ही होती है। मस्तिष्क और हृदय रेखा लिपटकर एक हो जाती है। ऐसे व्यक्ति जीवन में हत्यायें तक करने में संकोच नहीं करते हैं। साथ में यदि अंगूठा छोटा और गोल है तो निःसन्देह वह व्यक्ति हत्यारा, अपराधी एवं डाकू होता है।

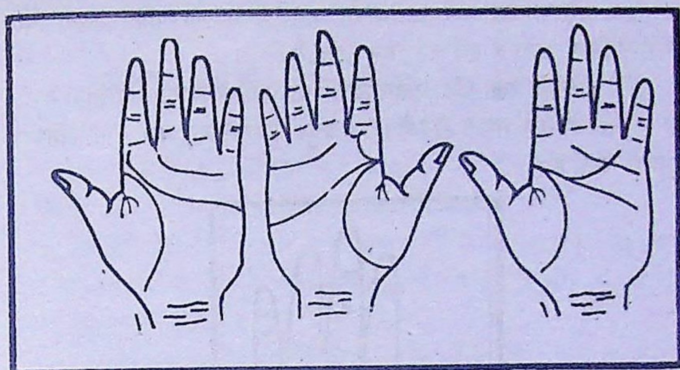
मस्तिष्क रेखा पर विशेष जानकारियांः

1. मस्तिष्क रेखा से यदि कोई प्रशाखा गुरु पर्वत तक जाती है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ साहित्यकार, कलाकार, अभिनेता, नेता तथा भविष्य- वक्ता होता है। ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों के कारण संसार में प्रसिद्धी प्राप्त करता है तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन-यापन करता है, परंतु ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी और दूसरों को नगण्य समझने वाला होता है।

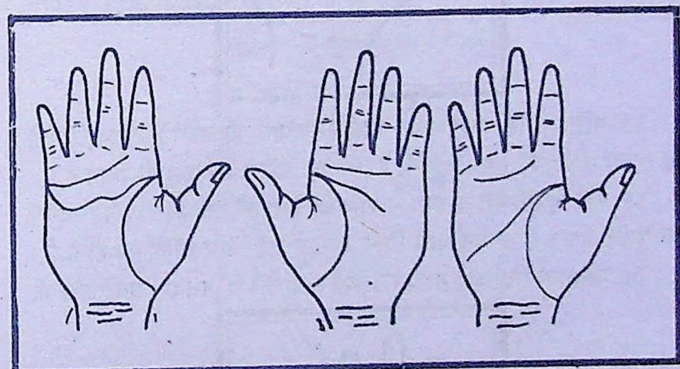
2. जब मस्तिष्क रेखा का झुकाव या कोई भी शाखा शनि पर्वत की ओर जाती है वह व्यक्ति दार्शनिक और चिंतनशील होता है।

3. यदि मस्तिष्क रेखा का झुकाव अथवा कोई शाखा सूर्य पर्वत की ओर जाती है तो वह व्यक्ति समाज में सम्माननीय जीवन जीता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है।

4. यदि मस्तिष्क रेखा का झुकाव अथवा कोई शाखा बुध पर्वत की ओर जाती है तो वह व्यक्ति सफल व्यापारी होता है तथा अतुलनीय सम्पदा का स्वामी होता है।



5. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के मध्य में नीचे की ओर झुकाव करती हुई रुक जाती है, तो वह व्यक्ति स्वार्थी, धन, लोलुप, भोगी, कामी तथा वैभव में जीवन व्यतीत करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति धन को ही ईश्वर मानता है।



6. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली में स्पष्ट और निर्दोष है तो वह व्यक्ति क्रियाशील मस्तिष्क का धनी तथा बुद्धिमान, स्वतंत्र निर्णय की क्षमता वाला होता है।

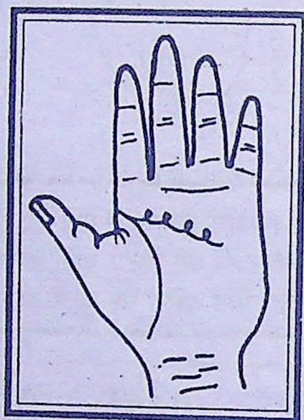
7. यदि मस्तिष्क रेखा चंद्र पर्व पर पहुंचती है, तो वह व्यक्ति कवि हृदय होता है और अनेक बार विदेश यात्राएं भी करता है।

8. मस्तिष्क रेखा यदि चंद्र पर्वत पर जाती है तथा रेखा के अंत में क्रांस का चिह्न है तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में पागल हो जाता है।

9. मस्तिष्क रेखा यदि चंद्र पर्वत को पार कर के मणिबंध तक पहुंच जाय तो वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असफल रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन की चरम परिणति आत्म हनन द्वारा करता है।

10. मस्तिष्क रेखा यदि लहरियादार चलती है तो ऐसा व्यक्ति कथनी और करनी में भिन्न रहता है एवं चंचलमन रहता है।

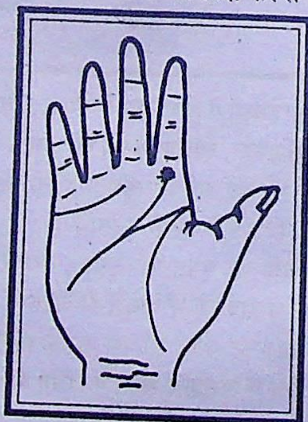
11. मस्तिष्क रेखा यदि अंतिम छोर में दो भागों में विभक्त हो जाती है तो ऐसे व्यक्ति जीवन में सफल होते हैं। इन्हें प्रचुर मात्रा में धन, यश, मान, प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है।



12. मस्तिष्क रेखा यदि मंगल पर्वत पर समाप्त हो जाती है अथवा उसकी कोई शाखा मंगल पर्वत पर पहुंचती है, तो वह व्यक्ति असफल ही रहता है।

13. यदि किसी नारी के हाथ में मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा का उद्गम स्थल पृथक-पृथक है तो वह नारी निम्न स्वभाव एवं निम्न चरित्र की होती है।

14. मस्तिष्क रेखा यदि हृदय रेखा को स्पर्श कर ले अथवा उसकी कोई भी



शाखा हृदय रेखा को स्पर्श करे तो उस व्यक्ति का प्रेम विवाह बदनामी के साथ होता है, अथवा उसका अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी प्रेमिका से अवैध सम्बंध रहता है।

15. मस्तिष्क रेखा यदि हृदय रेखा से अमरबेल की भांति लिपटकर आगे बढ़ती है तो ऐसा व्यक्ति पत्नी या प्रेमिका की हत्या करता है।

16. मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा जब पूर्णतः आपस में मिल जायें तथा हाथ कठोर हो तो वह व्यक्ति जीवन में अनके हत्यायें करता है।

17. मस्तिष्क रेखा की कोई शाखा शनि पर्वत की ओर जाती है, तथा अंतिम सिरे पर क्रास का चिह्न है तो वह व्यक्ति अर्धविक्षिप्त होता है और असफलताएं उसके साथ जुड़ जाती हैं।

18. मस्तिष्क रेखा जिस स्थान पर हृदय रेखा को काटती है, उस आयु पर उस व्यक्ति को विशेष शारीरिक व मानसिक कष्ट मिलता है।

19. मस्तिष्क रेखा की कोई शाखा शनि पर्वत के नीचे पहुंचती है, तथा उस पर द्वीप का चिह्न है तो उस व्यक्ति को 25वें व 26वें वर्ष में विक्षिप्तावस्था का सामना करना पड़ता है।



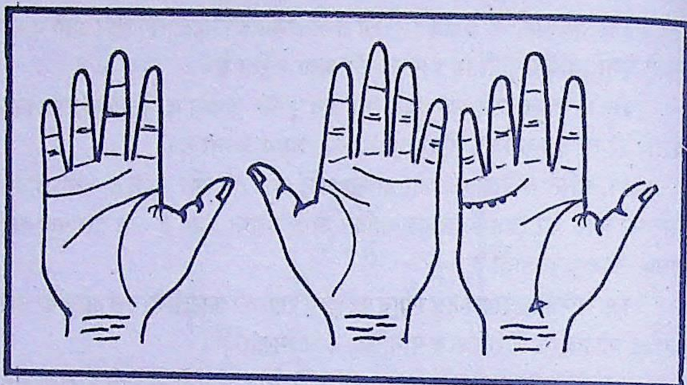
20. मस्तिष्क रेखा पर गुरु पर्वत के सम्मुख द्वीप का चिह्न है तो जीवन के प्रारम्भिक काल में मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे शिक्षा में अवरोध उत्पन्न होते हैं।

21. मस्तिष्क रेखा पर सूर्य पर्वत के सम्मुख द्वीप का चिह्न है तो ऐसा व्यक्ति जीवन में असफल रहता है।

22. यदि मस्तिष्क रेखा में बुध पर्वत के सम्मुख द्वीप का चिह्न है, तो उस

व्यक्ति की मृत्यु विद्युत या अग्नि के कारण होती है।

23. यदि हाथ में दोहरी मस्तिष्क रेखा है, तो ऐसा व्यक्ति अत्यंत भाग्यशाली प्रतिभाशाली, एवं समाज को अपनी उपयोगिता दे जाता है।



24. दोहरी मस्तिष्क रेखा स्पष्ट और सीधी है तो वह व्यक्ति अत्यन्त सफल कूटनीतिज्ञ होता है एवं राजनीति में सफलता प्राप्त करता है।

25. मस्तिष्क रेखा यदि कहीं पर टूट गई है, तो उस आयु में मस्तिष्क सम्बंध ी दुर्घटना या रोग का सामना करना पड़ता है।

26. यदि मस्तिष्क रेखा गुरु पर्वत के समीप खंडित होती है, तो किशोरावस्था में चोट लगती है।

27. यदि मस्तिष्क रेखा शनि पर्वत के समीप खंडित हो जाती है तो उस व्यक्ति पर जीवन के 26वें वर्ष में तीक्ष्ण धारदार शस्त्र से आक्रमण होता है।



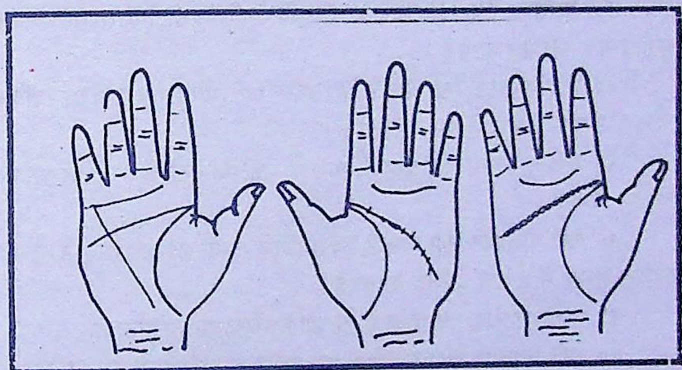
28. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत के समीप खंडित हो जाती है तो व्यक्ति को अपने व्यवसाय में अपयश मिलता है।

29. मस्तिष्क रेखा यदि बुध पर्वत के समीप खंडित होती है तो दीवालियापन का सामना करना पड़ता है।

30. मस्तिष्क रेखा यदि जंजीरयुक्त है तो व्यक्ति मानसिक रोग से पीड़ित रहता है।

31. यदि मस्तिष्क रेखा से छोटी-छोटी अत्यंत सूक्ष्म रेखायें निकलती हैं तो ऐसा व्यक्ति अस्थिर बुद्धि वाला होता है।

32. मस्तिष्क रेखा की कोई भी शाखा यदि शुक्र पर्वत पर जाती है, तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ उन्नति करता है, तथा नारी समाज में अत्यंत लोकप्रिय रहता है।



33. मस्तिष्क रेखा पर यदि श्वेत बिंदु है तो वह व्यक्ति जीवन में सफल रहता है तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति निष्ठावान् रहता है।

34. मस्तिष्क रेखा पर यदि काला बिंदु है तो विक्षिप्तावस्था का सामना करना पड़ता है।

35. मस्तिष्क रेखा पर क्रास का चिह्न है तो उस व्यक्ति की मृत्यु अचानक होती है।

36. मस्तिष्क रेखा पर यदि नक्षत्र का चिह्न है, तो ऐसे व्यक्ति को ब्रेनट्यूमर या चोट लगने की सम्भावना होती है।

37. यदि मस्तिष्क रेखा पर लाल बिंदु है तो उस व्यक्ति का प्रेम विवाह होता है। वह अपने प्रणय-प्रसंग का यथावत् जीवन निर्वाह करता है परन्तु गुरु पर्वत यदि उत्तम स्थिति में नहीं है तो वह व्यक्ति प्रणय-प्रसंग में असफल होने पर आत्महत्या करता है।

38. मस्तिष्क रेखा में वृत्त का चिह्न है तो वह व्यक्ति विवेकहीन एवं बुद्धिहीन होगा।

39. यदि मस्तिष्क रेखा पर त्रिकोण का चिह्न है तो उसे जीवन में भयंकर हानि का सामना करना पड़ता है।

40. मस्तिष्क रेखा में यदि चतुर्भुज है तो उस आयु में आने वाले अनेक व्यवधानों को समाप्त करता है।

41. यदि मस्तिष्क रेखा के अंत में चतुर्भुज है तो उस व्यक्ति को विदेश में बहुत ख्याति मिलती है।

42. मस्तिष्क रेखा यदि स्पष्ट है तथा लम्बी सुडौल उंगलियों के साथ है तो व्यक्ति जीवन में विशेष सफल एवं बुद्धिमान रहता है।

43. मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ होने पर भी यदि उंगलियां छोटी हैं, तो वह व्यक्ति पूर्ण प्रगति नहीं कर पाता है।

44. यदि मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ है और पर्वतों का उभार उत्तम है तो वह व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल रहता है।

45. यदि मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ है, साथ में उंगलियां नुकीली हैं तो वह व्यक्ति विद्वान होता है।

46. यदि मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ है एवं उंगलियां लम्बी एवं कलात्मक हैं तो वह व्यक्ति संसार में ख्याति अर्जित करता है।

47. यदि यह रेखा जालीदार है तो व्यक्ति श्रेष्ठ वक्ता होता है।

48. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के उस पार तक जाती है तो उस व्यक्ति की स्मरण शक्ति श्रेष्ठ होती है। समर्पित व्यक्ति के प्रति आजीवन निष्ठावान रहता है।

49. यदि मस्तिष्क रेखा छल्लेदार है तो उसे सिर का रोग जीवन पर्यन्त रहता है।

50. यदि अंगूठे का आकार छोटा एवं मस्तिष्क रेखा जंजीरदार है तो वह व्यक्ति अविवेकवश धन नष्ट करता है।

51. यदि मस्तिष्क रेखा बुध पर्वत के सम्मुख क्षीण है एवं बुध पर्वत विकसित है तो उसे अपने प्रियजन से विश्वासघात सहन करना पड़ता है।

52. यदि मस्तिष्क रेखा और सूर्य पर्वत क्षीण है तो वह व्यक्ति जीवन में असफल रहता है।

53. सूर्य रेखा यदि मस्तिष्क रेखा में मिल जाये तो वह व्यक्ति अपने प्रयास से असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर देता है।

54. मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा यदि क्षीण हैं तो ऐसे व्यक्ति को क्षय रोग का सामना करना पड़ता है।

55. मस्तिष्क रेखा यदि गुरु पर्वत के साथ स्पष्ट और विकसित है तो उस व्यक्ति में असाधारण आत्मविश्वास एवं प्रबल इच्छा शक्ति होती है।

56. मस्तिष्क रेखा और शनि पर्वत यदि स्पष्ट और विकसित है तो वह उच्चकोटि का धार्मिक नेता होता है।

57. मस्तिष्क रेखा और सूर्य पर्वत यदि स्पष्ट और विकसित हैं तो उस व्यक्ति को आकस्मिक धन लाभ एवं सहयोगी मिलते रहते हैं।

58. बुध पर्वत और मस्तिष्क रेखा यदि स्पष्ट और विकसित हैं तो वह व्यक्ति निसंदेह लखपति बनता है।

59. मस्तिष्क रेखा और चंद्र पर्वत यदि स्पष्ट एवं विकसित हैं तो वह व्यक्ति कवि एवं साहित्यकार होता है।

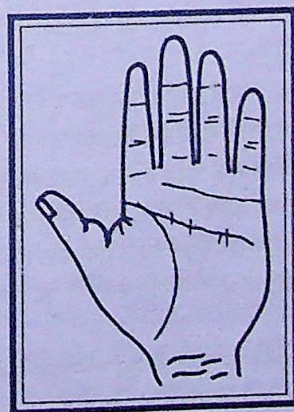
60. मंगल पर्वत और मस्तिष्क रेखा यदि स्पष्ट एवं विकसित हैं तो वह व्यक्ति सेना में उच्च पद प्राप्त करता है।

61. मस्तिष्क रेखा एवं शुक्र पर्वत यदि पूर्ण विकसित एवं स्पष्ट हैं तो वह व्यक्ति कलात्मक जीवन यापन करने वाला व्यक्ति होता है।

62. यदि मस्तिष्क रेखा तथा प्लूटो पर्वत स्पष्ट एवं विकसित हैं तो उस व्यक्ति में आध्यात्मिक शक्ति होती है।

63. यदि मस्तिष्क रेखा और हर्बल पर्वत स्पष्ट तथा विकसित हैं तो वह व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करता है।

64. मस्तिष्क रेखा यदि अंगूठे के निकट से होकर निकल रही है तो उस व्यक्ति का जीवन बहुत कम होता है।

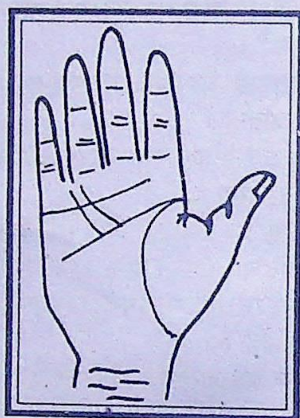


65. मस्तिष्क रेखा यदि जीवन रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ती है तो वह व्यक्ति प्रेम में असफल होकर आत्महत्या कर लेता है।

66. यदि मस्तिष्क रेखा पर स्थान-स्थान पर द्वीप के चिह्न हैं, तो उस व्यक्ति की मृत्यु अचेतावस्था में होती है।

67. मस्तिष्क रेखा यदि अनेक छोटे-छोटे भागों में विभक्त हो तो व्यक्ति विवेकहीन एवं घमंडी होता है।

68. मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा के अंतिम सिरे पर यदि क्रास का चिह्न है तो वह व्यक्ति रोगों से ग्रस्त रहता है।



69. मस्तिष्क रेखा यदि हृदय रेखा को काटती है, तो उसका दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण रहता है।

70. मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा यदि लहरियादार है तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य क्षीण रहता है।

71. मस्तिष्क रेखा से यदि कोई शाखा शुक्र पर्वत पर जाती है तो उस व्यक्ति का प्रेम-प्रसंग गोपनीय रहता है परंतु प्रेम विवाह होता है।

72. यदि कोई शाखा शुक्र पर्वत से निकलकर मस्तिष्क रेखा पर जाती है तो उस व्यक्ति का प्रेम विवाह होता है, परंतु यदि मस्तिष्क रेखा पर आकर समाप्त हो जाती है तो उसका गृहस्थ जीवन त्रस्त एवं नष्ट हो जाता है।

73. मस्तिष्क रेखा के अंत में यदि रेखाओं का गुच्छा बनता है तो व्यक्ति दुष्ट प्रवृत्ति का होता है।

74. यदि मंगल पर्वत बलवान् हो एवं मस्तिष्क रेखा के अंत में त्रिभुज का चिह्न हो तो निसंदेह वह व्यक्ति किसी की हत्या करता है।

75. यदि मस्तिष्क रेखा पर शनि पर्वत के नीचे श्वेत बिंदु है तो व्यक्ति को जीवन में आर्थिक सफलतायें प्राप्त होती हैं।

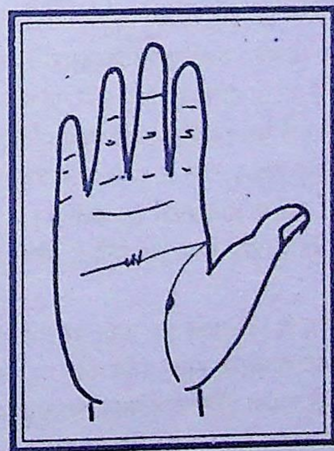
76. मस्तिष्क रेखा एवं सूर्य पर्वत पर यदि श्वेत बिन्दु है तो ऐसे व्यक्ति को विश्वव्यापी यश प्राप्त होता है।

77. यदि मस्तिष्क रेखा पर नीला बिंदु है तो वह व्यक्ति तस्कर एवं जघन्य अपराधी होता है।

78. यदि मस्तिष्क रेखा तथा बुध पर्वत पर श्वेत बिंदु है तो ऐसा व्यक्ति करोड़पति होता है।

हृदय रेखाः– बुध पर्वत के निकट से तर्जनी की ओर जाने वाली रेखा हृदय रेखा की संज्ञा से अभिहित की जाती है। हृदय रेखा का श्रेष्ठ होना अत्यंत आवश्यक है। इसी रेखा के माध्यम से व्यक्ति में मानवीय गुणों की सर्जना होती है। भावुकता,अध्यात्म, ममता, प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, कठोरता, क्रूरता, घृणा आदि गुणावगुणों का ज्ञान इसी रेखा के माध्यम से होता है।

प्राचीन भातीय विद्वान् बराहमिहिर ने इसे आयु रेखा का नाम दिया है। 'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि यदि आयु रेखा बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर गुरु पर्वत तक जाती है, तो व्यक्ति सौ वर्ष तक जीवित रहता है, किंतु यदि यह रेखा छिन्न-भिन्न है तो मृत्यु की आशंका रहती है। जिस स्थान पर टूटी है, उस आयु में मृत्यु की आशंका रहती है।



'स्कंदशारीरिक काशी खंड' में लिखा है कि आयु रेखा का प्रसार तर्जनी तक होना चाहिए। यदि कनिष्ठिका से तर्जनी तक रेखा है तो वह व्यक्ति 120 वर्ष जीवित

रहता है। जिस समय 'स्कंद पुराण' लिखा गया उस समय व्यक्ति यम, संयम, नियम, प्राणायाम, प्रत्याहार के कारण 120 वर्ष तक जीवित रहते थे। परंतु आज के प्रदूषण-युक्त पर्यावरण में मानव की पूर्ण-वय 80 वर्ष रह गई है। कुछ हाथों में श्रेष्ठ जीवन रेखा होने पर वह व्यक्ति इससे भी अधिक जीवित रह लेता है। प्रायः पूर्ण आयु का माप 80 वर्ष ही है।

आचार्य बराहमिहिर का मत है कि आयु रेखा तर्जनी उंगली तक जाती है, तो वह व्यक्ति 100 वर्ष तक जीवित रहता है। यदि रेखा टूटी व कटी हुई है तो उस व्यक्ति की अस्वाभाविक मृत्यु होती है।

विवेक विलास में लिखा है कि प्रत्येक उंगली के नीचे के भाग को 25-25 वर्ष मानना चाहिए। जितने भी क्षेत्रों में आयु रेखा विद्यमान हो उतने ही 25 वर्ष आयु होगी।

पाश्चात्य मतानुसार इस रेखा के विषय में कहा गया है "Mental Side of The Love Nature" (मानव की प्रेमी प्रवृत्ति की स्थिति) जिनके हाथ में हृदय रेखा स्पष्ट, निर्दोष और लालिमायुक्त होती है, वे व्यक्ति जीवन में सफल होते हैं। वे समाज में सम्मान भी प्राप्त करते हैं, क्योंकि वे व्यावहारिक होते हैं। ऐसे व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्णरूपेण करते हैं। इनमें भावुकता अत्यल्प होती है, इस कारण से मानसिक रूप से कष्ट नहीं भोगते हैं। यदि यह रेखा अस्पष्ट, शिथिल, छिन्न-भिन्न हो तो वह व्यक्ति कितना ही दृढ़ निश्चयी एवं धनवान क्यों न हो, फिर भी वह मानवीय गुणों से हीन ही रहता है। उसमें स्वार्थान्धता, पाप तथा कालुष्य अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति विश्वसनीय नहीं होता है। हृदय रेखा कनिष्ठिका के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य एवं शनि पर्वत के नीचे से होती हुई गुरु पर्वत पर पहुंचती है। यदि यह दोहरी है तो वह व्यक्ति विशाल हृदय का होगा एवं जीवन में किसी के प्रति विश्वासघात न करने वाला होता है।

हृदय रेखा मूल रूप से आठ प्रकार की होती है।

1. यह बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होती है, और हथेली के उस पार तक जाती है।

2. जो बुध पर्वत से निकलकर गुरु पर्वत पर समाप्त होती है।

3. जो बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत पर समाप्त होती है।

4. बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत पर समाप्त होती है।

5. बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर तर्जनी और मध्यमा के मध्य में पहुंचकर समाप्त होती है।

6. बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर मध्यमा और अनामिका के मध्य में समाप्त

होती है।

7. बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा के उद्गम स्थल पर जाकर मिलती है।

8. बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर मस्तिष्क रेखा में मिल जाती है।



प्रथम प्रकारः—जिन हथेलियों में हृदय रेखा बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर हथेली के उस पार तक पहुंचती है, ऐसे व्यक्ति अत्याधिक महत्वाकांक्षी होते हैं, तथा उन आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील रहते हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्ति अत्याधिक परिश्रमशील होते हैं, लक्ष्य की प्राप्ति में तन-मन-धन से लगे रहते हैं। जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है, ये शांति से नहीं बैठते हैं। यदि गुरु पर्वत के उस पार, जिस स्थान पर रेखा खत्म हो रही है, रेखा का झुकाव नीचे की ओर है, तो इन्हें जीवन की सफलतायें प्राप्त होती हैं तथा यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, वैभव आदि प्राप्त होते हैं।

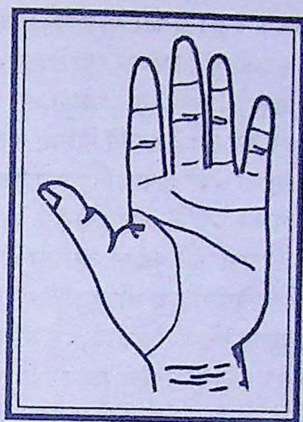
द्वितीय प्रकारः—बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर गुरु पर्वत पर जाकर समाप्त होने वाली यह रेखा सर्वश्रेष्ठ हृदय रेखा कहलाती है। वास्तव में यह शनि और गुरु पर्वत को विभाजित करती है। ऐसी हथेली वाला व्यक्ति विशाल हृदय का होता है। परोपकारी, निष्पक्ष, न्यायप्रिय, निर्भीक अपने लक्ष्य के प्रति प्रयत्नशील एवं लक्ष्य को प्राप्त करता है। सफलतायें सहचरी होती हैं। ऐसा व्यक्ति न तो अधिक उच्छृंखल होता है और न ही अधूरापन लिये हुए जीवन जीता है। यह समाज की चिंता न करके समाज को महत्वपूर्ण योगदान दे जाते हैं। जीवन में जो भी प्रतिज्ञा करते हैं या किसी को कोई वचन देते हैं तो उसका पूर्ण रुपेण निर्वाह करते हैं। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, सात्विक तथा ईमानदार होता है। इनका स्तर उच्च मानसिक विचार-धाराओं



पर निर्भर करता है। यह स्वतंत्र विचारधारा के व्यक्ति होते हैं। इनकी करनी-कथनी में अंतर नहीं होता है।

ये कभी किसी के साथ विश्वासघात नहीं कर सकते हैं। भावनाप्रधान होते हुए भी कर्त्तव्यनिष्ठ रहते हैं। प्रेम के क्षेत्र में गम्भीर होते है। इनमें चारित्रिक दोष नहीं होता। यह किसी के भी सौंदर्य जाल में नहीं फंसते हैं। यदि ऐसे व्यक्ति किसी से प्रेम करते हैं तो उसे विवाह में परिणित करके उसके प्रति सम्पूर्ण जीवन निष्ठावान रहते हैं। इनको अनेक बार धोखा मिलता है, परंतु ये धोखा उठाकर भी अपने प्रियजन के हृदय को ठेस नहीं पहुंचाते हैं। ऐसा व्यक्ति समाज के समक्ष अति प्रसन्न जीवन व्यतीत करता है। वियोग होने पर एकांत में आंसू बहा लेते हैं। यह अपने आपको विचलित नहीं होने देते हैं। एवं इनका लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम में परिणित हो जाता है। यह जीवन में शांत, सुखी और सरल रहते हैं। जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, प्राप्त करते हैं। इनकी मृत्यु के पश्चात् भी इन्हें लोग स्मरण करते हैं। संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों के हाथ में यह रेखा देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्ति समाज और राष्ट्र को बहुत कुछ देकर जाते हैं।

तृतीय प्रकारः—जिन हथेलियों में बुध पर्वत से यह रेखा निकलकर शनि पर्वत पर जाकर समाप्त होती है, ऐसे व्यक्ति निम्न चरित्र के होते हैं। इनका जीवन छल, कपट, आडम्बर, झूठी शान शौकत, व्यर्थ के दिखावे से पूर्ण रहता है। यह किसी के प्रति निष्ठावान नहीं होते हैं। अत्याधिक स्वार्थी होते हैं। अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु जघन्य से जघन्य अपराध भी कर सकते हैं। इनका प्रेम सात्विक न होकर केवल वासनापूर्ति का साधन मात्र होता है। इनका प्रेम-प्रदर्शन मिथ्या होता है। वासनात्मक स्वार्थ सिद्धि होने पर यह उसे पहचानने से भी इंकार कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति अनेक



स्त्रियों से प्रेम करते हैं और सभी को धोखा देते हैं, परंतु अधिक दिनों तक यह समाज की आंखों में धूल नहीं झोंक पाते हैं। इनका वास्तविक स्वरूप समाज के समक्ष पाप के घड़े के समान फूट पड़ता है तब निंदनीय और उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति अविश्वासी, धोखेबाज, निर्मम, स्वार्थी एवं अविवेकी होते हैं। समाज में इन्हें कोई स्थान, कोई मान्यता प्राप्त नहीं होती है।

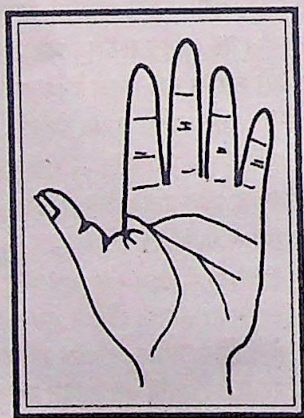
चतुर्थ प्रकारः–जिन हथेलियों में हृदय रेखा सूर्य पर्वत पर जाकर समाप्त होती है, ऐसा व्यक्ति असफल और आत्महत्या तक करने वाला होता है, क्योंकि इनमें लेशमात्र भी धैर्य नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति दयाहीन, ममताहीन, स्वार्थी, निंदक, कुंठाग्रस्त, अदूरदर्शी होता है। यह व्यक्ति सफल निंदक होते हैं। यह कभी किसी की प्रशंसा करना तो दूर, उसे सुन भी नहीं सकते हैं। प्रेम के क्षेत्र में अत्यंत अधीर होते हैं और असफल रहते हैं। इनका हृदय अत्यंत कमजोर एवं अशक्त होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभावतः चिड़चिड़े दूसरे के कष्ट से सुखानुभूति करने वाले तथा धोखेबाज होते हैं। यह जीवन में सदैव प्रत्येक क्षेत्र में असफल रहते हैं। प्रायः ऐसे लोग आत्महत्या या हृदय रोग से मरते हैं।

पंचम प्रकारः–जिन हथेलियों में हृदय रेखा बुध पर्वत से निकलकर तर्जनी और मध्यमा उंगलियों के मध्य जाकर समाप्त होती है, ऐसे व्यक्ति आत्मकेंद्रित होते हैं। यह व्यक्ति अपने कार्यों में इतने अधिक तल्लीन हो जाते हैं, कि इन्हें दूसरों की लेशमात्र भी चिंता नहीं रहती है। यद्यपि ऐसे व्यक्ति परिश्रमी, लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संघर्षशील होते हैं। किंतु इन्हें अनेक बार पराजय भी मिलती है। यद्यपि इनका मस्तिष्क उर्वर होता है, योजनाबद्ध कार्य करते हैं, तथा अत्याधिक उत्साह से कार्य प्रारम्भ करते हैं सफलता प्राप्त करने से पूर्व ही इनका उत्साह, जोश, उमंग, समाप्त

हो जाता है और ध्येय में सफल नहीं हो पाते हैं। इनका मुख्य कारण इनका शंकालु स्वभाव है। यह जीवन में कभी भी किसी पर पूर्ण विश्वास नहीं करते हैं। प्रत्येक को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसी कारण स्वजन, सम्बंधी, मित्र, परिवारीजन अपने आपको इनसे पृथक कर लेते हैं। इनमें निराशा अत्याधिक व्याप्त होती है 50 वर्ष की आयु के पश्चात् यह अपने आपको निःसहाय समझने लगते हैं। निराशाएं जीवन के उत्साह को भंग कर देती हैं, और जीवन के बोझ को जीवित शव की भांति वहन करते रहते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति असफल ही जीवन जीते हैं।

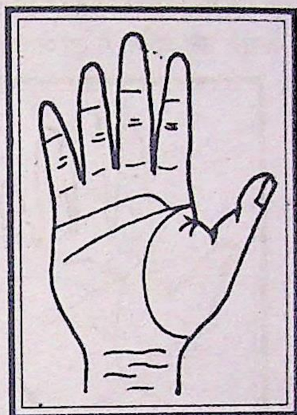
षष्ठ प्रकारः—जिन हथेलियों में हृदय रेखा बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर अनामिका और मध्यमा के मूल में पहुंचकर समाप्त होती है, ऐसे व्यक्ति व्यावहारिक अधिक होते हैं। भावना की अपेक्षा कर्त्तव्य को श्रेष्ठ स्थान प्रदान करते हैं। यह जीवन में अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण अनेक लोगों से अकारण शत्रुता कर बैठते हैं। ऐसे व्यक्ति कायर और निराशावादी भी होते हैं। ये प्रेम प्रसंग में अविश्वसनीय रहते हैं।

सप्तम प्रकारः—जिन हाथों में हृदय रेखा बुध पर्वत से निकलकर जीवन रेखा के उद्गम स्थल पर मिलती है, ऐसे व्यक्ति सामर्थ्यवान् होते हैं, अत्यंत भाग्यशाली होते हैं। इन्हें जीवन में सभी प्रकार के वैभव, यश, सम्मान, प्रेम, पद, प्रतिष्ठा, प्राप्त होते हैं। ये परिश्रमी, स्वतंत्र विचारों वाले, परोपकारी, न्यायप्रिय होते हैं। ईश्वर के प्रति आस्थावान् होते हैं। जीवन में किसी के प्रति विश्वासघात नहीं करते हैं, यद्यपि



इन्हें समय-समय पर धोखा मिलता रहता है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें प्रेम करते हैं, उनके प्रति सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहते हैं। प्रेम के क्षेत्र में अत्यंत गम्भीर रहते हैं। ये जीवन में पूर्णरूपेण सफल रहते हैं।

अष्ठम प्रकारः–कुछ हथेलियों में हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा परस्पर मिल जाती हैं, यद्यपि हृदय रेखा का निकास बुध पर्वत से ही होता है। ऐसा व्यक्ति साधारण जीवन ही जीता है। ये हृदयहीन, कठोर, एवं कर्कश स्वभाव के होते हैं,। इनके



जीवन में प्रेम, वात्सल्य, करुणा, दया का कोई स्थान नहीं है। ऐसे व्यक्ति अनंगप्रिय होते हैं। अपनी स्वार्थसिद्धी हेतु जघन्य कृत्य करने से भी नहीं हिचकते। यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा में लिपटी हुई है, तो ऐसा व्यक्ति अपनी प्रेमिका अथवा पत्नी की हत्या भी कर सकता है। प्रायः ऐसी रेखा वाले व्यक्तियों को समाज में कोई विशिष्ट स्थान प्राप्त नहीं होता है।

हृदय रेखा पर विशिष्ट जानकारियांः

1. यदि हथेली में हृदय रेखा नहीं है तो, ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, लोभी, कामुक एवं व्यसनी होता है। इसके हृदय में भावुकता, दया प्रेम, ममता नगण्य मात्र रहती है।

2. यदि हृदय रेखा मिट रही है, अथवा मिट गई है, दूसरे हाथ में यदि है तो उसे प्रेम के क्षेत्र में इतना आघात् लगता है कि वह बोझ के समान जीवन ढो रहा है। उसके जीवन में कोई आकर्षण एवं उत्साह नहीं है।

3. हृदय रेखा जिन-जिन पर्वतों से होकर गुजरती है उसमें उन पर्वतों के गुण आ जाते हैं।

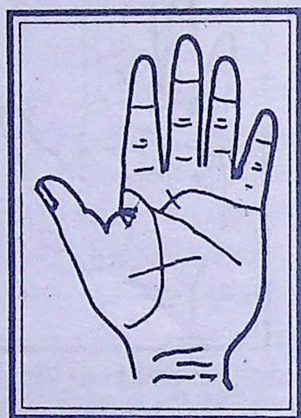
4. हृदय रेखा जितनी लम्बी हो और गुरु पर्वत पर जितने भीतर से प्रारम्भ हो वह व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में उतना ही गम्भीर होगा।

5. हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर जिस स्थान पर झुके उस आयु पर मस्तिष्क का पूर्ण विकास होता है परंतु यदि मस्तिष्क रेखा में यह रेखा पूर्णतः मिल जाती

है तो व्यक्ति में स्वतंत्र निर्णय की क्षमता समाप्त हो जाती है।

6. यदि हृदय रेखा की कोई शाखा मस्तिष्क रेखा को काटती है तो उस आयु के मध्य मानसिक क्लेश का योग बनता है।

7. यदि किसी पर्वत से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा में आकर मिलती है तो उस पर्वत विशेष के गुण उस व्यक्ति में आ जाते हैं।



8. हृदय रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर यदि मस्तिष्क रेखा में मिलती हैं तो उस व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन मानसिक कष्ट झेलने पड़ते हैं।

9. यदि हृदय रेखा स्पष्ट, लम्बी और सुंदर है तो वह व्यक्ति दृढ़ प्रेम निर्वाह करता है।

10. हृदय रेखा यदि अत्याधिक लाल है तो ऐसे व्यक्ति में प्रेम की तीव्रता के कारण हिंसात्मक प्रवृत्ति होती है।

11. यदि हृदय रेखा पर द्वीप का चिह्न है तो उसे हार्दिक यातनाएं सहनी पड़ती हैं।

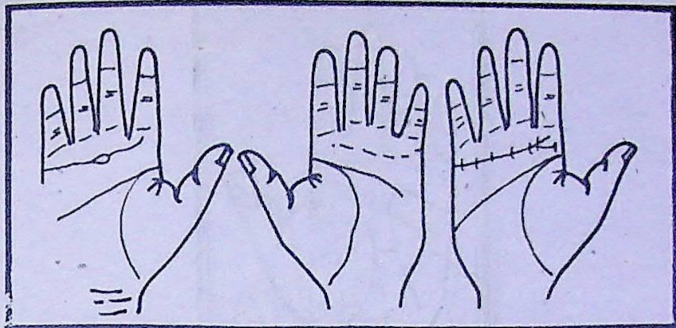
12. यदि हृदय रेखा अनेक स्थान पर टूटी है तो ऐसे व्यक्ति को निःसंदेह हृदय रोग होगा।

13. यदि हृदय रेखा हथेली के उस पार तक पहुंच जाती है, तो व्यक्ति अन्ध श्रृद्धालु होता है।

14. यदि हृदय रेखा कई स्थान पर कटी है तो व्यक्ति निराशावादी होगा।

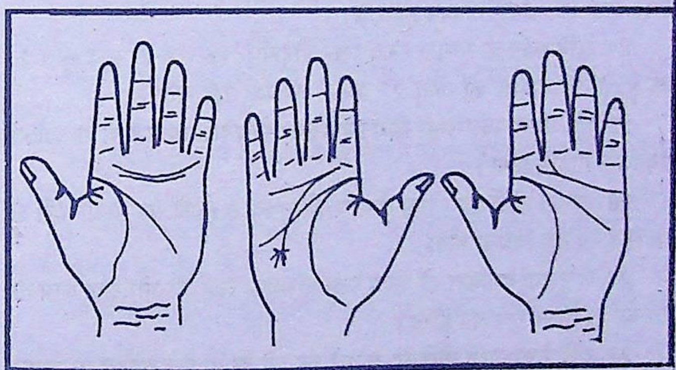
15. हथेली में यदि दोहरी हृदय रेखा है तो वह उच्च पद प्राप्त करता है, तथा उसके प्रेम में गम्भीर्य होता है।

16. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से अधिक स्पष्ट, लम्बी और कालिमा युक्त



है तो वह व्यक्ति, असाधारण ख्याति अर्जित करता है।

17. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत के क्षेत्र को घेर लेती है तो उस व्यक्ति को समाज और मानव मात्र के प्रति अत्यंत घृणा रहती है।



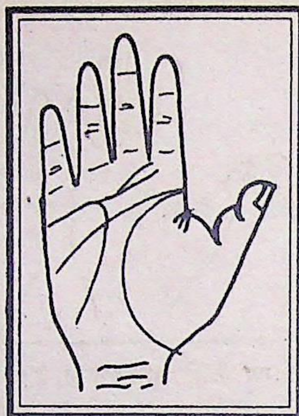
18. हृदय रेखा के अंत में तारे का चिह्न है तो उस व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु होगी।

19. हृदय रेखा पर यदि नक्षत्र का चिह्न है तो वह व्यक्ति आजीवन रोगी रहता है।

20. हृदय रेखा का अंतिम सिरा यदि दो भागों में विभक्त हो जाता है तो ऐसा व्यक्ति जीवन में असाधारण सफलताएं प्राप्त करता है, सहृदय एवं न्यायप्रिय होता है।

21. हृदय रेखा यदि शनि पर्वत पर समाप्त हो जाती है तो वह व्यक्ति अनंगप्रिय होता है।

22. हृदय रेखा यदि सूर्य पर्वत पर समाप्त हो जाती है तो ऐसे व्यक्ति को जीवन-भर धोखा मिलता है।



23. यदि यह रेखा गुरु पर्वत के नीचे त्रिशूल की तरह बन जाती है तो वह व्यक्ति एक बार पागल अवश्य होता है।

24. शनि पर्वत के सम्मुख हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा पर यदि क्रास का चिह्न है तो उस व्यक्ति की आयु 27 वर्ष से अधिक नहीं होती है।

25. यदि मंगल पर्वत उभार लिये हुए है तथा हृदय रेखा स्पष्ट है तो वह व्यक्ति अत्याधिक साहसी होगा।

26. अत्यंत छोटी हृदय रेखा दुर्भाग्य की सूचक है। यदि यह किसी नारी के हाथ में है तो वह विधवा होगी।

27. उंगलियां वर्गाकार हों, हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर झुक जाय तो ऐसा व्यक्ति निम्न स्तर का होगा।

28. यदि रेखा हल्के नीले या सांवले रंग की हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में कोई आकर्षण और उत्साह नहीं रहता है।

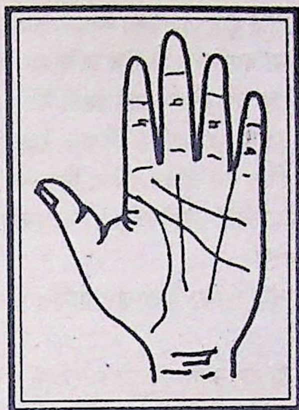
29. यदि हृदय रेखा पीले रंग की है, तो हृदय रोग की सम्भावना होती है।

30. यदि हृदय रेखा अत्याधिक चौड़ी तथा पीली हो तो ऐसे व्यक्ति को निःसन्देह हृदय रोग होगा।

31. यदि यह रेखा अत्यधिक पतली, गहरी और लम्बी है तो व्यक्ति हत्यायें करता है।

32. यदि रेखा जंजीरेदार है तो व्यक्ति असत्यभाषी होता है।

33. यदि हृदय रेखा जंजीरेदार है और शनि पर्वत के नीचे समाप्त हो जाये तो उसे विपरीति योनि के प्रति घृणा रहती है।



34. यदि किसी नारी के हाथ में शनि पर्वत पर पहुंचकर हृदय रेखा जंजीरेदार बन जाती है तो वह नारी दुश्चरित्र होगी।

35. यदि हृदय रेखा सूर्य पर्वत के नीचे छिन्न-भिन्न है तो वह व्यक्ति शक्तिहीन होगा।

36. यदि हृदय पर्वत पर हृदय रेखा कटी है तो उसका दाम्पत्य जीवन उलझन पूर्ण होगा।

37. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा मंगल पर्वत पर जाती है तो वह व्यक्ति कठोर स्वभाव का होता है।

38. यदि हृदय रेखा पर काले बिंदु हैं, तो उसका दाम्पत्य जीवन क्लेशमय होगा।

39. यदि हृदय रेखा पर श्वेत बिंदु हैं, तो उसका दाम्पत्य जीवन आदर्श होगा।

40. यदि हृदय रेखा पर लाल बिंदु हैं तो उस व्यक्ति का प्रेम विवाह होता है। बहुत ही आदर्श जीवन व्यतीत करता है, परंतु पति-पत्नी की आयु में दस वर्ष का अंतर रहता है।

41. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत से होकर मंगल पर्वत पर जाती है तो व्यक्ति को अतंर्राष्ट्रीय ख्याति मिलती है।

42. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत से होकर मंगल पर्वत पर जाती है तो व्यक्ति अविवेकी एवं बुद्धिहीन होता है।

43. हृदय रेखा यदि चतुर्भुज के साथ कहीं भी समाप्त हो जाती है तो व्यक्ति चंचल स्वभाव का होता है।

44. यदि हृदय रेखा शनि पर्वत के सम्मुख मस्तिष्क रेखा में मिलती है तो

व्यक्ति को जीवन में अनेक दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

45. यदि हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा से मिलती है तो उस व्यक्ति की मृत्यु 28 से 26 वर्ष के मध्य हो जाती है।

46. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा मस्तिष्क रेखा से जा मिलती है तो उस व्यक्ति का जिससे प्रेम होगा उसे जीवन पर्यन्त निभाता है।

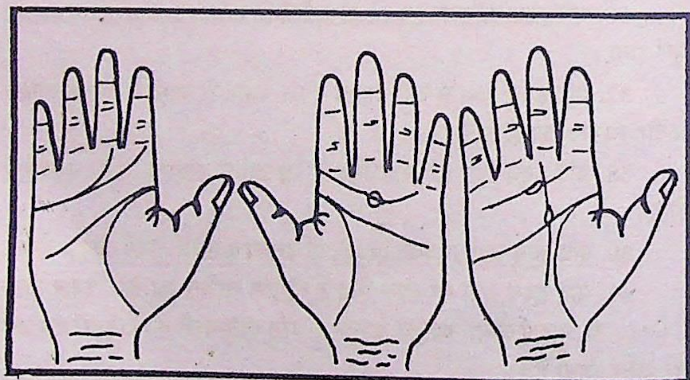
47. यदि शुक्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा से मिलती है तो व्यक्ति अत्याधिक कामपिपासु होगा।

48. यदि कई चतुर्भुज के चिह्न हैं तो उस व्यक्ति में अत्याधिक प्रतिभा होती है।

49. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत पर कई शाखाओं में विभक्त हो जाती है तो जीवन में आसाधारण सफलताएं अर्जित करता है।

50. यदि हृदय रेखा क्षीण तथा अस्पष्ट है और इससे कोई भी शाखाएं न निकलें तो उस व्यक्ति में सन्तानोत्पादन शक्ति कम होती है।

51. यदि रेखा स्पष्ट और गहरी है तथा अंगूठे का प्रथम पोर सुदृढ़ है तो ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी होता है।



52. यदि हृदय रेखा के प्रारम्भ में शाखापुंज है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ वक्ता होता है।

53. यदि हृदय रेखा के मध्य में शाखापुंज है तो वह व्यक्ति घमंडी होता है।

54. यदि हृदय रेखा से कोई सहायक रेखा नहीं निकलती है तो व्यक्ति को संतान-सुख नहीं मिलता है।

55. यदि हृदय रेखा पर वृत्त का चिह्न है, तो वह व्यक्ति हृदय से कमजोर होगा।

56. यदि हृदय रेखा की एक शाखा तर्जनी और मध्यमा के मूल में जाती है तथा दूसरी शाखा गुरु पर्वत पर पहुंचती है, और चंद्र पर्वत उभार लिए हुये है, तो ऐसे व्यक्ति का जीवन पूर्ण शांतिमय रहता है।

57. यदि हृदय रेखा व भाग्य रेखा, दोनों पर ही द्वीप का चिह्न है तो व्यक्ति निःसंदेह व्यभिचारी होगा।

58. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा हर्सल पर्वत पर जाती है तो उसे जीवन में कई बार आकस्मिक सहयोग मिलता है।

59. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत पर पहुंचती है तथा भाग्य रेखा चंद्र पर्वत से निकलकर हृदय रेखा से मिलती है, परंतु हृदय रेखा को काटकर आगे बढ़े तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम विवाह होता है। प्रेम के कारण जातक का जीवन हर्षमय होता है और वह जीवन में अत्याधिक सफलतायें प्राप्त करता है।

60. यदि हृदय रेखा व बुध क्षेत्र पर काले या मटमैले रंग का चिह्न है तो उसकी पत्नी को कोई डॉक्टर या व्यापारी अपना लेगा और आप निराशापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

61. हृदय रेखा से कोई रेखा चंद्र पर्वत की ओर जाती है तो उस व्यक्ति को हिस्टीरिया (मिर्गी) के दौरों की सम्भावाना होती है।

62. यदि दो हृदय रेखाएं अत्यंत घनिष्ठ हैं तो ऐसा व्यक्ति अत्याधिक स्नेह करने वाला होता है।

भाग्य रेखाः– मानव चाहे जितना चतुर एवं बुद्धिमान हो, जो उसके भाग्य में नहीं है, उसको प्रयत्न करने पर भी वह नहीं प्राप्त हो सकता है।

इस रेखा का ज्योतिष में विशेष महत्व है। समुद्र ऋषि ने लिखा है–"नीचे के मणिबंध को त्यागकर यह रेखा सीधी मध्यमा या तर्जनी के मूल तक जाती है। यह रेखा सुवर्ण, रत्न तथा राज्यश्री दायक है, इसमें संशय नहीं।"

'स्कंद शारीरिक' ग्रंथ के अनुसार, यदि रेखा प्रारम्भ में जीवन रेखा से मिली हो एवं इसके प्रारम्भ में 'शंख' का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अत्याधिक आर्थिक सम्पन्नता से युक्त होता है। यदि 'मत्स्य' चिह्न हो तो भी यही परिणाम होता है। ऐसी रेखा को 'धात्री' रेखा कहते हैं। यदि यह मध्यमा के नीचे न जाकर अनामिका के मूल में ही समाप्त हो जाती है तो भी विशिष्ट भाग्योद्य कारक फल होता है।

भाग्य रेखा प्रायः 55 प्रतिशत हाथों में नहीं पायी जाती है। जिन हाथों में यह रेखा नहीं होती है उन्हें स्वजनों और कुटुम्बियों से कभी भी किसी प्रकार का भी सहयोग नहीं मिलता है। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः स्वनिर्मित व्यक्तित्व वाले होते हैं।

मानव जीवन में सर्वाधिक महत्व भाग्य का ही है, इस कारण इस रेखा का महत्व सर्वाधिक है। इसे उर्ध्व तथा प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं। हाथ में जितना ही निर्दोष (जो हिल-मिल न हो), लालिमायुक्त यह रेखा होगी, वह व्यक्ति उतना ही भाग्यवान् होगा।

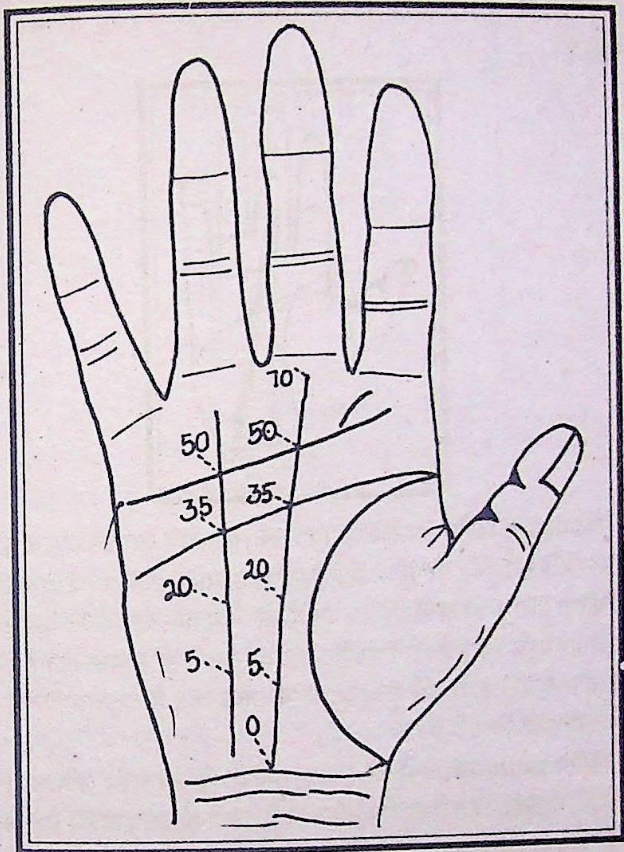
भाग्य रेखा मानव की क्षमताओं को इंगित करती है। धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, कीर्ति, अवरोध, शारीरिक मानसिक, दैविक आध्यात्मिक परलौकिक तथा भौतिक उन्नति का संकेत करती है।

भाग्य रेखा मुख्यतः 14 रूपों में हथेली में देखी जा सकती हैं--

1. मणिबंध रेखा से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है।
2. शुक्र पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर जाती है।
3. जीवन रेखा के अंतिम सिरे से निकलकर शनि तक जाती है।
4. राहु पर्वत से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है।
5. जीवन रेखा के मध्य से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है।
6. मंगल पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर समाप्त होती है।
7. मस्तिष्क रेखा से निकलकर शनि पर्वत तक जाती है।
8. चंद्र पर्वत से निकलकर शनि पर्वत तक जाती है।
9. हृदय रेखा से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है।
10. नेपच्यून पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है।
11. प्लूटो पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंच जाती है।
12. हर्षल रेखा से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है।
13. बुध रेखा मे निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है।
14. जीवन रेखा और मंगल रेखा के अंतिम सिरे तथा बुध रेखा के उद्गम स्थल से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है।

प्रथम प्रकारः--हथेली में केतु पर्वत या मणिबंध के पास से भाग्य रेखा शनि पर्वत पर पहुंचती है, तो इसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यदि यह रेखा गहरी, स्पष्ट और निर्दोष है तथा शनि पर्वत पर पहुंचती है, तो वह व्यक्ति अत्याधिक महत्वाकांक्षी होता है और उनकी पूर्ति भी करता है। ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है।

यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर दो भागों में विभक्त हो जाती है और उसकी एक शाखा शनि पर्वत पर तथा दूसरी गुरु पर्वत पर पहुंचती है तो ऐसा व्यक्ति असाधारण व्यक्तित्व का होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य परिवार में जन्म लेता है और विश्वव्यापी ख्याति अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति अत्याधिक देशभक्त, देश

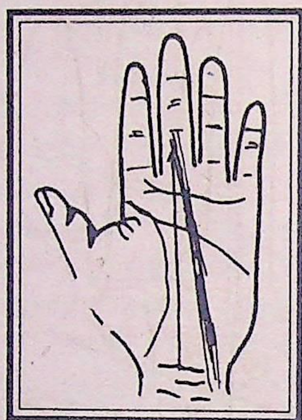


के प्रति अपना जीवन अर्पित करने वाले होते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, दानी, भावुक, सर्वप्रिय, अज्ञात शत्रु, परोपकारी, स्वतंत्रता प्रिय, दृढ़प्रतिज्ञ, विवेकशील होता है।

इस रेखा को यदि आड़ी रेखायें काटती हैं, तो उस काल में निःसंदेह प्रगति में अवरोध उत्पन्न होते हैं। अनेक बार इतने अधिक अवरोध होते हैं कि व्यक्ति अपने उद्देश्य से भी विचलित हो उठता है। रेखा शनि पर्वत तक ही श्रेष्ठ मानी जाती है।

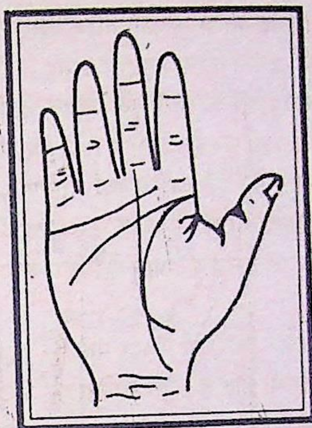
यदि मध्यमा उंगली पर या उसके किसी पोर को स्पर्श करती है तो वह व्यक्ति महत्वाकांक्षी तो होता है और कार्य पूर्ति हेतु प्रयत्न भी करता है, परंतु उसे अंतिम क्षण में सफलता ही मिलती है। जीवन पर्यन्त ऐसे व्यक्ति परेशान व दुःखी रहते

हैं। प्रतिभा होने पर भी अत्यंत सामान्य प्रगति कर पाते हैं। यह असफल जीवन ही जीते हैं।



यदि यह रेखा निर्दोष रूप से शनि पर्वत तक पहुंचती है और इसकी एक शाखा निकलकर यदि सूर्य पर्वत पर पहुंच जाती है, तो ऐसा व्यक्ति 26वें वर्ष से असाधारण प्रगति करना प्रारम्भ करता है और 38वें वर्ष की आयु तक वह व्यक्ति अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुंच जाता है। ऐसे व्यक्ति आर्थिक रूप से भी सम्पन्न होते हैं। कुछ ऐसे कार्य कर जाते हैं जिससे मृत्योपरान्त भी जाने जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को विश्वव्यापी कीर्ति मिलती है।

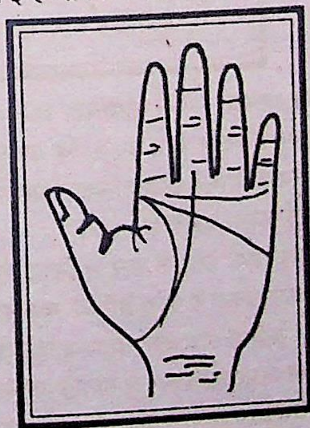
द्वितीय प्रकारः–हथेली में यह रेखा शुक्र पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। यह रेखा जितनी ही दोष-रहित होगी उतनी ही उत्तम होगी। यह जीवन रेखा को काटकर शनि पर्वत पर पहुंचती है अतः ऐसे व्यक्ति को जीवन में चार बार भीषण संकट का सामना करना पड़ता है। यदि यह जीवन रेखा को नहीं काटती है तो वह व्यक्ति अपनी कलाओं के माध्यम से असाधारण रूप में सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति का गोल चेहरे वाली, गौर वर्ण अति सुंदर कन्या से विवाह होता है। विवाह के पश्चात् ही भाग्योदय होता है। उसे केवल सुंदर-सुशील पत्नी ही नहीं मिलती अपितु ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन भी प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी आधुनिक वेशभूषा धारण करने वाली, आकर्षक व्यक्तित्व और समाज में विशेष सम्मान प्राप्त करने वाली होती है। ऐसे व्यक्तियों का यौवनकाल तो अत्यंत सुखद होता है परंतु वृद्धावस्था अत्यंत कष्टमय व्यतीत होती है। यदि मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ नहीं है तो दाम्पत्य जीवन भी कष्टमय रहता है। दैवयोग से भाग्य रेखा पर द्वीप का चिह्न है तो निश्चित रूप से पति-पत्नी में अलगाव होता है। चूंकि शुक्र पर्वत



से भाग्य रेखा का निकास होता है, इसलिए इनके जीवन में अनेक प्रेम-प्रसंग होते हैं। कई बार ऐसे लोगों का प्रेम विवाह भी होता है।

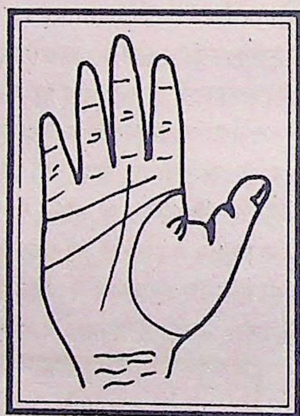
शुक्र पर्वत से निकलकर जीवन रेखा को काटती हुई यह रेखा शनि पर्वत को आती है तो जिस स्थान पर काटती है उस आयु पर भयंकर दुर्घटना का सामना अथवा आर्थिक रूप से इतनी हानि होती है कि वह आत्महत्या करने पर भी विवश हो जाता है। इस कारण से इस रेखा को श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता है।

तृतीय प्रकारः—यह रेखा जीवन रेखा के अंतिम भाग से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। हस्त-रेखा विज्ञान में इस रेखा को श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसे व्यक्ति पराक्रमी होते हैं। साहसी होते हुए भी जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन्हें जीवन में सफलतायें संघर्ष के पश्चात् प्राप्त होती



हैं। प्रगति के समय एक शक्ति इनकी अत्याधिक विरोध करती है। अनेक बार इन्हें असफलताओं का भी सामना करना पड़ता है। यदि निर्दोष जीवन रेखा शनि पर्वत पर पहुंचती है तो उस व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण व्यतीत होता है। अपने प्रयासों से अवश्य उन्नति करते हैं। 28 वर्ष की आयु से इन्हें सफलतायें मिलना प्रारम्भ हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति स्वतंत्र निर्णय लेने में असमर्थ होते हैं। स्वभाव से शंकालु एवं संकोची होते हैं। यदि भाग्य रेखा के साथ जीवन रेखा आपस में कहीं मिलती है, तो उस समय की आयु में विशेष रूप से परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

चतुर्थ प्रकारः–जिन हथेलियों में राहु पर्वत से भाग्य रेखा निकलती है, वह व्यक्ति अत्यंत भाग्यशाली होते हैं। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय 36वें वर्ष से होता है। शिक्षण कार्य में नाना प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस कारण ऐसे व्यक्ति उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। जीवन में 30 वर्ष के पश्चात्

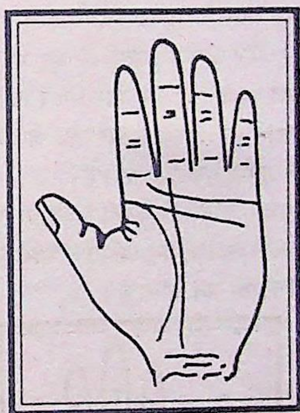


ही स्थिरता आती है। आर्थिक रूप से सम्पन्नता प्रारम्भ हो जाती है। 36 से 42 वर्ष के मध्य विशेष रूप से प्रगति करते हैं। जो कि उल्लेखनीय होती है। यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ जाये तो अत्यंत निकृष्ट हाथ हो जाता है और उसे जीवन में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

यदि यह रेखा मस्तिष्क रेखा के पास से निकलती है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ वैज्ञानिक या साहित्यकार बनता है परंतु आर्थिक रूप से सम्पन्नता उस समय भी नहीं रहती है। यदि इस रेखा के साथ कोई सहायक रेखा चल रही है तो ऐसा व्यक्ति 36 से 42 वर्ष के मध्य असाधारण रूप से ख्याति अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय रहता है और उसे अनेक प्रकार के कष्टों का सामना

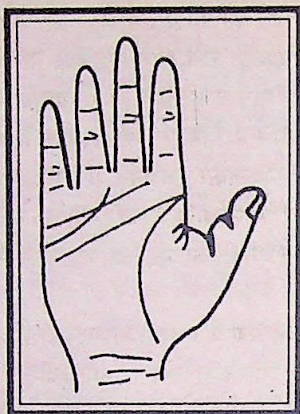
करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का 30 वर्ष के बाद का समय अत्यंत श्रेष्ठ व्यतीत होता है। उसके जीवन में ख्याति, धन, मान, पद, यश, प्रतिष्ठा, भौतिक सम्पन्नता आदि रहती है। यदि रेखा मार्ग में टूटती है तो भाग्योद्‌य में कठिनाइयां होती हैं। इस रेखा पर वृत्त का चिह्न सबसे निकृष्ट माना जाता है, वह दुर्भाग्य का सूचक है। यदि इससे कोई शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर जाती है तो वह व्यक्ति राजनीति में उच्च पद अथवा नौकरी में उच्च अधिकारी होने का सूचक है। यदि रेखा सूर्य पर्वत की ओर जाती है तो व्यक्ति व्यापार तथा राजनीति में असाधारण सफलता अर्जित करता है।

पंचम प्रकारः—जीवन रेखा के मध्य से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचने वाली इस रेखा को चमत्कारिक रेखा कहा जाय तो अतिश्योक्ति न होगी। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से संकोची, स्वतंत्र निर्णय लेने में अक्षम तथा प्रारम्भिक जीवन में किसी



के आश्रित अवश्य रहते हैं। परन्तु 28वें वर्ष में इनमें असाधारण परिवर्तन आता है और ये व्यक्ति परिश्रमी, क्रियाशील तथा साहसी हो जाते हैं। जिस कार्य में हाथ डालते हैं, सफलता इनके साथ चलती है। 38वें वर्ष से ये लोग ऐसी उन्नति करते हैं जिसकी इन्हें स्वयं कल्पना नहीं होती। यदि भाग्य रेखा पर आड़ी-तिरछी रेखायें हैं, तो उसे जीवन में अनेक बार दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ता है। यदि भाग्य रेखा द्विजिह्वाकार है तो भाग्योद्‌य में प्रबल रूप से सहायक होती है, जीवन-रेखा और भाग्य रेखा का पारस्परिक रूप से मिलना अशुभ होता है।

षष्ठ प्रकारः—मंगल पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचने वाली यह रेखा यदि निर्दोष है तो शुभ भाग्य रेखा कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति कितना भी परिश्रम करें, 36 वर्ष की आयु से पहले प्रगति नहीं कर पाते हैं। ऐसे व्यक्तियों के बाल्यकाल



में कष्टों का अम्बार लगा रहता है। परिश्रम करने के बाद भी शिक्षा में उल्लेखनीय सफलता नहीं मिलती है और अथक प्रयत्नों के बाद भी उच्चशिक्षा से वंचित रह जाते हैं। कुटुम्बियों तथा स्वजनों से प्रेम और आदर नहीं मिलता है। इस कारण ऐसे व्यक्ति कई बार गलत मार्ग का अनुसरण कर लेते हैं, एवं अपनी त्रुटियों के कारण समय-समय पर अपमानित होते रहते हैं।

उन्हें मित्रों का सहयोग तो मिलता ही नहीं। यदि इस रेखा के साथ कोई सहायक रेखा है तो वह व्यक्ति किसी सामर्थ्यवान व्यक्ति के माध्यम से प्रगति करता है और उस व्यक्ति का वह प्रिय पात्र बन जाता है।



ऐसे व्यक्ति पुलिस, सेना आदि विभागों में सफल देखे गये हैं व्यापार में गोला बारूद, ईटों का भट्टा, सीमेंट और विद्युत उपकरण के कार्यों में सफलता प्राप्त करते

हैं।

यदि यह रेखा मार्ग में टूटी है तो वह व्यक्ति परेशानियों को अपने साथ जोड़ लेता है। लहरदार या द्वीप का होना भाग्यहीनता का सूचक है।

सप्तम प्रकारः—यह मस्तिष्क रेखा से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है। यह रेखा बहुत कम हाथों में होती है। ऐसा व्यक्ति साधारण कुल में जन्म लेकर भी प्रगति के क्षितिज पर धूमकेतू की तरह चमकता है। सेठ घनश्याम दास बिड़ला तथा भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के हाथ में इस प्रकार की रेखा थी। यह जीवन में कोई ऐसा कार्य करते हैं, जिससे समाज तो प्रभावित होता ही है, देश को एक महत्वपूर्ण दिशा देने में समर्थ होते हैं। लक्ष्मी चिर-दासी है और सफलता इनकी सहयोगी।

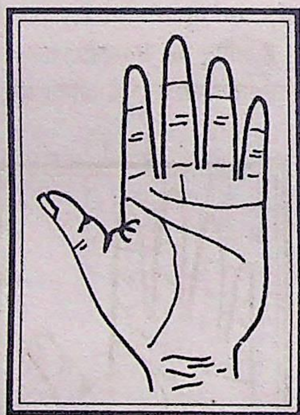
यदि यह रेखा अंतिम सिरे में द्विजिह्वीय हो जाती है, तो ऐसा व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है। जीवन मे अनेक भौतिक सुखों का उपभोग करता है। यदि एक शाखा शनि पर्वत पर तथा दूसरी गुरु पर्वत पर पहुंचती है तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से राजदूत या मंत्री पद प्राप्त करता है।

अष्ठम प्रकारः—यह चंद पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। इस प्रकार की भाग्य रेखा का उद्गम-स्थल चंद्र पर्वत होता है। इस रेखा को अत्यंत शुभ माना जाता है। यह रेखा शनि पर्वत पर पहुंचकर यदि कई भागों में विभाजित हो जाती है तो वह अत्यंत श्रेष्ठतम् फल देती है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहता है अपितु वह अतुलनीय धन का स्वामी बनता है, तथा जीवन में पूर्ण सफलता अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति की आय के कई साधन होते हैं।



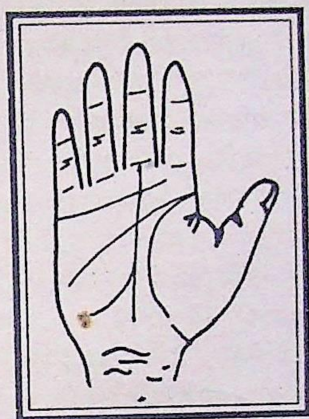
यदि इस रेखा की एक शाखा गुरु पर्वत पर पहुंचती है तो व्यक्ति कला और साहित्य के माध्यम से सम्मान तथा धन अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति भावुक, कोमल-स्वभाव, परोपकारी तथा निर्बलों की रक्षा करने वाला होता है। यदि इसकी कोई शाखा सूर्य पर्वत पर पहुंचती है, तो वह व्यक्ति राजनीति में विशेष सम्मान भी प्राप्त करते हैं। परिस्थितियानुसार धार्मिक और सामाजिक कार्यों में व्यय भी करते हैं। यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर पहुंच जाय तो उस व्यक्ति को जीवन के अंतिम चरण में आश्रित रहना पड़ता है। यदि यह रेखा टूटी हुई या दूषित है तो विरोधी योनि से बदनामी मिलती है। जिस हथेली में ऐसी रेखा होती है उनकी प्रगति में किसी नारी का योगदान रहता है। प्रायः विवाहोपरांत ही ऐसे व्यक्ति प्रगति करते हैं। इन्हें विदेश यात्रा भी प्राप्त होती है। यदि शुक्र पर्वत अत्याधिक उन्नत है तो ऐसे व्यक्ति चंचल व अस्थिर स्वभाव के तथा चरित्रहीन तक हो जाते हैं परंतु यदि गुरु पर्वत उभार लिऐ हुए शनि पर्वत की ओर झुका है तो ऐसे व्यक्तियों के दो विवाह होते हैं निश्चित रूप से उनका विवाह विजातीय स्त्री से प्रेम विवाह होता है। ऐसे व्यक्ति सहृदय, भावुक और मधुर स्वभाव के होते हैं।

नवम् प्रकारः–यह भाग्य रेखा हृदय रेखा से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। कुछ हथेलियों में यह रेखा शनि पर्वत पर अनेक भागों में विभक्त हो जाती है। यदि एक शाखा शनि, दूसरी सूर्य तथा तीसरी गुरु पर्वत पर पहुंच जाती है, तो ऐसा



व्यक्ति जीवन के 50 वर्ष के पश्चात् ही प्रगति करता है। वह व्यक्ति जिस कार्य में हाथ डालता है उसमें उसे सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति लाखों करोड़ों रुपये अर्जित करता है। परोपकारी तथा धार्मिक अधिक होता है। आय का एक हिस्सा वह धार्मिक कार्यों में व्यय करता है। इहलोक और परलोक सुधारने के सिद्धांत

को पूर्ण-रूपेण मान्यता प्रदान कर पालन करता है। यदि इस रेखा के प्रारम्भ में द्वीप का चिह्न है तो उसे जीवन में भयंकर बदनामी का सामना करना पड़ता है।



यदि यह रेखा टूटी और दोषपूर्ण है तो उसे जीवन में अनेक बार भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। आड़ी और तिरछी रेखायें संघर्ष कराती हैं। यदि इस रेखा के अंत में तारे का चिह्न है, तो व्यक्ति जीवन में असफलताओं से दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है। यदि रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ जाती है, तो उस व्यक्ति को जीवन भर असफलतायें मिलती हैं, तथा जीवन के अंतिम चरण में आर्थिक एवं शारीरिक रूप से वह व्यक्ति आश्रित होता है।

दशम प्रकारः–इस प्रकार की भाग्य रेखा नेपच्युन पर्वत से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है। प्रायः यह रेखा परतंत्र ही होती है। ऐसे व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन अत्यंत कष्टमय व्यतीत होता है, परंतु यह स्वतंत्र, स्पष्ट निर्दोष और गहरी रेखा है, तो ऐसे व्यक्ति का बचपन सुखमय व्यतीत होता है। ऐसे बालक स्वतंत्र विचारों के कुशाग्र बुद्धि होते हैं। यही समाज को एक नयी दिशा देते हैं, जिससे प्रारम्भ में यह उपेक्षा एवं उपहास के पात्र बनते हैं; सफलता मिलने पर समाज इनके साथ जुड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति सफल लेखक, कवि, दार्शनिक, वक्ता, न्यायाधीश तथा वकील होते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन असफल ही रहता है। यदि रेखा दोषपूर्ण एवं कटी-फटी है तो उन्हें जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

एकादश प्रकारः–इस प्रकार की भाग्य रेखा प्लूटो पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर जाती है। यह बहुत कम हाथों में दृष्टिगोचर होती है। लेकिन जिन हाथों में यह होती है वे व्यक्ति आश्चर्यजनक प्रगति करते हैं। ये लोग कुछ इस प्रकार

के कार्य करते हैं, जिससे संसार चकित हो उठता है। लक्ष्मी एवं स्थाई कीर्ति के ये अधिकारी होते हैं। यदि यह रेखा शनि पर्वत पर दो भागों में विभक्त हो और एक शाखा गुरु पर्वत की ओर जा रही हो तथा गुरु व सूर्य पर्वत उभार लिये हुये हैं तो ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के पद को प्राप्त करता है।

द्वादश प्रकारः—इस प्रकार की भाग्य रेखा हर्षल पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। ऐसे व्यक्ति, अधिकतर नौकरी करने वाले होते हैं। इनमें तकनीकी ज्ञान अधिक होता है। ऐसे व्यक्ति विज्ञान के माध्यम से देश में विख्यात होते हैं। अनेक बार इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त होते हैं। इस प्रकार की रेखा अणुवैज्ञानिक, पायलट, इंजीनियर एवं सेना के वैज्ञानिक, गुप्तचरों के हाथ में दिखाई देती है। इनमें साहस और धैर्य अत्याधिक होता है। युद्धकाल में भी ऐसे व्यक्ति विचलित नहीं होते हैं। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा मध्यमा उंगली को स्पर्श कर जाती है या चढ़ जाती है अथवा दोषपूर्ण है तो उसका जीवन विपत्तियों से घिरा रहता है एवं जीवन के अंतिम चरण में वह शारीरिक रूप से आश्रित रहता है। यदि रेखा निर्दोष और शनि पर्वत पर दो भागों में विभक्त हो जाती है, और उसकी एक शाखा गुरु पर्वत पर पहुंचती है तो ऐसा व्यक्ति असाधारण सफलता के अतिरिक्त अतुलनीय धनाधीश बनता है।

त्रयोदश प्रकारः—इस प्रकार की भाग्य रेखा बुध रेखा से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। यह रेखा भी कम पायी जाती है, लेकिन जिन हाथों में यह रेखा होती है, वह समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। प्रारम्भ में इनकी सामाजिक स्थिति अनुकूल नहीं होती है और ये बिना कुछ परवाह किये अपने उद्देश्य में लगे रहते हैं। सफलता इन्हें संघर्ष के पश्चात् ही मिलती है। तत्पश्चात् ऐसे पुरुष युगपुरुष के रूप में जाने जाते हैं। यह हृदय के अत्यंत कोमल, परोपकारी, दोनों के रक्षक होते हैं। अन्याय के विरुद्ध ऐसे व्यक्ति अपने मां-बाप के विरोध में भी खड़े हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति जन नेता, सफल भविष्यवक्ता, कवि साहित्यकार अथवा योगी होते हैं।

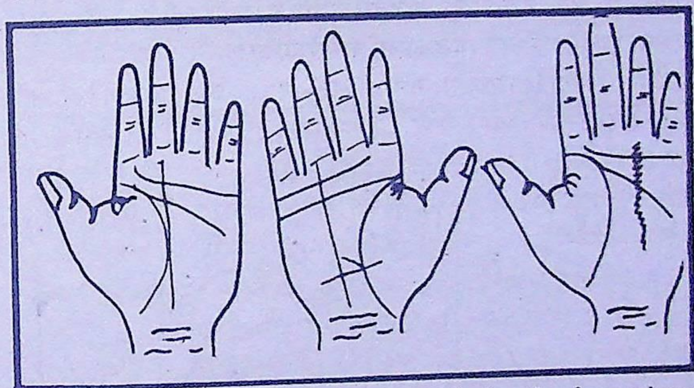
चतुर्दश प्रकारः—यह रेखा जीवन रेखा, मंगल रेखा के अंतिम सिरे तथा बुध रेखा के उद्गम-स्थल से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है। जिन हथेलियों में ऐसी रेखा होती है वे व्यक्ति महत्वाकांक्षी और शौकीन प्रवृत्ति के होते हैं, एवं प्रकृति से इन्हें लगाव रहता है। यह जीवन को सरसता के साथ जीते हैं। ऐसे लोगों में भावुकता के साथ-साथ साहस भी अधिक होता है। ये लोग आरामदायक जीवन जीते हैं, परंतु कठोर से कठोर श्रम करने में भी हिचकिचाते नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति कोमल हृदय के भावुक तथा परोपकारी होते हैं। इनमें एक खराबी होती है कि ये बहुत अच्छे मित्र और बहुत ही बुरे शत्रु होते हैं, शत्रु को नष्ट करके ही चैन लेते

हैं। आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित होते हैं।

भाग्य रेखा पर विशिष्ट जानकारियां:

1. यदि भाग्य रेखा और पर्वत सूर्य के मध्य निर्दोष समाप्त होती है तथा सूर्य पर्वत उभार लिये है, तो ऐसा व्यक्ति चलचित्र जगत में सफलता प्राप्त करता है।

2. यदि भाग्य रेखा के उद्गम-स्थल में शुक्र पर्वत से कोई रेखा आकर जुड़ती है तो उस व्यक्ति की प्रगति विपरीत योनि के माध्यम से होती है। यदि भाग्य रेखा के उद्गम-स्थल पर कई रेखाएं निकलती हैं तो ऐसे व्यक्ति का जन्म स्थान छूट जाता है। उसका भाग्योद्रय विदेश में होता है।



3. भाग्य रेखा का उद्गम-स्थल मस्तिष्क रेखा से है और शनि पर्वत पर पहुंचकर अनेक भागों में विभक्त होकर सूर्य, बुध और गुरु पर्वत पर पहुंचती है, तो ऐसा व्यक्ति विश्वख्याति प्राप्त करता है। यदि भाग्य रेखा लाल रंग की है तो उस व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

4. यदि भाग्य रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ जाती है, तो उस व्यक्ति को जीवन के अंतिम चरण में आश्रित रहना पड़ता है।

5. यदि भाग्य रेखा लाल रंग की है और मध्यमा उंगली के प्रथम पोर को स्पर्श कर लेती है, तो ऐसे व्यक्ति की अस्वाभाविक मृत्यु होती है।

6. यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा को पार करते समय जंजीरेदार बन जाती है तो व्यक्ति अतृप्त रहता है।

7. यदि भाग्य रेखा जंजीरेदार तथा लहरदार है, तो उस व्यक्ति को अत्यंत दुःखी जीवन जीना पड़ता है।

8. यदि हथेली के मध्य में यह रेखा नगण्य अथवा हल्की है तो उस व्यक्ति का यौवनकाल क्लेश में कटता है।

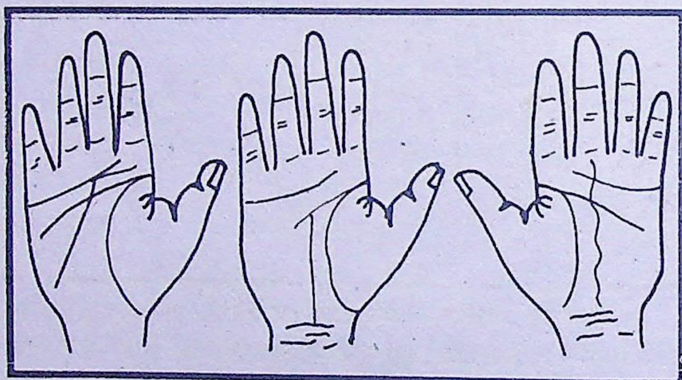
9. जिस हथेली में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखा चलती है तो वह व्यक्ति सम्मानित जीवन जीता है।

10. जिस हथेली में भाग्य रेखा नहीं होती है, वह व्यक्ति कर्म पर अधिक आस्था रखता है, तथा सामान्य जीवन जीता है।

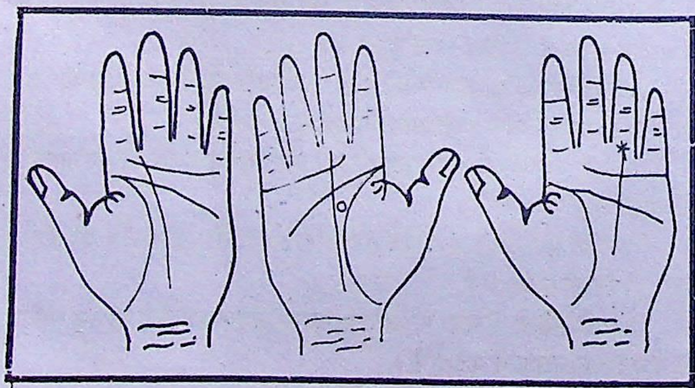
11. भाग्य रेखा से निकलकर कोई शाखा जिस पर्वत पर पहुंचती है उस पर्वत के विशेष गुण उस व्यक्ति में आ जाते हैं।

12. यदि भाग्य रेखा अचानक रुक जाय तथा कोइ अन्य रेखा भी उससे आगे न बढ़ रही हो तो उस आयु विशेष में क्रांतिकारी परिर्वतन आता है।

13. यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ में दोषपूर्ण है तो उसका प्रारम्भिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है।



14. हथेली में जिन-जिन स्थानों में भाग्य रेखा टूटती है, आय के उस भाग में विशेष कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं।



15. यदि भाग्य रेखा मणिबंध रेखा से निकलकर मध्यमा उंगली पर चढ़ जाय तो ऐसी रेखा भले ही निर्दोष हो परंतु व्यक्ति को आश्रित जीवन जीना पड़ता है।

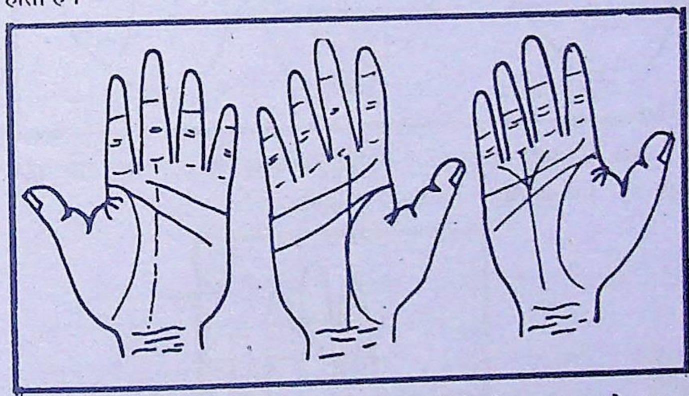
16. यदि भाग्य रेखा कलाई के किसी हिस्से से निकलती है। तो उसे सम्पूर्ण जीवन दरिद्रता का निर्वाह करना पड़ता है।

17. यदि चंद्र पर्वत से भाग्य रेखा निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है, तो ऐसे व्यक्ति को विदेश यात्रा मिलती है।

18. यदि भाग्य रेखा चंद्र पर्वत से निकलती है, तथा शनि पर्वत पर त्रिभुज का चिह्न है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ भविष्यवक्ता, तांत्रिक बनता है।

19. यदि भाग्य रेखा के उद्गम-स्थल पर त्रिभुज का चिह्न है तो वह व्यक्ति अपनी प्रतिभा के बल से असाधारण प्रगति करता है।

20. भाग्य रेखा से जितनी रेखाएं ऊपर निकलती हैं, उतनी ही प्रगति में सहायक होती हैं।



21. यदि भाग्य रेखा समान रेखा से निकलती है और उस पर अनेक स्थान पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों तो उस व्यक्ति को 50 वर्ष की आयु के बाद ही सफलतायें प्राप्त होती हैं।

22. यदि भाग्य रेखा के अंतिम सिरे पर वृत्त का चिह्न है तो उसे अत्याधिक संघर्षों के पश्चात् सफलता मिलती है।

23. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क के पास आकर समाप्त हो जाती है तो उसे जीवन में अनेक बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

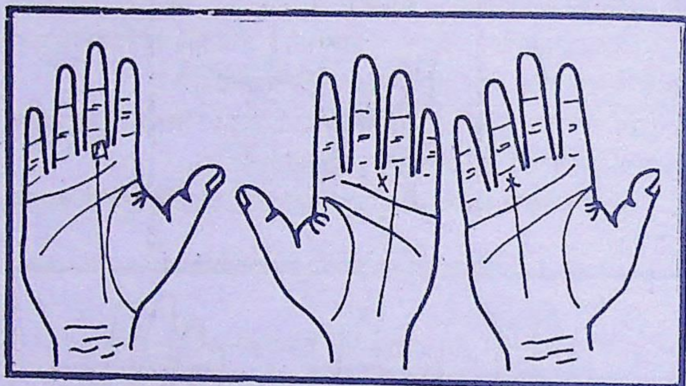
24. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर नक्षत्र का चिह्न है तो उसकी वृद्धावस्था अत्यंत कष्टमय व्यतीत होती है।

25. यदि भाग्य रेखा के अंत में क्रास या जाली का चिह्न है तो उस व्यक्ति

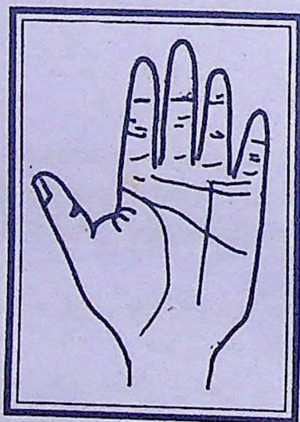
की अस्वाभाविक मृत्यु होती है।

26. यदि भाग्य रेखा के अंत में चतुर्भुज का चिह्न है तो वह व्यक्ति अध्यात्म के क्षेत्र में विशेष प्रगति करता है।

27. यदि भाग्य रेखा में विवाह रेखा आकर मिलती है तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यंत नारकीय व्यतीत होता है।

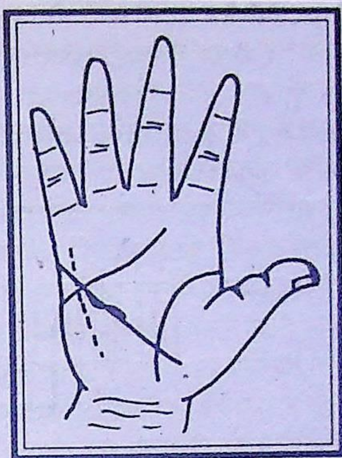


28. यदि भाग्य रेखा पर (+) का चिह्न हो तो वह शुभ फलकारक होगा परंतु क्रास और द्वीप का चिह्न है तो अशुभ फलदायक होगा।



29. भाग्य रेखा से निकलकर ऊपर जाने वाली समृद्धि सूचक तथा नीचे जाने वाली शाखा आर्थिक हानि की सूचक होती है।

स्वास्थ्य रेखाः– इस रेखा के सम्बन्ध में हस्त-रेखा शास्त्रियों में विवाद है कि स्वास्थ्य रेखा करतल के किस भाग से आरम्भ होती है? अपने पच्चीस वर्ष के



स्वास्थ्य रेखा

व्यावहारिक आधार पर कीरो ने यह मत प्रकट किया है, कि स्वास्थ्य रेखा छोटी उंगली के मूल से या बुध क्षेत्र पर से आरम्भ होकर जीवन रेखा पर आक्रमण करती है। ज्यों-ज्यों वह नीचे की ओर बढ़ती जाती है। वह स्वास्थ्य के सम्बंध में सूचना देती है, और यदि वह जीवन रेखा से मिल जाये तो अपने उत्कर्ष पर पहुंच जाती है।

जीवन रेखा जन्मजात और स्वाभाविक कारणों से जातक के जीवन की अवधि की सूचक है, परंतु स्वास्थ्य रेखा इस बात की परिचायक है कि जिस प्रकार का जीवन जातक ने व्यतीत किया है उसका उस पर क्या प्रभाव पड़ा है? जब स्वास्थ्य रेखा और जीवन् रेखा आपस में मिल जाएं तो मिलन का समय जातक की मृत्यु का समय होगा, चाहे जीवन रेखा उस मिलन के स्थान से आगे क्यों न बढ़ गई हो।

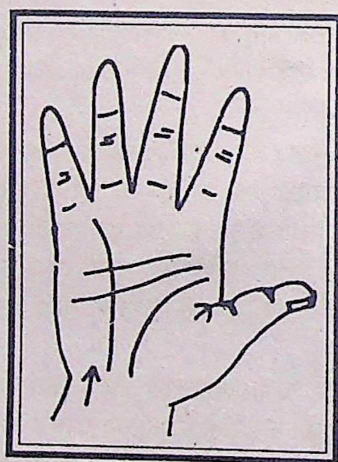
स्वास्थ्य रेखा का सम्बंध स्नायुमंडल और मस्तिष्क दोनों से है। इसी कारण इस रेखा की बनावट और परिवर्तनों से पता लग जाता है कि जातक के आने वाले वर्ष कैसे व्यतीत होंगे? करतल में स्वास्थ्य रेखा ही एक ऐसी रेखा है, जिसमें सबसे अधिक परिवर्तन होते रहते हैं। यह एक थर्मामीटर के समान है, और जीवन के उतार-चढ़ाव बताती रहती है। जब जीवन के आरम्भिक दिनों में जातक का स्वास्थ्य खराब होता है, और शरीर निर्बल होता है, तो यह रेखा बहुत गहरी दिखाई देती है।

जब जातक का स्वास्थ्य सुधर जाता है, और उसका शरीर सबल हो जाता है, तो यह रेखा अंतर्ध्यान हो जाती है। ऐसा भी देखा गया है, जब स्नायुमंडल में

निबलता आ जाता है, तो यह रेखा अधिक गहरी और खतरनाक दिखाई देती है। हाथ में स्वास्थ्य रेखा का न होना एक अत्यन्त शुभ चिह्न माना जाता है। जिस जातक के हाथ में स्वास्थ्य रेखा नहीं होती उसका शरीर स्वस्थ रहता है और उसका स्नायुमंडल सबल होता है यदि हाथ में स्वास्थ्य रेखा हो तो उसकी सबसे अधिक शुभ स्थिति बुध क्षेत्र से सीधे नीचे की ओर है। यदि वह जीवन रेखा की ओर जाये, उससे मिले या उसकी शाखायें जीवन रेखा को काटें तो यह समझना चाहिए कि जातक के शरीर में कोई रोग है जो उसके स्वास्थ्य को दिन प्रतिदिन बिगाड़ता जा रहा है।

यदि स्वास्थ्य रेखा एक शाखा के समान हृदय रेखा से आरम्भ हो, हृदय रेखा और स्वास्थ्य रेखा दोनों देखने में चोड़ी हों, और स्वास्थ्य रेखा नीचे जाकर जीवन रेखा से मिल जाये, तो यह योग इस बात का निश्चित सूचक है, कि जातक का हृदय निर्बल है या उसे हृदय रोग है। स्वास्थ्य रेखा द्वारा यह जानने के लिए कि रोग कैसा है? नाखूनों की परीक्षा आवश्यक है।

जब नाखून छोटे व गोल हों और उनमें चंद्रमान हों और स्वास्थ्य रेखा गहरी बनी हो तो जातक को निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि उसका हृदय स्वस्थ नहीं है।



स्वास्थ्य रेखा

यदि नाखून लम्बे और बादाम के समान हों तो फेफड़ों की खराबी या कमजोरी की सम्भावना होती है। यदि नाखून इसी प्रकार के हों और स्वास्थ्य रेखा के ऊपरी भाग में द्वीप चिह्न हों तो क्षय रोग होने की पूरी सम्भावना होती है।

यदि नाखून सपाट हों और सीप के आकार के हों और साथ में स्वास्थ्य रेखा

गहरी बनी हो तो लकवा रोग होने की सम्भावना रहती है। यदि स्वास्थ्य रेखा पर लाल धब्बे हों तो वात ज्वर की सम्भावना होती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा सीधी नीचे की ओर जाये, पर जीवन रेखा को स्पर्श न करे तो यह समझना चाहिए कि जातक का शरीर बिल्कुल सबल न होगा, परंतु उसमें बीमारी का सामना करने की क्षमता होगी।

यदि स्वास्थ्य रेखा टेढ़ी-मेढ़ी अति चकित और पीले रंग की हो तो पित्तजनित रोगों के होने या जिगर की खराबी होने की सम्भावना होती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा गहरी बनी हो और हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा को जोड़ती हो तो 'ब्रेन फीवर' होने की सम्भावना होती है। यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप चिह्न भी हों तो बीमारी होना निश्चित है।

स्वास्थ्य रेखा की परीक्षा करते समय अन्य रेखाओं-विशेषकर जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

बुध रेखा का प्रारम्भः

1. शुक्र पर्वत से
2. मंगल पर्वत से
3. चंद्र पर्वत से
4. जीवन रेखा के पास से
5. हृदय रेखा से
6. मणिबंध से
7. भाग्य रेखा से

यदि स्वास्थ्य रेखा अधिक स्पष्ट, दोषरहित व गहरी होगी, तत्संबंधी व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही उत्तम-श्रेष्ठ व शुभ होगा। आकर्षक व्यक्तित्व, कांतिमान चेहरा, बलिष्ठ देह, सुगठित कद, प्रभावोत्पादक पर टूटी, कमजोर दोषी स्वास्थ्य रेखा हो या लहरदार या जंजीरेदार हो तो व्यक्ति कमजोर, रोगी, अनाकर्षक होगा।

आयु रेखा से स्वास्थ्य रेखा ज्यादा स्पष्ट हो, तो मनुष्य हर समय मृत्यु भय से चिंतित रहता है।

स्वास्थ्य रेखा यदि हाथ में न हो तो विचार करने, चिंता करने या परेशान होने की आवश्यकता नहीं। यह एक शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति सुंदर, आकर्षक, शक्तिशाली व स्वस्थ होंगे।

जहां चौड़ी स्वास्थ्य रेखा स्वास्थ्य में न्यूनता देती है; वहीं जंजीरदार रेखा उदर रोग कारक, लहरदार जिगर रोगकारक पीलापन लिए स्वास्थ्य रेखा, पीलिया रोगी या रक्त दोष से अस्वस्थ होंगे। कई जगहों से कटी स्वास्थ्य रेखा आजीवन रोगग्रस्त

रखती है।

उत्तम स्वास्थ्य रेखा के साथ धन रेखा या सूर्य रेखा सुंदर उठी हुई हो तो व्यक्ति आजीवन सुखी, स्वस्थ, सम्पन्न, सभी कार्यों में सफल रहता है।

स्वास्थ्य रेखा पर गुणा का निशान जन्म रोगी बनाने का संकेत देता है।

कई बार हथेली के मध्य में जाकर इसकी कोई शाखा सूर्य पर्वत की ओर चली गई हो और मुख्य स्वास्थ्य रेखा स्वयं सीधी हथेली में ऊपर तक चली जाती है, ऐसी रेखा ज्यों-ज्यों ऊपर को चढ़ती है, अधिक गहरी व लाल होती जाती है, इस प्रकार की रेखा को समझने के लिए अन्य चिह्नों पर भी ध्यान दें। इन लोगों का स्वास्थ्य अवस्था बढ़ने के साथ-साथ खराब होता जाता है। उसके अंदर सर्वप्रिय होने व दूसरों से सम्मान पाने की इच्छा भी लगातार बढ़ती जाती है। नाम व यश पाने की प्रबल इच्छा रहती है। ये स्वास्थ्य से निर्बल होकर भी प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा बारीक बाल के सदृश्य पतली व सीधी हो तो जातक बड़ा निर्दयी होगा।

चौड़ी व सफेद रंग की स्वास्थ्य रेखायें अजीर्ण, अपच, गैस सम्बंधी रोग पैदा करने की सूचक हैं।

आरी के दांतों के समान स्वास्थ्य रेखा हो तो व्यक्ति अपने जीवन में विश्वासघाती होगा, उसे फेफड़ों का रोग, पित्त दोष आदि रोग निरंतर परेशान करते रहेंगे।

स्वास्थ्य व भाग्य रेखा के मिलने से यदि मस्तक रेखा के नीचे त्रिकोण बना हो तो मनुष्य यशस्वी, दीर्घदर्शी, शास्त्रज्ञ होगा। वह मीमांसक होगा।

त्रिशूल को ऐश्वर्य का प्रतीक माना गया है। खंडित त्रिशूल धोखा देने या खाने का प्रतीक है। इनके कार्य बनते-बनते बिगड़ जायेंगे तथा जय पराजय में बदल जायेगी।

स्वास्थ्य रेखा जहां टूटी हो, वहां वर्ग बना हो, तो यह लक्षण टूट के दोष को समाप्त करने में सहायक है, पर यदि यह वर्ग भी टूटा हो तो रोग का खतरा और ज्यादा बढ़ जाता है।

खंडित स्वास्थ्य रेखा यकृत व उदर रोग होने की परिचायक है। इसके साथ ही यदि सूक्ष्म रेखाओं का गुच्छा हो, तो जातक क्रोधी व चिड़चिड़े स्वभाव का होगा। जिगर उसका अवश्य खराब होगा।

हथेली के मध्य से उत्पन्न स्वास्थ्य रेखा वाला व्यक्ति बुद्धिमान, वाकपटु स्वकार्य दक्ष मेधावी, स्वस्थ, चंचल, प्रकृति-प्रेमी होगा।

स्वास्थ्य रेखा से लगातार त्रिकोण हो व त्रिकोण के मध्य त्रिशूल हो तो अत्यंत

श्रेष्ठ लक्षण समझें। ऐसा व्यक्ति वीर, सौभाग्यवान्, धर्मज्ञ होगा।

जिस हाथ में स्वास्थ्य रेखा न हो पर उस स्थान पर कुछ छोटी व पतली लकीरें सी हों तो भी उदर-व्याधि, यकृत दोष होता है।

इस रेखा के किसी भाग पर श्रृंखला बनी हो और शेष भाग सुंदर व श्रेष्ठ भी हो तो श्रृंखला वाले आयु भाग पर मानसिक विकार उत्पन्न हो जायेगा। इसके साथ ही यदि शीर्ष रेखा पर भी उसी अनुमान पर द्वीप हो तो और भी अशुभता देता है।

स्वास्थ्य रेखा को कहीं कोई एक या अधिक आड़ी रेखायें काटती हों तो यह गम्भीर रोग की ओर संकेत करती हैं। द्वीप क्रास या बिंदु भी गम्भीर रोग के परिचायक हैं।

जीवन रेखा व स्वास्थ्य रेखा एक ही आयु स्थान पर जाकर दोषी हो गई हों, तो जीवन को संकट में समझा जाना चाहिए।

रेखा चलते-चलते धीमी होते-होते लुप्त हो गई है, तो गम्भीर परिणाम समझें, परंतु बुध पर्वत पर पुनः उजागर हो गई हो तो गम्भीर रोग से व्यक्ति उबर जाता है।

स्वास्थ्य रेखा पर यव चिह्न निद्रा में जागने-बड़बड़ाने का रोग देता है। उसे प्रायः प्रवास व पर्यटन के ही स्वप्न दिखाई देते हैं।

स्वास्थ्य रेखा जहां हृदय रेखा से मिलती है। उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र रेखा कहीं जंजीर या क्रास धन-संकट, व्यापार-नाश के कारक हैं।

रेखा से लगा चतुर्भुज, क्रास हो, साथ ही उंगलियां नर्म हों तथा प्रथम पर्व लम्बे व सुविकसित हों तो व्यक्ति दानी, धर्मात्मा, परोपकारी होगा।

यदि स्वास्थ्य रेखा में छोटे-छोटे द्वीप दिखाई दें, नाखून लंबे हों तो छाती कमजोर होगी और वे फेफड़ों के रोगों के चिह्न हैं, यदि नाखून चौड़े होंगे तो गले के रोग से व्यक्ति परेशान होगा।

स्वास्थ्य-भाग्य और मस्तिष्क रेखा से मिलकर त्रिभुज बना हो, तो मनुष्य तांत्रिक दक्ष, कार्य के महत्व के समक्ष अपने प्राणों तक की परवाह नहीं करता है।

स्वास्थ्य रेखा यदि चक्कर खाकर चंद्र पर्वत पर चली गई हो, तो व्यक्ति सदैव रोग ग्रस्त व चिंतित रहेगा।

रेखा पर तारक चिह्न आसन्न खतरे उत्पन्न करते हैं। रेखा के अंत में तारक साथ ही चंद्र पर्वत पर भी तारक चिह्न हो, तो व्यक्ति आत्महत्या का बार-बार असफल प्रयास करता है।

स्वास्थ्य रेखा के अंत में तारक, दोनों हाथों में जीवन रेखा के अंत पर तारक

चिह्न पक्षाघात जैसे रोग देता है।

मस्तक रेखा के मध्य भाग से शुरू होकर दोनों रेखाओं को मिला रही हो तो व्यक्ति मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाता है।

स्वास्थ्य रेखा यदि कई रंगों की हो, तो पक्षाघात का खतरा बढ़ जाता है।

शुक्र पर्वत व हृदय रेखा के मध्य में शाखापुंज में समाप्त होने वाली बहुत तंग व गहरे रंग की, साथ में ऐसी ही जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा पर धब्बे ज्वर की प्रवृत्ति बनाते हैं।

सूर्य की ओर जाती स्वास्थ्य रेखा में पूर्ण व पुष्ट मणिबंध धन-धान्य सम्पन्नता देती है।

चंद्र से निम्न मंगल की ओर अर्धवृत्त बनाती हुई स्वास्थ्य रेखा अन्तः दृष्टि बनाती है।

यह रेखा जीवन रेखा की अपेक्षा हथेली के मध्य भाग से शुरू हो तो आरोप, यश व व्यापार में सफलता का परिचय देती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा चंद्र पर्वत से होते हुए हथेली के किनारे-किनारे चलकर बुध तक पहुंचती हो, तो वह अपने जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

इस रेखा व मस्तिष्क रेखा पर बने धब्बे व्यक्ति को जीवन भर रोगी रखते हैं।

स्वास्थ्य रेखा के अंत पर चतुर्भुज व्यक्ति को दमे का रोगी बनाता है। कमजोर स्वास्थ्य रेखा कठोर उंगलियां हों तो व्यक्ति लकवे का रोगी रहता है।

चंद्र रेखा आकर, स्वास्थ्य रेखा से मिल जाये तो व्यक्ति काव्य-प्रेणता होता है। विदेशाटन करता है।

हथेली के अंदर धंसी हुई स्वास्थ्य रेखा गुप्त रोग देती है। दोहरी स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को भी स्पर्श करती हो, तो वह व्यक्ति राजनीति में खूब सफल होता है।

स्वास्थ्य रेखा न हो पर बुध क्षेत्र समुन्नत हो तो जातक जिंदादिल, खुश-मिजाज होता है।

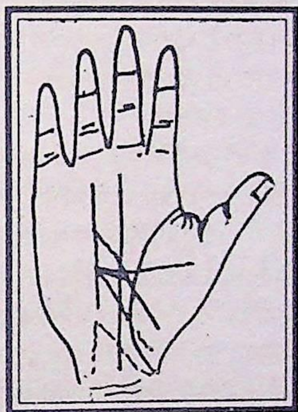
जीवन रेखा के साथ बिल्कुल जुड़ी हुई, परंतु टेढ़ी-मेढ़ी साथ में जीवन रेखा पर लाल व नीले धब्बे हृदय रोग के कारक बनते हैं।

शुक्र पर्वत में से उदित, लहरदार व लम्बी स्वास्थ्य रेखा कामुकता प्रदान करती है।

स्वास्थ्य रेखा से कोई रेखा—रेखाएं सूर्य की ओर जाएं, तो वह व्यापार में परिवर्तन करता है।

स्वास्थ्य रेखा के ऊपरी भाग में क्रास साथ ही मस्तिष्क रेखा पर वृत्त हो तो व्यक्ति अंधा होता है।

सूर्य रेखाः– सूर्य रेखा हाथ में अत्यंत प्रभावशाली मानी जाती है। इसको 'सफलता रेखा' या 'प्रतिभा रेखा' भी कहते हैं। जैसे सूर्य पृथ्वी पर प्रकाश फैलाता है। उसी प्रकार सूर्य रेखा भी हाथ में आशा प्रतिभा और सफलता की प्रतीक है! यदि हाथ में सूर्य न हो तो, जातक का जीवन बिना प्रकाश का होता है, वह वास्तविक सफलता से वंचित रह जाता है।



बहुत से लोग हाथ में केवल अच्छी भाग्य रेखा को देखकर यह फलादेश कर देते हैं कि जातक का जीवन सौभाग्य और सफलता से पूर्ण होगा परंतु ऐसा परिणाम निकालना उचित नहीं। अकेली भाग्य रेखा चाहे वह कितनी ही अच्छी हो, शुभफल नहीं प्रदान करती। वह सौभाग्य और सफलता तभी देती है, जब उसका साथ करने के लिए सुस्पष्ट सूर्य रेखा भी हो वास्तव में सौभाग्य देने का गुण सूर्य रेखा में होता है। यदि सूर्य रेखा करतल में स्पष्ट रूप से अंकित हो तो भाग्य रेखा या मस्तिष्क रेखा के निर्बल होने पर भी जातक को सफलता प्राप्त होती है। सुस्पष्ट सूर्य रेखा वाले हाथ के स्वामियों में अधिक आकर्षण शक्ति होती है, और अन्य लोग सरलता से उनके प्रभाव में आ जाते हैं। धन और संतान का पुरस्कार प्राप्त करने में उन्हे कठिनाई नहीं होती। वे खुशमिजाज और आशावादी होते हैं, और यही कारण है कि सफलता प्राप्त करना उनके लिए कठिन कार्य नहीं होता है।

जिस समय हाथ में सूर्य रेखा दिखाई देने लगती है, उसी समय से जीवन में खुशहाली आनी आरम्भ हो जाती है।

सूर्य रेखा निम्नलिखित स्थानों से आरम्भ हो सकती है–

1. जीवन रेखा से

2. भाग्य रेखा से

3. मंगल के मैदान से

4. चंद्र क्षेत्र से

5. मस्तिष्क रेखा से

6. हृदय रेखा से

7. सूर्य क्षेत्र पर वह एक स्वतंत्र रेखा के रूप में भी उभर सकती है। यदि सूर्य रेखा जीवन रेखा से आरम्भ होती हो तो जिस तरह का जीवन व्यतीत हो रहा हो, उसमें सफलता प्राप्त होती है। उसमें सौभाग्य का हाथ नहीं होता है। यदि सूर्य रेखा भाग्य रेखा से आरम्भ हो तो जो जीवन वृत्त हो उसमें जातक को अपने परिश्रम और प्रयत्नों से सफलता प्राप्त होती है।

यदि बिना किसी अन्य रेखा से मिले हुए, सूर्य रेखा मंगल के मैदान से आरम्भ होती है, तो जातक को संघर्ष और कठिनाइयों के पश्चात् सफलता दूसरों की सहायता और सहयोग से प्राप्त होती है। इस परिस्थिति में सफलता निश्चित नहीं होती और जातक का जीवन परिवर्तनशील होता है, ऐसी रेखा से उन लोगों को ही सफलता मिलती है जिन्हें जन सहयोग प्राप्त हो जैसे सामाजिक या राजनैतिक नेता, अभिनेता और अभिनेत्रियां, संगीतकार, कलाकार आदि। इस प्रकार के लोगों के हाथ में सूर्य रेखा का चंद्र क्षेत्र से आरम्भ होना अत्यंत सौभाग्य सूचक चिह्न माना जाता है।

यदि सूर्य रेखा मस्तिष्क रेखा से आरम्भ हो तो जातक को सफलता मानसिक प्रयत्नों और मस्तिष्क के गुणों द्वारा प्राप्त होती है। ऐसी सफलता जीवन के मध्य में प्राप्त होनी प्रारम्भ होती है (लगभग 35 वर्ष की अवस्था के बाद)। ऐसी रेखा मस्तिष्क से काम करने वालों, लेखकों, वैज्ञानिकों, शोध कार्य करने वालों आदि के हाथ में पाई जाती है। यदि सूर्य रेखा हृदय रेखा से आरम्भ हो तो सफलता प्रेम की गतिविधियों द्वारा प्राप्त होती है। यह सफलता जीवन के अंतिम भाग में (लगभग 50 वर्ष के पश्चात्) प्राप्त होती है। ऐसी रेखा प्रौढ़ावस्था के बाद अत्यंत सुखी वैवाहिक जीवन की भी परिचायक होती है। जिसके हाथ में इस प्रकार की रेखा होती है, उनकी वृद्धावस्था अत्यंत आनंदपूर्वक व्यतीत होती है। उनको सब प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं।

यदि सूर्य रेखा हृदय रेखा से ऊपर सूर्य क्षेत्र पर अंकित हो तो वह सुख और सफलता जीवन में इतने बिलम्ब से देती है कि उसका कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

जब सूर्य की उंगली (तीसरी उंगली अनामिका) पहली उंगली से बड़ी हो तो

जातक में जुये के लिए तीव्र प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। यदि सूर्य रेखा सुस्पष्ट हो तो जातक को जुये में सफलता मिलती है और उससे धन-लाभ होता है परंतु यदि पहली उंगली तीसरी उंगली के बराबर हो तो जातक में यही धुन होगी कि धनी होते हुए भी और धन संग्रह करता जाये। यदि तीसरी उंगली बहुत लम्बी हो और टेढ़ी-मेढ़ी हो तो जातक किसी भी उपाय से चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो, धन प्राप्त करने का प्रयत्न करता है यह अशुभ बनावट के लिए भयानक से भयानक कार्य कर सकते हैं। यदि मस्तिष्क रेखा करतल में बहुत ऊंचे पर हो और अंत में ऊपर की ओर मुड़ गई हो तो यह अवगुण और भी बढ़ जाते हैं।

यदि हाथ कुछ नुकीली बनावट का हो और उंगलियां नुकीली या लम्बी या संकीर्ण हों तो ऐसे हाथ में सूर्य रेखा इस बात की परिचायक होती है कि जातक कला, नाटक या संगीत के क्षेत्र में प्रतिभाशाली बनेगा।

बहुत नुकीली उंगलियों और पतले कोमल हाथों में सूर्य रेखा किसी भौतिक सफलता की सूचक नहीं होती है। ऐसे हाथों के स्वामी इतने आदर्शवादी होते हैं। कि उनको धन, सम्मान या सांसारिक सफलता की कोई परवाह नहीं होती। यदि उनके हाथ में सूर्य रेखा होती है तो उन पर केवल यह प्रभाव पड़ता है कि वे अत्यंत खुशमिजाज और आशावादी और चिंता रहित बन जाते हैं। वे तो स्वप्न में विचरने वाले होग होते हैं। सूर्य रेखा उनके स्वप्नों को और सुनहरा बना देती है।

जिनके हाथों में सूर्य रेखा होती है वे अपने चारों ओर के वातावरण के सम्बंध में अत्यंत अचेतन होते हैं। वे गंदे या घुटन उत्पन्न करने वाले वातावरण को पसंद नहीं करते। इसलिए यह रेखा कला प्रिय स्वभाव की परिचायक मानी जाती है। सूर्य रेखा वाले जातकों को वही वातावरण वही वस्तु प्रिय होती है जो देखने में सुंदर हो। जिनके हाथ में सूर्य रेखा नहीं होती उनका ऐसी बातों की ओर ध्यान भी नहीं जाता है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि उनके उठने-बैठने के कमरे में सजावट कायदे की है या नहीं, पर्दों और कालीन के रंग अन्य सजावट के अनुकूल हैं या नहीं?

जब सूर्य क्षेत्र पर बहुत सी रेखायें होती हैं तो वे जातक के कलाप्रिय होने की द्योतक हैं। परंतु अनेक रेखाओं के होने से विचारधारा अनेक श्रोतों में बह जाती है और इस कारण से सफलता की संभावना नहीं रहती।

यदि दो-तीन समानांतर सूर्य रेखाएं हों तो शुभ मानी जाती हैं और दो तीन प्रकार के कार्यों में सफलता की परिचायक होती हैं, परंतु एक ही अच्छी सीधी और सुस्पष्ट रेखा सर्वोत्तम मानी जाती है।

सूर्य रेखा पर द्वीप का चिह्न मिलने वाली प्रतिष्ठा और सफलता को नष्ट करता है, परंतु यह अशुभ प्रभाव उसी अवधि तक रहता है जब तक द्वीप बना रहे। ऐसी परिस्थिति में जातक को सार्वजनिक रूप से असम्मान सहन करना पड़ता है।

सब प्रतियोगी रेखायें जो अंगूठे की ओर से विशेषकर मंगल क्षेत्र से निकलकर सूर्य रेखा में मिलती हैं, या उसको काटती हैं, अशुभ फलदायक होती हैं। वह इस बात की परिचायक हैं कि जातक के प्रतियोगी या विरोधी उसकी सफलता के रास्ते में विघ्न उपस्थित कर रहे हैं। यदि प्रतियोगी रेखायें मंगल क्षेत्र से आएं तो विरोधी जातक के लिंग का ही व्यक्ति होता है। यदि प्रतियोगी रेखा शुक्र से आये तो विरोधी परलिंग का होता है।

सूर्य रेखा पर नक्षत्र चिह्न बहुत ही सौभाग्य सूचक माना जाता है। वर्ग चिह्न सुरक्षा का सूचक है। क्रास चिह्न अशुभ फलदायक और बाधायें अधिक करता है।

यदि करतल के मध्य में गड्ढा हो तो सूर्य रेखा का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

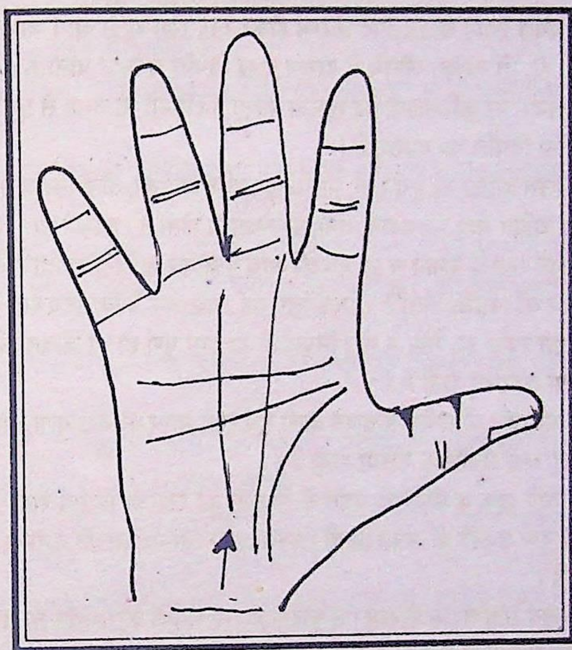
हाथ कितना ही अच्छा क्यों न हो यदि उसमें सूर्य रेखा न हो तो जातक कितना ही होशियार क्यों न हो वह अपने कार्य के लिए मान्यता प्राप्त करने में असफल रह जाता है। उसका जीवन अंधकार में रहेगा और सफलता का सूर्य उसके कार्य क्षेत्र पर कभी प्रकाश नहीं डालेगा।

सूर्य रेखा को चमत्कारिक रेखा भी माना गया है। इसका अच्छा और लम्बा होना आवश्यक है। लम्बी हो तो उद्गम चंद्र पर्वत से होने पर और छोटी हो तो हाथ से ऊंची हो सूर्य पर्वत की ओर जाती हो, तो बड़ी गुणवान और यशस्वी होती है। जातक का अंत सूर्य पर्वत पर होना आवश्यक है। तभी यह सूर्य रेखा है। यह यश-अपयश गुणावगुणों का परिचय देती है।

1. शुक्र से
2. मंगल पर्वत से, हृदय रेखा को क्रास कर सूर्य पर्वत तक
3. मस्तिष्क रेखा से सूर्य पर्वत तक
4. हृदय रेखा से सूर्य पर्वत तक
5. मणिबंध से
6. केतु से
7. हर्षल अथवा राहु क्षेत्र से

इस प्रकार इसके उद्गम स्थल अनेक हैं, पर इसका अंत सूर्य पर्वत पर ही माना गया है। यह रेखा मनुष्य के जीवन और भविष्य की सफलताओं, असफलताओं का परिचय देती है।

मणिबंध से आरम्भ होकर सूर्य तक बिना बाधा के पहुंच जाने वाली रेखा जन-धन-ऐश्वर्य-आनंद-प्रभुत्व देने में, सम्मान व अधिकार देने में पूर्वतः सहायक हैं।



दोनों हाथों में सुस्पष्ट सूर्य रेखा जहां जीवन में पूर्ण सफलता प्रदान करती है, वहीं लम्बी व बिना कटी रेखा धन-सम्पत्ति व ऐश्वर्य, गहरी हथेली मुड़ी, उंगलियों के साथ निर्दोष रेखा प्रतिभा का, योग्यता का दुरुपयोग करवाती है। फीकी हल्के रंग की सूर्य रेखा कलात्मक प्रतिभा देती है, पर शक्ति के अभाव में व्यक्ति उसका दुरुपयोग नहीं कर सकता। दोनों हाथों में उच्च बृहस्पति व सूर्य रेखा समाज के उच्च स्तरीय लोगों से, धनिकों से सम्पर्क कराती है।

सूर्य रेखा भाग के प्रबल व अनामिका तर्जनी से बड़ी और मध्यमा के बराबर हो तो ऐसा व्यक्ति सटोरिया, जुआरी या सट्टेबाज होता है। इसके उपरान्त भी वह धनी, गुणी, आपत्ति का सामना करने में दृढ़ होता है। भाग्य रेखा अगर मुड़ी हुई हो तो उपरोक्त गुणों में और वृद्धि हो जाती है।

लम्बी सूर्य, रेखा वाला धनवान, किसी अन्य रेखा से काटी हुई या टूटी-फूटी रेखा वाला व्यक्ति निर्धन व अपव्ययी होता है।

सूर्य रेखा मध्य रेखा में दोहरी होती दिखाई दे तो वह रेखा जिस आयु स्थान पर दोहरी हुई हो, उसी समय उसको लॉटरी आदि से अकस्मात् धन लाभ होता है।

मंगल स्थान के इर्द-गिर्द प्रारम्भ होकर यदि रेखा थोड़ी आगे जाकर मध्मय हो रही हो, तो व्यक्ति जीवन में दारुण दुःख विपत्ति व कष्ट पाता है। जीवन में कदम-कदम पर कठिनाइयों का सामना करता है। किसी भी जगह से सूर्य रेखा का टूट जाना विपत्ति का कारक है।

जिस व्यक्ति की सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, मस्तिष्क रेखा, तीनों निर्दोष व बलवान हों वह व्यक्ति महा-भाग्यवान, धनी, प्रभावशाली होता है। हृदय रेखा से शुरू होने वाली सूर्य रेखा के प्रभाव से 56 वर्ष की आयु में जाकर भाग्योद्य होता है व उन्नति की ओर को अग्रसर होता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हृदय रेखा के ऊपर सूर्य रेखा स्पष्ट हो, रेखा न हो। निर्बल हो या दोष पूर्ण हो तो जीवन की अंतिम अवस्था कष्टमय होती है।

मणिबंध के समीप से चलने वाली सूर्य रेखा भाग्य को कई गुणा चमका देती है। यह रेखा सर्वाधिक उलया होती है।

यदि शुक्र व मंगल के पर्वत से निकली हुई रेखाओं से सूर्य रेखा छेदन हुई हो, तो दुष्ट प्रकृति के अपने किसी सम्बंधी द्वारा ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति का नाश होता है।

सूर्य रेखा चंद्रमा के स्थान से चलती हो ऐसे मनुष्य की उन्नति तो जरूर होती है, परंतु उन्नति में अन्यांय लोग सहायक होते हैं। यदि सूर्य रेखा हृदय रेखा के पास से आरम्भ हो तो मनुष्य को सर्वप्रिय सरल स्वभाव व उदार बनाकर उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचाती है।

अनामिका पतली उंगली से अधिक लम्बी व बीच की उंगली के बराबर हो तो व्यक्ति जुआ खेलकर धन का नाश करता है।

दोनों ही हाथों में तंग, गैहरी व सीधी बिना टूट-फूट के सूर्य पर्वत पर चढ़ती सूर्य रेखा धन सम्पत्ति देती है। सूर्य रेखा दोनों हाथों में हो तो, लम्बी, तंग, तिरछी मानसिक रेखा और दूसरी तीसरी रेखायें लगभग समान लम्बाई की हों तो भी व्यक्ति जुआ खेलता है।

विवाह रेखा से कटी हुई सूर्य रेखा अनुपयुक्त विवाह के कारण सामाजिक स्तर गिरा देती है।

चतुर्भुज के अंदर गडमड तथा टूटी हुई रेखा कला के क्षेत्र में मान्यता हेतु संघर्ष उत्पन्न कर भी बार-बार असफलता देते हुए अन्ततोगत्वा सफलता प्रदान करती

है।

सूर्य रेखा से यदि कोई अन्य रेखा आकर मिलती हो तो अन्य मार्ग से धन मिलता है।

यदि सूर्य रेखा की कोई शाखा शनि को पार कर गुरु पर्वत तक पहुंच जाये तो व्यक्ति उच्च पदासीन होता है।

सूर्य व हृदय रेखा इनके संगम स्थान पर काला दाग हो तो व्यक्ति काना या अंधा होता है।

सूर्य पर क्रास का चिह्न सा व पूरा बना हो तो व्यक्ति अचानक धन की प्राप्ति करता है।

अनामिका के आरम्भ में यह रेखा यदि बज्र के आकार की हो तो यह मनुष्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। यदि कटी-फटी या टूटी-फूटी हो तो धन हानि अवश्यंभावी है।

हृदय रेखा के प्रारम्भ में त्रिशूलनुमा शाखापुंज हो तो ख्याति धन, ऐश्वर्यादि एवं प्रयासों से प्रारम्भ करता है।

अच्छी सूर्य रेखा पर साथ में दो लहरदार, अनियमित रेखाएं सूर्य पर्वत पर जातक को पथभ्रष्ट कर अपमानित करती हैं।

एक लम्बाई की तीन शाखाओं में अंत, एक बुध पर्वत की ओर, एक शनि पर्वत की ओर खूब यश, धन व ख्याति प्रदान करती हैं।

यदि सूर्य रेखा को तीन चार रेखाएं काटतीं हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी सफलता नहीं पाता।

यदि सूर्य रेखा न हो और उसके बदले सूर्य क्षेत्र छोटे-छोटे खरोच या सूक्ष्म रेखाएं हों तो ऐसे व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था के लिए विशेष चिंतित होते हैं और कष्ट व चिंता के साथ जीवन बिताना पड़ता है।

लम्बी सूर्य रेखा पर क्रास का चिह्न न हो और हथेली लाल रंग की तथा उंगलियां मुड़ी हुई हों तो इसका अर्थ मनुष्य सम्पत्तिवान होगा पर अच्छी सूर्य रेखा के साथ अन्य लक्षण मनुष्य की दार्शनिकता प्रकट करते हैं।

सूर्य रेखा के अंत में नक्षत्र का चिह्न अंतर्राष्ट्रीय यश, मान व ख्याति देता है।

सूर्य रेखा पर खड़ी हुई बाधा-रेखा से शीर्ष रेखा की कोई शाखा स्पर्श करती हो तो उस आयु पर मनुष्य अपने व्यवसाय में सही निर्णय नहीं ले पायेगा व भारी क्षति उठायेगा।

हथेली के मध्य में यदि रेखाओं के संयोग में त्रिकोण बना हुआ हो और उसके बीच में फुली का चिह्न हो तो तंगी में जीवन व्यतीत करता है, प्रायः चिंतित रहता

है।

सूर्य रेखा प्रमाण से अधिक चौड़ी हो तो उसको महत्व के कार्यों में अपयश प्राप्त होता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सदैव दरिद्र तथा मूर्ख पाये जाते हैं।

स्पष्ट सूर्य रेखा व्यापार में गौरव की सूचक है।

यदि सूर्य रेखा जीवन रेखा के नीचे शुक्र स्थान से निकलती है तो पति या पत्नी एक दूसरे की सहायताओं पर धन प्राप्त करते हैं। सूर्य रेखा जितनी ही स्पष्ट और निर्मल होगी जातक उतना ही यशस्वी सम्पत्तिशाली होगा।

सूर्य रेखा जातक की वृद्धि और रहन-सहन का परिचय भी देती है।

चंद्र रेखाः– यह रेखा चंद्र क्षेत्र व मंगल क्षेत्र पर अर्द्ध चंद्राकारवद्ध होती है। हां, इतना अवश्य है कि इसका स्वरूप न्यूनतम हाथों में ही होता है। कुछ ने इसे कॉमनसेंस या सहजात बुद्धि की रेखा भी माना है। यह रेखा अन्तर्ज्ञान की परिचायक है।

इस रेखा से सम्बंधित व्यक्ति खुब बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली, आध्यात्म की ओर रुचि रखने वाला, दिव्यात्मा, साधु संगतिवाला, दयालु, परोपकारी, ज्ञानी व सिद्धात्मा होता है। कर्मण्य एवं सत्यनिवेषी, भविष्य-दृष्टा, ख्याति प्राप्त, भूत-भविष्य, वर्तमान का जानने वाला, सुंदर प्रतिष्ठित होता है।

यह रेखा बुध पर्वत तक पहुंच जाने का अर्थ है, प्रतिभावान, प्रभावशाली, प्रखर बुद्धि, अनायास शुभ फलदायक, देवी शक्ति युक्त, स्वप्न में दिव्यज्ञान प्रकट करने वाले, शकुन व स्वप्न इनके सत्य सिद्ध होते हैं। अंतर्दृष्टा व एकांत-प्रेमी, स्वयं खोये-खोये से रहते हैं।

शुभ चंद्र रेखा के साथ उंगलियां लम्बी, अग्रभाग से नुकीली होने का अर्थ है, वह व्यक्ति ज्ञानी, विद्वान व प्रसिद्ध होगा। चंद्र रेखा उत्तम रेखा व अंगूठा नुकीला, शीर्ष रेखा ढलुवां हो तो व्यक्ति आध्यात्म प्रेमी भी होगा।

वर्गाकार हाथ में कठोर व अल्प रेखायुक्त स्थिति हो तो अनुभवी व यथार्थ में जीने वाला होता है।

यह रेखा असुंदर, अस्पष्ट व्यक्ति को प्रभावहीन बनाती है। जगह-जगह से टूटी रेखा व्यर्थ व असत्य की परिचायक है। टेढ़ी-मेढ़ चंद्र रेखा सफलता में कठोर श्रम की परिचायक रहती है।

अधुरा अर्द्धवृत प्रदर्शन प्रियता का गुण है।

मात्र मंगल पर इसके दिखाने का अर्थ है, असफलता, विरक्ति हाथ में गहरी रेखा वाला अंतर्ज्ञान से बलवान, दार्शनिक मूडी एवं ब्रह्मज्ञानी होगा।

रेखा के अंत में तारक चिह्न अद्‌भुत सफलता द्योतक, प्रबल बुध रेखा भी हो

तो धन में वृद्धि होती है। रेखा के अंक में तारे का चिह्न व दोषयुक्त बुध रेखा ज्ञान का दुरुपयोग करवाता है। ऐसा व्यक्ति ठगी का कार्य करता है।

बुध पर झुकी हुई चंद्र रेखा शीर्ष रेखा को काटे या व्यक्ति कल्पनाशील, विचारशील, गुरु पर झुके तो महत्वाकांक्षा पूर्ति व गूढ़ विद्या का जानकार होता है।

रेखा की शाखा शनि पर्वत से मिलकर विलीन हो जाये तो जीवन का विकास होता है। ऐसा व्यक्ति यकायक उन्नति करता है। मान सम्मान पाता है।

द्वीप चिह्न युक्त चंद्र रेखा मूर्खता की द्योतक, एक द्वीप कम दोष व अधिक द्वीप अधिक दोष के परिचायक हैं। रेखारंभ में द्वीप स्वप्न में चलने की बीमारी प्रदान करता है।

सूर्य क्षेत्र से मिलती चंद्र रेखा लौकिक बंधनों को तोड़ना चाहती है। चंद्र क्षेत्र सुगठित हो, सुंदर चंद्र रेखा व नीचे लटकती हुई शीर्ष रेखा वाला व्यक्ति कल्पना-लोक में ही विचरण करता है। धैर्य का अभाव व लौकिक ज्ञान का अभाव होगा। सीमित आयु व ऐसा व्यक्ति कृपण होगा। विकसित क्षेत्र के साथ सुंदर चंद्र रेखा सामान्यतः नवीन आविष्कारों की ओर प्रेरित भी करती है।

मंगल रेखाः– मंगल रेखा के द्वितीय क्षेत्र से निकलती हुई यह रेखा जीवन रेखा के समानांतर, उसी के समान गोलाईयुक्त चलती रहती है। इस कारण इसे जीवन रेखा की सहायक भी माना है। ये रेखायें 1 से 4 तक देखी गयी हैं। ये मंगल पर शुक्र क्षेत्र पर पूर्ण प्रभाव रखती हैं। इन सबकी लम्बाई समान न होकर भिन्न-भिन्न होती है। मंगल रेखाओं को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

पतली व श्रृंखलायुक्त जीवन रेखा के साथ मंगल रेखा की सामान्य उपस्थिति परम्परागत कोमलता व्यक्त करेगी। ऊपर से कायर पर भीतर से दृढ़ होगा।

वे जो जीवन रेखा के समानांतर अधांत तक जाती हैं व पूर्णतः जीवन रेखा की सहायता करती हैं। ऐसे व्यक्ति पढ़ने-लिखने, अध्ययन करने, कला-कौशल कार्य में दक्ष होते हैं, त्वरित, निर्णय लेने वाले, सतत क्रियाशील, कुशाग्र बुद्धि, कठोर परिश्रमी होते हैं। वह दैहिक रूप से हृष्ट-पुष्ट सुंदर, ज्ञानी, दार्शनिक होगा। दुर्बल हृदय एवं लड़ाई झगड़े से दूर रहता है।

मंगल रेखा जीवन रेखा से आरम्भ होकर, उसके साथ न्यून कोण बनाती हुई आयु रेखा से दूर ही से शुक्र के स्थान पर पहुंचती है। यह व्यक्ति जिद्दी ईर्ष्यालु, द्वेषी-हटी, लापरवाह होगा। आयु के साथ-साथ ये अवगुण भी बढ़ते चले जायेंगे। चिड़चिड़े स्वभाव का झगड़ालू, आवेशी, प्रतिशोध लेने वाला शीघ्र क्रोधी होगा।

मनुष्य के हाथ में जीवन रेखा दो स्थान पर टूटी है अथवा लहरदार या जंजीरेदार या द्वीपयुक्त है तो मनुष्य बीमार व मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है, पर मंगल रेखा साफ-निर्दोष

व स्पष्ट हो तो उपरोक्त दोषों से बच जाता है।

मंगल रेखा अगर जीवन रेखा को लांघ जाये तो व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए बावला हो जाता है, वह निरंतर ऊंचा उठने का प्रयास करता है।

मंगल रेखा बिना बाधा के शुक्र क्षेत्र तक पहुंच जाय और जीवन रेखा हथेली के मध्य से यकायक समाप्त हो जाये, तो जातक पूर्ण आयु का भोग करता है।

दृढ़ जीवन रेखा के साथ 2-3 समानांतर व पूर्ण मंगल रेखायें नैतिक उन्नति की परिचायक हैं। वासना की तीव्रता व पूर्ति के लिए वह कुछ भी कर सकता है।

पतली-अनेक समानांतर रेखाएं अशुभ मानीं गई हैं। ऐसा व्यक्ति तन को शांत करने के लिये उल्टे-सीधे कदम उठाता है। वासना की पूर्ति हेतु कुछ भी कर सकता है। चरित्र एवं स्वास्थ्य दोनों को खो बैठता है।

मंगल रेखा की कोई शाखा विवाह रेखा को काटती हुई बढ़े तो वैवाहिक जीवन दुःख पूर्ण रहता है। गृहस्थ जीवन में आनंद नहीं रहता है।

भाग्य रेखा को काटती मंगल रेखा भाग्य का नाश करती है। सूर्य रेखा को काटें तो यश व बुद्धि नाशक होती है। सूर्य पर यदि क्रास बिंदु या द्वीप आड़ी बाधा रेखा हो तो यश व सौभाग्य का भी नाश होता है।

मंगल रेखा की शाखा यदि चंद्र पर्वत पर पहुंचे तो व्यक्ति मद्यपान करने वाला, चंचल, विलासी, व्यभिचारी, झूठा, नृत्यगान प्रिय व सद्गृहस्थ नहीं होता है।

मंगल की कोई शाखा भाग्य या शीर्ष रेखा से जा मिले तो श्रेष्ठ फल समझा जाना चाहिए।

संतान रेखाएंः— विवाह मात्र विषय-वासना की दृष्टि का ही साधन न होकर मनुष्य मात्र प्राणी मात्र के सम्मुख वंश वृद्धि का प्रश्न भी उपस्थित करता है।

संतान रेखाएं विवाह रेखा के ऊपर नीचे दोनों ही ओर न्यूनाधिक अंतर से पाई जाती हैं। इनका अस्तित्व कनिष्ठिका के मूल में पाया जाता है।

विवाह रेखा पर जितनी खड़ी रेखायें सुंदर, साफ, स्पष्ट और लम्बी होंगी वे पुत्रोत्पत्ति की मानी जातीं हैं और जो खड़ी रेखायें छोटी, गहरी, स्पष्ट होती हैं, उन्हें कन्या वाली समझना चाहिए।

जो रेखायें अत्यंत छोटी-टूटी, कटी-फटी, बिंदुसार, द्वीप रूप, लहरदार या अन्यांय दोषों से युक्त हों वे संतान की मृत्यु सूचक होती हैं।

भद्दी, अस्पष्ट रेखा दुःखदायी, निकम्मी, जी लगाने वाली, अयोग्य संतान की परिचायक है। संतान रेखा का कहीं बीच में खंडित होना अकाल, मृत्युकारक है।

संतान रेखा के निचले सिरे पर द्वीप, रोगी बालक के होने का परिचायक है। अंत में द्वीप लम्बी बीमारी से अंत का परिचायक है।

यदि रेखायें उथली-अधूरी हैं, तो गर्भस्राव व गर्भक्षय की सूचना देती हैं।

यदि रेखाओं का ठीक से आभास न हो, समतल शुक्र के साथ मणिबंध हथेली में धंसे हुये हों तो व्यक्ति को संतानहीन समझना चाहिए।

मणिबंध रेखा अपनी स्वाभाविक स्थिति से ऊपर उठकर हथेली पर चढ़ी दिखाई दे, तो संतान रेखाओं की उपस्थिति भी व्यर्थ है। वह व्यक्ति संतानोत्पत्ति में असफल रहता है।

स्पष्ट, निर्दोष, लम्बी रेखा का अर्थ है बालक मातृ-पितृ भक्त, आज्ञाकारी, हितैषी, यशस्वी होगा। लड़की पितृ कुल व पति कुल दोनों के वास्ते शुभ रहेगी।

संतान रेखा ऊपर को उठती हुई कनिष्ठिका के मूल को पार करती हुई उसकी विभक्ति में प्रविष्ट होने का अर्थ है कि बालक जीवन में राजदंड पायेगा।

यदि यह रेखा दाम्पत्य जीवन को काटती हुई नीचे की ओर बढ़े तो संतान आचरणहीन, कलंकित, माता-पिता के वास्ते कष्टप्रद होती है। रेखायें लहरदार या बूंददार हों तो संतान रोगग्रस्त होगी।

ज्ञान-विज्ञान रेखाएंः– यह रेखा बुध क्षेत्र पर अनामिका उंगली की ओर संतान रेखाओं के समानांतर विवाह रेखा से पृथक एक से पांच रेखा तक की संख्या में बड़ी होकर अपने शौर्य का प्रदर्शन करती है।

ये रेखाएं खंडित या दूषित हों, अवरोधक टूटी-फूटी हों अथवा द्वीप हों तो वह स्वकार्य, आविष्कारक या अनुसंधान में विफल होता है।

रेखाएं जितनी साफ, स्पष्ट निर्दोष होंगी, मनुष्य उतना ही अधिक विद्वान साहित्यकार, लेखक, वैज्ञानिक, आविष्कारक होगा। आजीवन वह ज्ञान साधना में लगा रहता है। दार्शनिक निर्माता होगा।

यदि इन रेखाओं के स्वरूप आपस में मिल जायें व तीर के अग्रभाग के समान दिखाई दें, तो मनुष्य तत्व की तह में पहुंचकर अनुसंधान की खोज में रहता है। तीर का पिछला भाग रवि (सूर्य) रेखा से सम्बंधित हो तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। यश, धन पाता है। हृदय अथवा मस्तिष्क रेखा को यह रेखा स्पर्श करे तो वह श्रेष्ठ लेखक होता है। यश व धन अवश्य मिलता है, परंतु प्रौढ़ावस्था में जाकर।

बुद्धि रेखाः– यह रेखा बहुत कम हाथों में दिखाई देती है। मूलतः दो ही होती हैं। इनका उद्गम अनामिका व मध्यमा के मध्य भाग का रिक्त स्थान जो शनि व सूर्य क्षेत्रों को परस्पर विभक्त करता है, अथवा पृथक करता है, माना गया है। यह रेखा अनामिका के खूब निकट, रवि रेखा के समानांतर हाथों में देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्ति निर्धन घर में जन्म लेकर भी पढ़े-लिखे, समझदार व बुद्धिमान होते

हैं। जिनके हाथों में ये रेखायें दो होती हैं, वे मनुष्य बड़े ही भाग्यशाली तथा विद्वान होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि जिन हाथों में ये रेखाएं नहीं होती वे विद्वान नहीं होते। इसकी तिशेषता यही है कि मनुष्य कम पढ़ा-लिखा होने पर भी शीघ्रगामी व विद्वान होता है। तीव्र तर्कशक्ति-युक्त विद्वान, अच्छा सलाहकार व सच्चा हितैषी होता है।

भाई-बहन रेखाएंः– ये रेखाएं शुक्र क्षेत्र पर होती हैं, जो मणिबंध की ओर से अंगूठे के तृतीय भाग से आरम्भ होकर ऊपर को मंगल क्षेत्र की ओर जाती हैं जो कि शुक्र क्षेत्र तक सीमित रह जाती हैं। ये रेखाएं संख्या में जितनी होती हैं, उतने ही भाई-बहन होना निश्चित है।

इन रेखाओं का न होना जातक के एकांकी होने को प्रदर्शित करता है। इन खड़ी शुक्र क्षेत्रीय रेखाओं में कुछ रेखाएं लम्बी, सुंदर, साफ व स्पष्ट होती हैं। वे भ्रातृ संख्या बतलाती हैं और जो छोटी हैं, वे बहनों की संख्या तथा जो अत्यंत छोटी, खंडित टूटी-फूटी, द्वीप युक्त या धन चिह्न हों, या दोषी हों, वे भाई बहन के वियोग, मृत्यु की सूचना देती हैं।

ये रेखायें साफ, सुंदर, स्पष्ट, निर्दोष हैं, तो भाई-बहिन उतने स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट व बलवान होंगे।

पद रेखाः– अंगूठे के नीचे शुक्र क्षेत्र पर, जीवन रेखा के ऊपर जो भी रेखायें हैं, वे पद रेखायें मानी गई हैं।

ये रेखायें जितनी सुंदर, सशक्त होंगी, उतनी ही पदोन्नति की सम्भावना होगी। उच्च पदाधिकारियों के हाथों में मैंने ये रेखाएं देखी हैं। ये रेखाएं पद की उच्चता का आभास देती हैं। कुछ विद्वानों ने इन्हें सहोदर रेखा भी माना है।

मित्र रेखाः– विवाह रेखा के निकट एवं हृदय रेखा के समानांतर चलती हुई कोई रेखा दिखाई दे तो यह रेखा मित्र सूचक है। ऐसे व्यक्ति को विश्वास पात्र, परम स्नेही मित्र की प्राप्ति होती है। उनके द्वारा अनेक कार्यों में सहयोग, सहायता द्वारा सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है।

जंजीरदार या लहरदार रेखा हो तो यह स्वार्थयुक्त मैत्री को सूचित करती है। टूटी रेखा बीच में ही मित्रता टूट जाने का लक्षण है।

कुछ विद्वानों के अनुसार उंगलियों के पोरवों पर जो खड़ी रेखाएं हैं वे मित्रों से सम्बंधित हैं ये रेखायें गिनती में जितनी होंगी, मित्रों की संख्या भी उतनी ही होगी।

वाहन रेखाः– यह रेखा शुक्र क्षेत्र पर आड़ी दिखाई देती है। गिनती में यह जितनी होंगी उतने ही वाहन अर्थात् तांगा, गाड़ी, कार स्कूटर आदि होंगे। यदि ये

रेखायें अस्पष्ट हों तो कुछ समय के लिए वाहन पास रहेगा। कुछ विशेषज्ञों की राय में टूटी वाहन रेखायें वाहन दुर्घटना की द्योतक हैं।

कुछ विद्वान टूटी रेखा से वाहन टूटने, नष्ट होने या बिक जाने का सम्बंध जोड़ते हैं। यदि रेखा स्पष्ट नहीं है, तो निरर्थक है।

काकपद रेखाः– यह रेखा अंगूठे के मूल में कौए जैसे आकार में होती है, ऐसा व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करने में समर्थ होता है। उसकी मूर्खता या बिना बुद्धि के सफलता में बाधक नहीं है, पर ऐसा व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित रहेगा, कोई इलाज उदर रोग से छुटकारा नहीं दिला सकता है। अंत में उदर शूल ही जातक की मृत्यु का कारण बनता है।

यात्रा रेखाः– चंद्रमा, बुध और शुक्र यात्रा प्रवृत्ति व क्रिया में प्रमुखता रखते हैं। इसके अनुसार तीनों ग्रहों के क्षेत्रों का निर्दोष होना आवश्यक है। कारण, इसकी सफलता यात्राओं में बार-बार अवसर लाती है। कनिष्ठिका के मूल में उत्पन्न होकर बुध क्षेत्र को होती हुई आयु रेखा पर पहुंचने वाली रेखाएं अथवा कुछ क्षेत्र के किनारे एवं सूर्य क्षेत्र की ओर स्थित खड़ी रेखायें यात्रायें कहलाती हैं।

अंगूठे के मूल से उत्पन्न होकर जीवन रेखा की ओर उठने वाली या उसमें जा मिलने वाली रेखाएं अर्थात् शुक्र क्षेत्र पर स्थित खड़ी रेखाएं यात्रा रेखाएं हैं।

पाश्चात्य विद्वान चंद्र व मंगल को यात्रार्थ कारक मानते हैं। कुछ चंद्र बुध को प्राथमिकता देते हैं।

कुछ एक के मन में मणिबंध से उत्पन्न खड़ी रेखाएं यात्रा रेखाएं होती हैं। यात्रा रेखाओं का स्पर्श द्वीप, जो बिंदु आदि से हो तो यात्रा भयकारक होती है। वर्ग दुर्घटना की ओर संकेत करता है। रेखा के अंत में जो धन-हानि का सूचक है, त्रिभुज व चतुष्कोण लाभ व सुखदायक चिह्न है।

कुछ हथेली के किनारे से चंद्र क्षेत्र पर पहुंचने वाली रेखाओं को व कुछ जीवन रेखा की ओर चंद्र क्षेत्र की ओर आने वाली रेखाओं को पर्यटन रेखाएं मानते हैं।

मणिबंध से उत्पन्न खड़ी रेखायें यदि मंगल पर जा पहुंचे तो वह लम्बी यात्रा की परिचायक हैं।

कुछ विद्वानों के अनुसार एक ही हाथ में बनी यात्रा रेखाएं प्रभावी नहीं होतीं, पर दोनों हाथों में हों तो यात्राएं अवश्य होतीं हैं।

यात्रा को भाग्य से प्रबुद्ध करने के लिए चंद्र क्षेत्र पर यात्रा रेखा का भाग्य से मिलना शुभ समझा गया है। यदि यह रेखा भाग्य रेखा में जा मिले तो सुदीर्घ व लाभदायक यात्रा होती है। अगर रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श न करे तो सामान्य यात्रा होगी।

जीवन रेखा उद्भव यात्रा का शुक्र क्षेत्र पर पहुंचना स्थल यात्रा सूचक है, पर जीवन रेखा से चंद्र रेखा पर पहुंचे तो यह समुद्र यात्रा की संभावना बढ़ाता है।

चंद्र क्षेत्र से निकली हुई कोई यात्रा रेखा सर्पाकार होकर शुक्र रेखा पर पहुंचे तो जलमार्ग द्वारा व्यवसाय करने की सूचना देता है।

जीवन रेखा से निकलकर उसके सहारे समानांतर चलती रेखा विदेश में नौकरी करने की सूचक है।

यात्रा रेखा मणिबंध से निकलकर बुध क्षेत्र पर पहुंचे तो अकस्मात् धन-सम्पत्ति प्राप्त होगी। यदि गुरु क्षेत्र पर पहुंचे तो यात्रा खूब लम्बी होगी, यात्रा से प्रभुत्व प्राप्त होगा।

यात्रा रेखा शनि क्षेत्र पर पहुंचे, तो यात्रा का सम्बंध किसी गम्भीर घटना से होगा। सूर्य रेखा पर पहुंचना अत्यंत शुभ है। धन, यश में वृद्धि होगी।

गुरु से उत्पन्न रेखा के साथ उस पर गुणा का चिह्न हो, खतरा समझें, जल भय, त्रिकोण दुःखदायी यात्रा सूचक है।

मणिबंध पर स्थित रेखाएं त्रिकोण का स्परूप धारण कर ले तो विदेश यात्रा आनंदपूर्वक निर्विघ्न होती है।

यात्रा रेखा जीवन रेखा के अंत में द्विजिह्वा हो जाये तो बार-बार यात्रा की सूचक है।

द्वीप-रोग भय, तिल-गुणा-भंग दुर्घटना, नक्षत्र मृत्यु भय व्यक्त करता है जो धन हानि सूचक है।

यात्रा रेखा के साथ गुच्छा या जाली जैसा चिह्न जटिल मनोस्थिति बताता है। आत्म-ग्लानि के कारण जातक घर छोड़ जाता है, आत्महत्या कर लेता है।

बुध रेखाः– स्वास्थ्य रेखा के समानांतर चलती हुई एक अन्य रेखा दिखाई देती है। यह स्वास्थ्य रेखा की शक्ति में वृद्धि करने वाली होने के कारण स्वास्थ्य रेखा व पाश्चात्य लोंग अर्थात् कामुकता की रेखा कहते हैं।

यह रेखा चंद्र क्षेत्र पर उत्पन्न होकर अर्धवृत्त के समान घूमती हुई हथेली के निचले भाग में रहती है यह स्वास्थ्य को बल देने वाली, शक्ति सामर्थ्य बढ़ाने वाली, वासना तीव्र करने में कारगर है।

यदि यह बुध रेखा के समानांतर होने के साथ कुछ तिरछी हो तो इससे स्वास्थ्य रेखा प्रभावित होती है। दुर्गुणों का अविर्भाव होता है।

यदि सहायक रेखा किसी स्थान पर स्वास्थ्य रेखा को ही काटे तो इस आयुमान पर जाकर मंदाग्नि या अन्य रोग पीड़ा देते हैं। जिगर रोग का होना संभव है।

लहरदार रेखा चंचलता देती है। कुछ लोग इसे व्यभिचार का कारक मानते

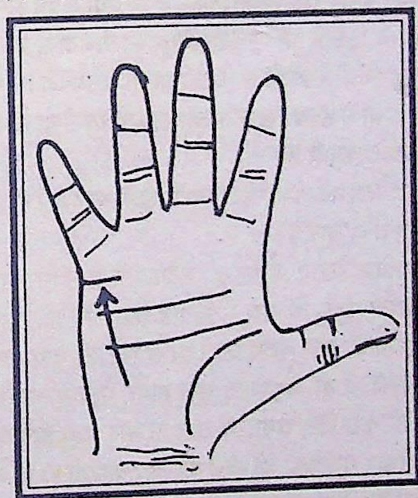
हैं। अंत में दो शाखाओं में बंटने के कारण हैं मनुष्य में आलस व पौरुषहीनता में वृद्धि रोग, शरीर कष्ट व स्वास्थ्य चौपट हो जाता है।

यह रेखा बुध क्षेत्र पर आकर समाप्त हो जाये तो उसे भाग्य वृद्धि का कारक समझें। वह मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार से स्वस्थ रहेगा। व्यक्ति श्रेष्ठ वक्ता, दार्शनिक या राजनीतिज्ञ होगा।

इस रेखा पर तारक चिह्न शुभ है, इससे धन व यश की प्राप्ति होती है पर विषयाशक्ति इन दोनों का नाश कर सकती है।

बुध रेखा अर्थात् स्वास्थ्य रेखा की यह पूरक भी है। उसके अभावों की पूर्ति करने में सहायक है।

विवाह रेखाः– दाम्पत्य जीवन मनुष्य जीवन का एक आवश्यक अंग हैं इच्छित जीवन साथी मिलने का अर्थ है जीवन के प्रति नई आस्था विश्वास, प्रेम व स्फूर्ति व प्रतिकूल जीवन साथी प्राप्त होने पर सभी परिस्थितियां अनुकूल हों तो भी वह स्वयं को हारा, परेशान, उत्साहहीन व निराश अनुभव करता है। कुंठा, संत्रास, निराशा जीवन का मोहभंग कर देती है। उसे मानव जीवन भार स्वरूप लगने लगता है।



अतः अनुकूल जीवन साथी का होना परम आवश्यक है। और इसकी जांच हमारे हाथ की रेखायें करती हैं। शुक्र-बुध और चंद्र क्षेत्र से हम विवाहित जीवन का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुक्र काम-प्रणय का निर्वाह, वासना संतुष्टि व सामाजिक मर्यादा का, बुध दाम्पत्य जीवन व जीवन साथी का व रसिकता, निष्ठा, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक दशा या पद, सम्मान का ज्ञान परिचायक चंद्र है।

लम्बा, पतला, सुदर रखा सुशाल कन्या से विवाह होना प्रकट करती हैं। यह रेखा सुंदर होकर भी यदि मोटी हो तो विधवा का विधुर से विवाह होना प्रकट करती है।

हथेली के पार्श्व में उद्भुत यह रेखा हृदय रेखा के ऊपर बुध क्षेत्र पर आड़ी होती है। यह संख्या में एक या अधिक हो सकती हैं। रेखाएं गिनती में जितनी होंगी, उतने ही विवाह होंगे ऐसा कहा गया है, पर मैं इसे सही नहीं मानता हूं।

ये रेखाएं एक समान होकर अस्पष्ट या कटी-फटी हों तो यह वैवाहिक विषमता प्रकट करती हैं। ऐसा जातक निम्न कुल में विवाह करता है।

यदि कटी-फटी रेखायें मनुष्य के हाथ में हों तो विधुर और स्त्री के हाथ में हों तो विधवा होती है, यदि दोनों के हाथों में एक सी रेखा पड़ी हो तो विधुर-विवाह का परस्पर विवाह होना प्रकट करती है।

कुछ विवाह रेखा के साथ प्रभाविक रेखाएं भी होती हैं। यदि प्रभाविक रेखा में तारा हो तो लड़के या लड़की का चुराचरण विवाह होने में बाधा कारक होता है।

द्वीप चिह्न युक्त प्रभाव रेखा किसी निकट के सम्बंधी से प्रेम होना व्यक्त करती है। हृदय रेखा की ओर झुकती हुई यह रेखा विधुर का विधवा से प्रणय प्रकट करती है। विवाह रेखा कई लम्बी रेखाओं से कटती हो तो प्रणय जीवन सुखदायी नहीं होता है। कई एक हाथों में हृदय रेखा की ओर झुकती यह रेखा विवाह होकर पुनः विच्छेद भाव को प्रकट करती है।

यदि प्रभाविक रेखा को अन्य छोटी-छोटी रेखायें काट रहीं हो तो विवाहोच्छेद का होना इसका सामान्य गुण है।

कांटेदार प्रभाविक रेखाएं मनुष्य को सदैव रोग ग्रस्त ही बनाये रखतीं हैं।

यदि स्त्री अथवा पुरुष के हाथ में विवाह रेखा नीचे की ओर झुकी हो तो स्त्री की रेखा से पुरुष की और पुरुष की रेखा से स्त्री की मृत्यु पहले होगी। यह रेखा यदि एकदम मुड़ी हो तो अकस्मात् मृत्यु होगी, ऐसा मानना चाहिए। अगर धीरे-धीरे मुड़ी हो तो कुछ दिन रोगग्रस्त रहने के बाद मृत्यु होगी।

यदि विवाह रेखा, सूर्य रेखा को नीचे की ओर काटती हो तो विवाह के बाद धन, सम्मान-ऐश्वर्य का नाश होगा।

यदि हृदय रेखा के अत्यंत निकट विवाह रेखा हो तो विवाह बाल्यावस्था में ही होना निश्चित मानना चाहिए।

यदि दोनों हाथों पर गुरु पर्वत पर गुणन चिह्न साफ स्पष्ट व गहरा दिखाई दे तो विवाह किसी बड़े घर की कन्या से अवश्य होता है।

यदि इसमें से एक शाखा निकली हुई हो और हृदय रेखा की ओर जा रही हो, किंतु उससे मिलती न हो तो ऐसे पति-पत्नी का जीवन सुखमय तो जरूर होगा। परंतु यह परस्पर लड़ते-झगड़ते रहेंगे।

बीच में से विवाह रेखा टूटी हो व उसको एक दूसरी कोई रेखा काटती हुई ागे निकल गई हो व हृदय रेखा के समीप पहुंच गई हो तो प्रस्ताव तो अवश्य ागा, पर विवाह नहीं होगा।

यदि इसकी शाखा हृदय रेखा की ओर झुकी हुई हो तो पति-पत्नी के विचारों मतभेद होने के कारण उनका विवाहित जीवन दुःखप्रद रहता है।

यदि एक रेखा स्त्री के हाथ में हो तो उसका पति शराबी होगा। और जब ाभी उसको नशा होगा वह पत्नी को मारता-पीटता ही रहेगा। जिस मनुष्य की विवाह खा पर तारा के समान चिह्न हो, उसकी स्त्री मर जाती है।

यदि विवाह रेखा सीधी, लम्बी, गहरी हो और उसे कोई अन्य रेखा काट रही ो, तो ऐसे मनुष्य की स्त्री दीर्घायु, स्वस्थ और सुंदर पति से प्रेम करने वाली होती है।

यदि विवाह रेखा नीचे की ओर द्विशाखा हो, उसकी कोई शाखा शुक्र स्थान को काट रही हो, तो विवाह सम्बंध टूट जायेगा।

यह जितनी भी हृदय रेखा के पास होगी विवाह उतनी ही जल्दी होगा। ठीक समय जानने के लिए हृदय रेखा और कनिष्ठिका के बीच फासले को 70 वर्ष के लगभग मानकर अपनी इच्छानुसार उसके दस-दस, पांच-पांच के जितने भी चाहें खंड कर लीजिए, तब जितने वर्ष वाले खंड पर रेखा मिलती हो, उसी वर्ष में विवाह होगा।

नीचे इस नियम को देखें–

प्रथम नियम	**समय विभाग या आयु**
हृदय रेखा से ऊपर	15 से 20 वर्ष तक 4
कनिष्ठिका की ओर	25 से 35 वर्ष तक 3
	40 से 50 वर्ष तक 3
	55 से 70 वर्ष तक 1
दूसरा नियम–	
कनिष्ठिका से नीचे	15 से 20 वर्ष तक 1
हृदय रेखा की ओर	25 से 35 वर्ष तक 2
	40 से 50 वर्ष तक 3
	55 से 70 वर्ष तक 4

इसके अतिरिक्त विवाह का समय जानने के लिए दूसरा यह प्रमाण भी है कि जीवन रेखा से प्रारम्भ होकर भाग्य रेखा से जिस स्थान पर कोई रेखा मिलेगी, वही समय उसके विवाह संबंध का भी होगा।

यदि विवाह रेखा कनिष्ठिका उंगली के दूसरे पोर पर चढ़ जाये तो व्यक्ति आजीवन अविवाहित रहता है।

यदि दो प्रणय रेखाएं साथ-साथ आगे बढ़ रहीं हों, तो उसके जीवन में एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम चलेंगे ऐसा समझें। प्रथम रेखा पर क्रास व्यक्ति के प्रेम को मध्य में छोड़ देते हैं। प्रणय रेखा पर द्वीप बदनामी देता है, प्रणय रेखा आगे दो भागों में बंट जाये तो प्रेम जल्दी समाप्त होता है।

विवाह रेखा से निकलकर अनेक रेखायें शीर्ष रेखा को काट रही हों तो यह ज्यादा कामुक होते हुए भी प्रखर बुद्धि का होता है। गहरी विवाह रेखा के साथ मंगल रेखा का बलवती होना इस बात का सूचक है कि जातक अपनी इच्छापूर्ति के लिए हर प्रकार के हथकंडें अपना लेता है। इसी के साथ शुक्र समुन्नत हो और उंगलियों के तृतीय पोरवें मोटे हों तो व्यक्ति बलात्कारी होगा, हो सकता है कि हत्या तक कर बैठे।

विकसित सूर्य क्षेत्र और सुंदर विवाह रेखा स्त्री जातक को अपनी ओर आकर्षित करने का गुण रखता है। जातक भावुक, संवेदनशील पर कामासक्त होता है। प्रबल कामेच्छा, प्रबल व पुरुष को दृढ़ वासनापूर्ति के वास्ते अधीर बना देती है कि वह जो भी कार्य करेगा उससे पहले यह अवश्य देखेगा कि उससे निंदा का पात्र तो न बनेगा या समाज में प्रतिष्ठा तो नहीं गिर जायेगी?

विवाह रेखा का आरम्भ में सूक्ष्म और बाद में गहरा होना इस बात का सूचक है कि विवाहित जीवन का प्रारम्भ अल्प प्रेम से होता है। धीरे-धीरे उसमें दृढ़ता आती जाती है। यह रेखा पहले गहरी और बाद में पतली हो तो आरम्भ में प्रेम की अधिकता व बाद में प्रेम में न्यूनता आ जाती है।

यदि विवाह रेखा मस्तिष्क रेखा को छू ले, तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी की हत्या करता है। यदि बुध पर्वत पर विवाह रेखा कई भागों में बंट जाये तो बार-बार सगाई टूटती है।

दो समानांतर बुध रेखाएं दो विवाह की सूचक हैं।

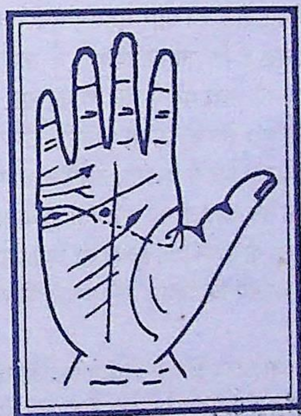
यदि विवाह रेखा आगे चलकर सूर्य रेखा से मिलती हो तो जातक की पत्नी उच्च पद पर नौकरी करती है।

विवाह रेखा पर काली छाया या धब्बा सा होने पर पत्नी सुख नहीं मिलता है। टूटी विवाह रेखा गृहस्थ जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है।

विवाह रेखा की कोई शाखा नीचे शुक्र पर्वत की ओर झुकी हो तो पत्नी अत्यंत कामुक या व्यभिचारी होती है।

यदि एक गहरी विवाह रेखा हृदय रेखा के निकट हो तो कम उम्र में विवाह हो जाता है। आगे चलकर हम ऐसे चिह्नों से भी परिचय करायेंगे। जिससे विवाह का समय ठीक तरह से जाना जा सकेगा यदि विवाह रेखा सुस्पष्ट हो, परंतु उसमें से अनेक सूक्ष्म रेखायें नीचे की ओर जाती हों तो जीवन साथी के स्वास्थ्य की खराबी के कारण जातक का जीवन चिंतापूर्ण और कष्टमय होता है।

यदि विवाह रेखा बुध-क्षेत्र पर सीधी और सुस्पष्ट हो और उसमें कोई टूट-फूट या अनियमिततायें न हों, तो वैवाहिक जीवन सुखी होता है। यदि विवाह रेखा नीचे की ओर झुक जाती है तो जातक के जीवन साथी की मृत्यु उससे पहले होती है। यदि रेखा ऊपर की ओर उठ जाये तो जातक अविवाहित रहता है।



यदि विवाह रेखा अपने अंत पर नीचे की ओर मुड़ गई हो और कोई क्रास या छोटी रेखा इस प्रवाह को काटती हो तो किसी दुर्घटना या सहसा बीमारी से जातक के जीवनसाथी की मृत्यु हो जाती है। परंतु यदि लम्बे मुड़ाव के बाद हृदय रेखा से मिल जाए तो जीवन साथी की मृत्यु लम्बी बीमारी के बाद होती है।

यदि विवाह रेखा के आरम्भ में द्वीप का चिह्न हो तो जातक का विवाह विलम्ब से होता है, और विवाह हो जाये तो पति-पत्नी का मिलन काफी विलम्ब से होता है। यदि द्वीप चिह्न विवाह रेखा के मध्य में हो तो वैवाहिक जीवन के मध्य में पति-पत्नी का जीवन यातनापूर्ण हो जायेगा और वे एक दूसरे से अलग हो जायेंगे। यदि द्वीप चिह्न विवाह रेखा के अंत में हो, तो वैवाहिक सम्बंध का अंत हो जायेगा।

यदि विवाह रेखा के अंत में दो शाखायें बन जायें तो पति-पत्नी एक दूसरे

से अलग होकर रहेंगे। तलाक उस समय भी हो जायेगा जब नोकें झुकी हों और एक नोक बढ़कर मंगल के मैदान या मंगल क्षेत्र पर पहुंच जाय।

यदि विवाह रेखा छोटे-छोटे द्वीपों से पूर्ण हो या जंजीराकार हो तो ऐसे जातक को विवाह नहीं करना चाहिए। उसका वैवाहिक बंधन टूट जाता है या पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है।

यदि एक पतली रेखा विवाह रेखा से निकलकर सारे करतल को पार कर जाए तो पति-पत्नी में इतनी अधिक अनबन हो जाती है कि परस्पर मिलन और सद्भाव की कोई सम्भावना ही नहीं रहती है।

यदि विवाह रेखा स्वयं या उसकी कोई शाखा आगे बढ़कर सूर्य रेखा से मिलती है या उसके साथ ऊपर की ओर उठती है, तो यह निश्चित है कि जातक का विवाह किसी अत्यंत धनवान या प्रतिभाशाली व्यक्ति से होगा।

यदि विवाह रेखा नीचे की ओर मुड़कर सूर्य रेखा को काट दे तो यह योग इस बात का परिचायक है कि जातक विवाह, के कारण अपने स्तर से नीचे गिर जाएगा। यदि वह किसी उच्च पद पर है, तो पदच्युत हो जायेगा।

यदि कोई रेखा बुध क्षेत्र के ऊपरी भाग से आकर विवाह रेखा में मिल जाये तो जातक जब भी विवाह करना चाहेगा, उसमें बाधा पड़ेगी पर यदि विवाह रेखा बलवान हो तो जातक उन बाधाओं का सफलता पूर्वक सामना करने में समर्थ होगा।

यदि विवाह रेखा के ऊपर एक हल्की सी रेखा स्थित हो और बिल्कुल निकट हो तो यह समझना चाहिए कि विवाह के पश्चात् किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव पड़ेगा।

वे सब रेखायें जो अन्य क्षेत्र से विवाह रेखाओं की ओर जाती हैं उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनको जातक के विवाह में बाधा डालने में दिलचस्पी होती है। यदि ऐसी रेखायें शुक्र क्षेत्र से आयें तो वे वैवाहिक जीवन में झंझट उत्पन्न करने वालों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

विवाह क सम्बंध में प्रभाव रेखायें भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। पतली प्रभाव रेखायें जो भाग्य रेखा से मिलती देखी जाती हैं, उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो जातक के जीवन में उसके भाग्य पर प्रभाव डालती हैं। यदि जो प्रभाव रेखा भाग्य रेखा से मिलती हो, बहुत बलवान हो और उसी समय बुध क्षेत्र पर एक सुस्पष्ट विवाह रेखा हो, तो विवाह उसी समय होगा जब प्रभाव रेखा भाग्य रेखा से मिलती हो। यदि प्रभाव रेखा चंद्र क्षेत्र से आती हो तो खूब रोमांस के बाद विवाह होता है। ऐसी परिस्थिति में जातक का अपने प्रेमी या प्रेमिका से मिलना, घर से दूर या किसी पर्यटन के समय में होता है।

यदि प्रभाव रेखा में द्वीप चिह्न हो तो जातक के जीवन में आने वाले व्यक्ति के जीवन में कोई कलंक का पूर्व इतिहास अवश्य होगा। यदि प्रभाव रेखा के मिलन के बाद भाग्य रेखा दुर्बल या क्षीण हो जाये तो यह समझना चाहिए कि विवाह के कारण जातक के भाग्य को क्षति पहुंचेगी। यदि इसके विपरीत विवाह रेखा के मिलने के बाद भाग्य रेखा बलवान हो जाये तो विवाह के परिणाम स्वरूप जातक को उन्नति प्राप्त होगी। इस योग के साथ यदि सूर्य रेखा भी बन जाए तो जातक को बहुत धन-लाभ होगा और उसके मान और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

यदि प्रभाव रेखा भाग्य रेखा को काटकर अंगूठे की ओर बढ़ जाये तो वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होगा और अधिक दिन नहीं चलेगा। यदि कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा के निकट कुछ दूर तक उसके समानांतर चलकर और उससे मिले नहीं, तो किसी विशेष बाधा के आ जाने से विवाह रुक जाएगा।

यदि प्रभाव रेखा के अंत में द्वीप चिह्न हो तो जातक के जीवन पर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति अपने दुराचरण के कारण बदनाम हो जायेगा और उसे अपमानित होना पड़ेगा।

प्रायः कुछ रेखायें जीवन रेखा के समानांतर भी चलती दिखाई देती हैं, वे मंगल रेखायें नहीं होती हैं। बल्कि प्रभाव रेखायें होती हैं। ऐसी प्रभाव रेखायें उन व्यक्तियों के हाथों में होती हैं, जो भावुक या आवेशपूर्ण स्वभाव के होते हैं। यदि ऐसी भाव रेखायें संख्या में अधिक हों तो जातक के बहुत-से प्रेम सम्बंध होते हैं। जब तक प्रभाव रेखा, जीवन रेखा के समानांतर चलती रहे, तक तक उसका जातक पर प्रभाव रहता है।

वे रेखाएं जो विवाह रेखा के ऊपर की ओर उठती दिखाई देती हैं, संतान रेखायें कहलाती हैं। यदि उंगलियों के छोर से करतल के इस भाग को अच्छी तरह दबाया जाय तो संतान रेखायें स्पष्ट रूप से दिखाई दे जायेंगी।

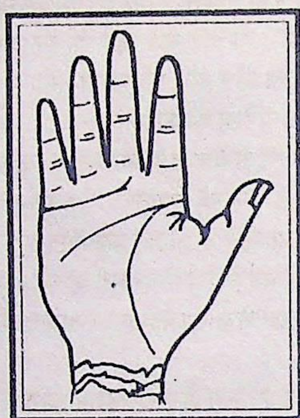
कभी-कभी तो ये रेखायें साफ-साफ दिखाई दे जाती हैं, विशेषकर स्त्रियों के हाथ में। कभी-कभी उनकी परीक्षा करने के लिए आतशी शीशे का इस्तेमाल करना पड़ता है।

चौड़ी और गहरी रेखायें पुत्र सूचक होती हैं, और पतली रेखायें पुत्री सूचक। जब रेखायें सुस्पष्ट और सीधी होती हैं। तो बच्चे स्वस्थ रहते हैं। जब वे रेखायें क्षीण या टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं, तो बच्चे दुर्बल होते हैं।

मणिबंध रेखाएः– हाथ जहां से प्रारम्भ होता है, कलाई और हथेली के मध्य कुछ रेखाएं होती हैं, ये रेखाएं गोलाई लिए हुए दो से चार तक होती हैं।

'समुद्र तिलक' में लिखा है कि यदि तीन रेखाएं कलाई के चारों ओर हों तो

वह व्यक्ति अतुल सम्पत्ति का स्वामी होता है। यदि इन तीन रेखाओं में चारों ओर यवमाला हो तो वह व्यक्ति राजा होता है। यदि कलाई के चारों ओर दो रेखाएं हों और यवमाला हो तो वह व्यक्ति मंत्री होता है। यदि एक सुंदर यवमाला हो तो वह व्यक्ति भौतिक जीवन व्यतीत करता है।



नोटः– यवमाला का तात्पर्य जंजीरदार मणिबंध मोती माला की तरह से है।

यदि हथेली पर मणिबंध रेखाएं नहीं हैं तो वह व्यक्ति साधारण किस्म का जीवन व्यतीत करता है। जिस नारी के हाथ में ये रेखाएं नहीं होतीं वह अभाग्यशाली होती है। जिन नारियों के हाथ में यह यवमाला होती है अपने जीवन में सुखी एवं सौभाग्यवती रहती है।

☆☆☆

हथेली पर उपस्थित अस्वास्थ्यकर चिह्न

हथेली पर अन्य ऐसे चिह्न जो व्यक्ति के स्वास्थ्य से संबंध रखते हैं, हम उनका भी इसी अध्याय में अध्ययन कर लेना चाहते हैं।

अस्वस्थाओं के चिह्न विभिन्न मुख्य रेखाओं पर उनके प्रकार के अनुसार पाए जाते हैं। जैसे मस्तिष्क-सम्बंधी बीमारियों के चिह्न मस्तक रेखा पर और रक्त सम्बंधी बीमारियों के चिह्न हृदय-रेखा पर मिलेंगे। इसके अतिरिक्त अवस्थाएं अपने लक्षण नाखूनों पर भी व्यक्त करती हैं। अध्ययन में इन सभी को देखना आवश्यक है और किसी भी भविष्यवाणी से पूर्व सम्बंधित चिह्नों को भली प्रकार देख लेना निरापद रहता है। आगे का विवरण इस क्षेत्र में कुंजी का काम करेगा।

मृत्युः—यह एक आमतौर पर पूछा जाने वाला प्रश्न है, लेकिन समझदार हस्त-रेखा शास्त्री इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही सावधानी पूर्वक देता है। बल्कि विद्वानों ने तो इस सम्बंध में भविष्यवाणियों पर प्रतिबंध लगा रखा है। मृत्यु एक ईश्वरीय विधान है, और इस पर मनुष्य का कोई वश नहीं है। इसके साथ ही यह एक एक ऐसा भय है जो प्रत्येक व्यक्ति के मन में किसी न किसी रूप में रहता है। यदि मृत्यु की भ्रमपूर्व भविष्यवाणी कर दी जाये तो आपका विषय मानसिक रूप से इस चिंता का शिकार हो सकता है, अतः जहां तक हो इस प्रकरण को टालिए। फिर भी बहुत सी-ऐसी बातें होती हैं, जो अप्रिय हैं, लेकिन उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता।

शनि के पर्वत से प्रारम्भ होती हुई हृदय रेखा, जिस पर मानव रेखा के मध्य के लगभग क्रास हो, यदि मानव रेखा और हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे अर्द्धवृत्त के रूप में मिलें; मानस-रेखा शनि रेखा को पार करने से पहले समाप्त हो जाए और उस पर क्रास हो तो असामयिक मृत्यु के लक्षण हैं।

नाखूनों पर पीली धारियां और दोनों हाथों में जीवन रेखा का समाप्त हो जाना निश्चित मृत्यु का लक्षण है। यदि जीवन रेखा महीन होती जाये और इस महीन भाग में उस पर विंदु भी हो तो व्यक्ति की अचानक मौत होती है। इसके अन्य लक्षण जीवन रेखा का कई शाखाओं में अंत और मानस रेखा का मणिबंध के पास नक्षत्र या क्रास में समाप्त होना है।

निम्न मंगल पर जाली, जीवन रेखा, मानस रेखा और हृदय रेखा का उद्गम

स्थल पर मिला हुआ होना और शनि रेखा के अंत में क्रास, बुध पर्वत पर जाली के साथ होना हिंसा से मृत्यु का लक्षण है।

जब यात्रा-रेखाएं मणिबंध से चलकर जीवन-रेखा में समाप्त होती हैं, तो प्रायः यात्रा में व्यक्ति की मृत्यु होती है। बुध अथवा चंद्र के पर्वतों पर वृत्त या चंद्र पर्वत पर पहुंचने वाली मानस रेखा का नक्षत्रीय अंत पानी में मृत्यु का चिह्न है। मंगल के उर्ध्व पर्वत पर नक्षत्र अथवा निम्न मंगल से शनि पर पहुंचती हुई रेखा युद्ध में अंत बताती है। जब शनि रेखा हृदय और मानस रेखाओं के बीच से शुरू होकर शनि की उंगली के तीसरे खंड में पहुंचती है तो व्यक्ति की मृत्यु कारागार में होती है। यदि शनि की उंगली के तीसरे खंड में नक्षत्र हो तो हत्या किये जाने का खतरा रहता है।

यदि कमजोर हथेली की मध्यमा का पहला खंड अधिक विकसित हो, अतिविकसित गुरु के पर्वत के साथ मानस रेखा स्वास्थ्य रेखा को छूती हो और शनि रेखा निर्बल हो तथा जीवन-रेखा कई रेखायें काट रही हो, चंद्र तथा शनि के पर्वतों पर नक्षत्र हों तो व्यक्ति में आत्महत्या कारक प्रवृत्तियां पाई जाती हैं। हथेली पर रेखाओं का सघन होना, चंद्र पर्वत का अधिक विकास और शुक्र वलय की उपस्थिति भी इन प्रवृत्तियों के लक्षण हैं। किंतु इस सम्बंध में कोई भी निष्कर्ष अंगूठे के देखे बिना न निकालें, क्योंकि वह इच्छा-शक्ति को अभिव्यक्त करता है जो जीने के लिए इतना बड़ा तथ्य है।

सामान्य स्वास्थ्य के लिए तीनों मणिबंधों का स्पष्ट होना जीवन रेखा का दीर्घ और सबल होना, तथा मानस व हृदय रेखाओं का निर्दोष होना आवश्यक है। बुध रेखा की अनुपस्थिति भी दीर्घायु के लिए एक कवच है।

यदि जीवन रेखा का प्रारम्भ एक द्वीप से हो रहा हो तो व्यक्ति को पैतृक बीमारियां भुगतनी होती हैं। जीवन रेखा पर कटाव बीमारियों का आम लक्षण है। मस्तिष्क-सम्बंधी बीमारियों के प्रायः सभी लक्षण मानस-रेखा पर ही मिलते हैं। यदि यह रेखा पीली हो और छिछली भी हो तथा इस पर काला बिंदु हो तथा जीवन रेखा प्रारम्भ में दो शाखाओं से मिलकर बनी हो तो मानसिक बीमारियों का अत्याधिक खतरा रहता है। यदि मानस रेखा काफी दूर तक जीवन रेखा के साथ चले और मानस रेखा के मार्ग में द्वीप हो तथा बुध रेखा मानस रेखा से मिलने के स्थल पर लाल हो जाये तो व्यक्ति को मानस ज्वर का खतरा रहता है। शुक्र के पर्वत से आकर यदि कोई प्रभाव रेखा मानस रेखा पर समाप्त हो जाए, शनि रेखा मानस रेखा पर अचानक खत्म हो जाये और मानस-रेखा लहरीली हो तो मानसिक बीमारियों का स्थायी खतरा रहता है। इसके अन्य चिह्न-मानस रेखा का बुध रेखा से मिला-जुला

होना, जीवन रेखा का प्रारम्भ में शाखित होना, और मानस रेखा में से जीवन-रेखा को काटना तथा चंद्र पर्वत का विकसित होना है।

चंद्र के पर्वत पर जाली की उपस्थिति उदासी से उत्पन्न मानसिक अस्थिरता को बताती है। यदि चंद्र पर्वत पर एक खराब हथेली में नक्षत्र हो तो हिस्टीरिया का चिह्न है।

दोनों हाथों में चंद्र पर्वत पर नक्षत्र जल-भीति (हाइड्रोफोबिया) के द्योतक हैं। यदि चंद्र के पर्वत पर चंद्राकार चिह्न हो, जीवन रेखा के अंत में कई मानस रेखा लहरीली हों और बुध पर्वत के नीचे घूमकर हृदय रेखा की ओर उठ रही हों, मानस-रेखा चंद्र पर्वत की ओर अचानक घूम गई हो, मानस रेखा शनि पर्वत के नीचे भंग हो गई हो और सशक्त चंद्र पर्वत पर उतर रही हो तो यह सारे चिह्न उन्माद की स्थिति दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त हृदय रेखा से चंद्र पर पहुंचती हुई प्रशाखा, चंद्र पर्वत पर मानस रेखा और बुध रेखा से बनता हुआ क्रास, अथवा मंगल के ऊर्ध्व पर्वत पर चंद्राकार चिह्न भी उन्माद के द्योतक हैं। अंतिम प्रकार हिंसात्मक हो जाता है।

चंद्र के पर्वत पर बिंदु विभिन्न स्नायविक बीमारियों का चिह्न है। बड़े नाखून, जिसका रंग नीलिमा लिये हुए हो, भी स्नायविक कष्ट बताते हैं। मानस रेखा पर द्वीप और जीवन रेखा को काटने वाली कई प्रशाखाएं स्नायू-शूल बनाती हैं यदि मानस रेखा कई स्थानों पर टूटी हुई हो तो स्मृति ह्रास का लक्षण है। छोटे, चपटे और पतले त्रिकोणात्मक नाखून तथा सभी मुख्य रेखाओं का दुर्बल होना पक्षाघात बताता है। यदि शनि रेखा के अंत में नक्षत्र हो और जीवन रेखा दोनों हाथों में नक्षत्र के साथ समाप्त हो रही हो तो पक्षाघात मृत्यु का कारण बनता है। हृदय रेखा पर नक्षत्र और बुध रेखा जहां मानस रेखा को छुये वहां उसका लाल रंग भी पक्षाघात बताता है। यदि दो रेखाएं हृदय रेखा से सीधी चंद्र पर्वत पर पहुंच रही हों तो यह मृत्यु का कारण बन जाता है।

यदि मानस रेखा पर दोनों हाथों में काला बिंदु हो और जीवन रेखा से निकलकर एक प्रशाखा चंद्र पर नक्षत्र के रूप में समाप्त हो रही हो तो सन्निपात बताती है। छोटे नाखून और काफी कटी-फटी मानस-रेखा मिर्गी का चिह्न है। मानस रेखा का हृदय रेखा की ओर उठना तथा बुध रेखा का जीवन रेखा से उदय समय-समय पर मूर्छा के दौरे आने का लक्षण है। लम्बे-चौड़े और नीलिमा लिये हुए नाखून अस्वस्थ्य रक्त-संस्थान बताते हैं। ऐसे हाथों की हृदय रेखा रंगहीन और छिछली होती है। यदि सूर्य रेखा शनि पर्वत से नीचे भंग हो जाए तो हृदय रोग का भीषण खतरा रहता है। छोटे वर्गाकार नाखून, छिछली और कांतिहीन हृदय रेखा, दुर्बल मानस रेखा और हृदय रेखा की अनुपस्थिति, सूर्य रेखा पर द्वीप तथा जीवन रेखा पर बीमारियों के

लक्षण, यह सब चिह्न-हृदय सम्बंधी अस्वस्थताएं बताते हैं यदि बुध रेखा प्रारम्भ में लाल हो तो भी हृदय रोग का खतरा रहता है।

मानस रेखा की ओर उतरती हुई हृदय रेखा और निर्बल बुध रेखा अस्थमा का चिह्न है। यदि शनि तक, एक शाखा जीवन रेखा से निकलकर पहुंचती हो और उसका अंत एक द्वीप में हो रहा हो तो यह प्लूरिसी का संकेत देता है। धारियों वाले संकरे नाखून और बुध रेखा पर कई द्वीप श्वास संस्थान में अस्वस्थताओं का लक्षण है। लम्बे किंतु पतले और छोटे नाखून गले की बीमारियां बताते हैं। जीवन रेखा पर बिंदु अथवा वृत्त, बुध रेखा पर क्रास, उसके निकट नक्षत्र सूर्य और हृदय रेखा के संगम स्थल पर काला बिंदु यह चिह्न अंधेपन के बताए गए हैं। चंद्र के पर्वत के शीर्ष का अधिक विकास श्लेष्मा की प्रधानता है। गुरु के पर्वत के नीचे मानस रेखा पर बिंदु बधिरता का लक्षण है।

चंद्र के पर्वत पर अधिक विकास, पर्वत पर एक गहरी रेखा जो दूसरी महीन रेखा द्वारा काटी जा रही हो और जीवन रेखा का द्विशाखित अंत, जिसमें से एक शाखा चंद्र पर्वत पर पहुंच रही हो-गठिया की आशंका बताते हैं। यदि बुध रेखा लहरीली हो और जीवन रेखा पर द्वीप हो, तो व्यक्ति पित्त दोष का शिकार होता है। निर्बल हृदय रेखा जो हथेली के पार्श्व पर पहुंच रही हो, बुध के पर्वत पर कई आड़ी रेखाएं जिन्हें पर्वत पर एक नक्षत्र से शुरू हुई रेखा काटती हो, जीवन रेखा शुक्र को संकरे घेरे में लेती हो और मानस तथा बुध रेखा एक नक्षत्र पर मिली हों, तथा मध्यमा के तीसरे खंड में नक्षत्र हो तो घ्यक्ति संतानहीन होता है।

रोगों के उपयुक्त विवेचन को इस दृष्टिकोण के-साथ प्रस्तुत किया गया है, कि पाठक अपने निरीक्षण में सहजज्ञान का नियंत्रण रखेंगे और किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व एकाधिक तत्वों को ध्यान में रखेंगे। बीमारियों की किस्में अनन्त हैं, और यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उन सबका विवरण किसी ग्रंथ में दिया जा सकता है। अतः श्रेष्ठ रीति यह है कि पाठक अपने विवेक और निरीक्षण से काम लें तथा अपने अनुभवों के कोष को निरंतर भरते रहें। हस्त-रेखा विज्ञान के अध्ययन में इसका बड़ा महत्व है, और एक विश्वस्त उपाय है।

☆☆☆

विशेष रेखायें और फल-अफल

1. रेखाएं साफ-सुथरी, स्पष्ट और लालिमायुक्त होनी चाहिएं।

2. पीले रंग की रेखा स्वास्थ्य क्षीणता और निराशावादी भावनाओं को व्यक्त करती है।

3. कटाव, द्वीप व क्रास आदि खराबियां उनके फल में न्यूनता लाती हैं।

4. लाल रेखाएं व्यक्ति के स्वस्थ होने का संकेत करती हैं।

5. हल्की रेखाएं भविष्य में आने वाले खतरों का संकेत देती हैं।

6. काली रेखाएं हीन भावना, दुःख और निराशा को व्यक्त करती हैं।

7. नीली रेखाएं बदला लेने की भावना व्यक्त करती हैं।

8. गुलाबी रेखाएं व्यावहारिक एवं सफलता की द्योतक हैं।

9. यदि किसी रेखा के साथ सहायक रेखा चल रही हो तो उस रेखा को विशेष शक्ति मिलती है।

10. यदि कोई मुख्य रेखा किसी स्थान पर टूट जाती है, और टूटे हुए स्थान के पास सहायक रेखा दिखाई दे तो उस रेखा का पूर्ण फल प्राप्त होगा।

11. यदि जीवन रेखा समाप्ति से पूर्व दो भागों में विभक्त हो जाती है तो ऐसे व्यक्ति को श्वास रोग होने की सम्भावना होती है।

12. यदि कोई रेखा समाप्त होने से पूर्व दो भागों में विभक्त हो जाती है, तो वह रेखा श्रेष्ठ फल देती है।

13. यदि कोई रेखा अंतिम सिरे पर कई रेखाओं में विभक्त हो जाती है तो उसके फल में न्यूनता आ जाती है।

14. यदि किसी रेखा से कोई शाखा ऊपर की ओर जा रही हो तो उस रेखा के फल में वृद्धि होगी।

15. यदि किसी रेखा से कोई शाखा निकलकर नीचे की ओर जा रही हो तो उस रेखा के फल में न्यूनता आ जाएगी।

16. विवाह रेखा से कोई सहायक रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो तो शीघ्र विवाह होगा।

17. विवाह रेखा से कोई सहायक रेखा निकलकर नीचे जा रही हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु शीघ्र हो जाएगी।

18. मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा ऊपर की ओर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति

अंवेषण करता है।

19. सूर्य रेखा से कोई शाखा ऊपर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति असाधारण ख्याति अर्जित करता है।

20. जंजीरनुमा रेखा अशुभ होती है।

21. जीवन रेखा से निकलकर कोई शाखा गुरु पर्वत पर जाती है तो ऐसा व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है। यदि रेखा स्पष्ट लालिमायुक्त हो तो आकांक्षाओं की पूर्ति अवश्य होगी यद्यपि कुछ विलम्ब हो सकता है।

22. हृदय रेखा की कोई शाखा जीवन रेखा से जा मिलती है तो उस व्यक्ति के प्रेम-प्रसंग सदा ही असफल होंगे।

23. विवाह रेखा जंजीरनुमा होने पर प्रेम में असफलता, प्रणयविच्छेद होता है।

24. मस्तिष्क रेखा जंजीरनुमा है तो व्यक्ति शंकालु चित्त वाला होता है।

25. मस्तिष्क व हृदय रेखा मोटी व भद्दी है, तो व्यक्ति अतिस्वार्थी होता है।

26. लहरियादार रेखा फल में न्यूनता लाती है।

27. टूटी हुई रेखा अशुभ फल देती है।

28. सूक्ष्म रेखा फल में न्यूनता लाती है।

29. रेखाओं के मार्ग में द्वीप का होना अशुभ फलकारक है।

30. रेखाओं के मार्ग में वर्ग का होना फल में वृद्धि करता है।

31. रेखा पर आयत होना फल में वृद्धिकारक है, और कुप्रभाव क्षीण करता है।

32. रेखाओं के मार्ग में बिंदु का होना कुप्रभाव का संकेत करता है।

33. रेखा पर त्रिकोण का चिह्न फल वृद्धिकारक है।

34. रेखा पर आड़ी रेखायें कुप्रभाव उत्पन्न करती हैं।

35. रेखा पर क्रास का होना अत्यंत अशुभ है।

36. सूर्य रेखा पर नक्षत्र का होना असाधारण ख्याति देता है।

37. मोटी रेखाएं दुर्बलता तथा मानसिक कमजोरी व्यक्त करती हैं।

38. पतली रेखाएं शारीरिक श्रम करने की क्षमता अधिक देती है।

39. ढलवां रेखाएं शुभ फल देने वाली होती हैं।

40. गहरी रेखायें यदि मध्य में हल्की और धुंधली हो जाती हैं तो आकस्मिक दुर्घटना देती हैं।

41. रेखाओं का कहीं पतला, कहीं मोटा होना असफलता का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति को समय-समय पर धोखा भी मिलता रहता है।

42. रेखाओं पर जाल होना कुप्रभाव कारक है।

43. रेखा पर वृत्त का होना अशुभ है।

44. आयु रेखा पर नक्षत्र होना आकस्मिक मृत्यु का द्योतक है।

45. स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र का होना मृत्यु तुल्य कष्ट देता है।

46. हृदय रेखा पर नक्षत्र का होना हृदय रोग का सूचक है।

47. यात्रा रेखा में नक्षत्र होने पर यात्रा में मृत्यु।

48. यात्रा रेखा में नक्षत्र का होना आत्महत्या का द्योतक है, परंतु मंगल पर्वत पर नक्षत्र का होना अपूर्व साहस व असाधारण ख्याति देता है।

49. रेखाओं पर काला तिल अत्यंत अनिष्टकारी है।

50. जीवन रेखा पर यदि काला तिल है तो टी. बी. का रोग होता है।

51. यदि आड़ी रेखाएं जीवन रेखा को काटती हैं, तो उस व्यक्ति को जीवन भर पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करना पड़ेगा।

☆☆☆

हाथ में उपस्थित वलय

शुक्रः—यह द्वितीया के चद्रमा के समान विभिन्न हाथों में भिन्न-भिन्न प्रकार से पाया जाता है। इसके उद्गम व अवसान स्थान निम्न प्रकार से पाये जाते हैं—

शुक्र मुद्रा वह होती है, जो गुरु पर्वत से आरम्भ होकर लम्वाई में अंडाकार हृदय रेखा से ऊपर बुध पर पहुंचते-पहुंचते समाप्त होती है।

शुक्र मुद्रा वह होती है जो तर्जनी व मध्यमा के मध्य से उत्पन्न होकर धुनषाकार, अनामिका व कनिष्ठिका के मध्य भाग पर जो रिक्त स्थान है, उस पर पहुंचकर समाप्त होती है।

शुक्र मुद्रा वह है जो मध्यमा व अनामिका को ही वृतांश में घेरकर समाप्त हो जाती है।

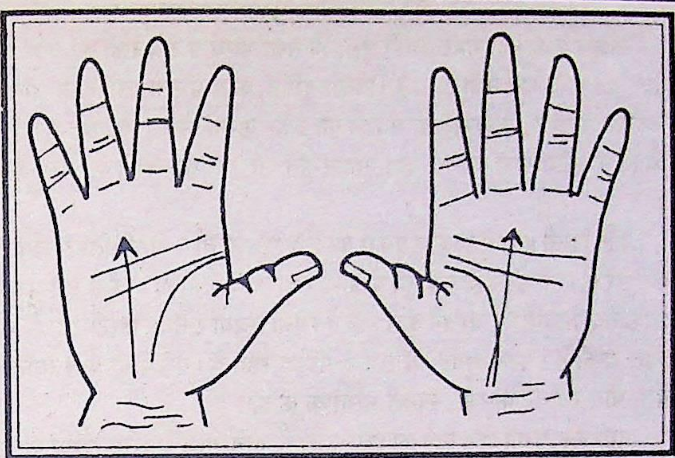
शुक्र मुद्रा वह होती है, जो तर्जनी से आरम्भ होकर अर्ध या चतुर्यांश भाव के सदृश्य शनि-रवि क्षेत्रों में होती हुई कनिष्ठिका पर समाप्त होती है।

यह रेखा कई बार हृदय रेखा के अभाव की भी पूर्ति करती है शुक्र मुद्रा किसी हाथ में, एक किसी हाथ में दो-तीन या चार तक पाई जाती है। किसी हाथ में दो समानांतर, वृत्ताकार रेखाओं के रूप में तो, किसी-किसी हाथ में दो टुकड़े होकर चार रेखाओं के रूप में पाई जाती है।

प्रायः देखा गया है कि इस रेखा की प्रमुखता वाले व्यक्ति स्नायुविक निर्वलता के कारण विक्षीप्तावस्था तक में पहुंच जाते हैं। यह रेखा अधिक प्रभावशाली न हो तो भी मानसिक अस्वस्थता तो दे ही देती है। वह अनैतिकता की ओर चला जाता है। मानसिक उत्तेजना व अश्लील विचारों का बाहुल्य व वासना की प्रवलता रहती है।

जो शुक्र मुद्रा केवल शनि व सूर्य क्षेत्र को ही हाथ में घेरती है और हाथ बनावट के आधार पर अशुभ हो, शुक्र व चंद्र भी दूषित हों, उसके अतिरिक्त मंगल रेखा भी गहरी, चौड़ी फैली हुई तथा लाल सुर्ख रंग की हो तो मनुष्य दुराचारी, लम्पट तथा चरित्रहीन होता है।

यह रेखा अपनी निर्दोष अवस्था में भी उतनी प्रभावशाली नहीं होती है जितनी सदोष अबस्था में होती है। शुभ रेखा का प्रभाव तो कम होता है, परंतु अशुभ रेखा का फल अधिक होता है। इसका कुप्रभाव शरीर में अवयवों पर पड़े या न पड़े पर मस्तिष्क पर अवश्य पड़ता है।



जो मस्तिष्क विकार से पीड़ित रहते हैं, उन्हें किसी स्वाभाविक वात में उतना आनंद नहीं आता है, जितना काल्पनिक बातों में। इसीलिए यह अपनी इच्छा शक्ति के अधिक आधीन रहते हैं। इसी प्रकार कहीं शनि क्षेत्र अधिक विकसित हुआ तो सभी गुण कम हो जाते हैं, चित्त में समाज या व्यक्ति के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है।

यदि किसी हाथ में यही शुक्र मुद्रा पतली, निर्दोष हो और किसी भी रूप में भाग्य और सूर्य रेखा को न तो स्पर्श करती हो और न उन्हें काटती हो तो किसी-न-किसी प्रकार से कुछ फलदायक अवश्य होती है। ऐसा मनुष्य समझदार, चतुर प्रकृति प्रेमी रहता है।

यह रेखा यदि अपने स्थान से कुछ हटी हुई हो, शनि से बुध क्षेत्र तक अपना मार्ग बनाती हो तो जातक वासना में पड़ा रहकर नैतिकता व विवेक को भूल जाता है तथा अपयश का कारण बनता है।

शुक्र रेखा निर्दोष हो तो बुद्धि की प्रखरता रहती है। फलतः मनुष्य दार्शनिक, साहित्यिक, काव्य प्रेमी, संगीतज्ञ होता है। सुरा व सुंदरी के फेर में अंततः किसी प्रकार पड़कर विपरीत फल प्राप्त करता है।

स्नायुविक निर्बलता का मुख्य कारण इस रेखा द्वारा भाग्य रेखा व यश रेखा का काटा जाना होता है।

शीर्ष व जीवन रेखा स्वस्थ्य, सुंदर, सुगठित, सुंदर हो तथा वृहस्पति, शुक्र के क्षेत्र विकसित हों तो जातक पर शुभ प्रभाव विशेष रहते हैं। इस दशा में इसके द्वारा सूर्य रेखा व हृदय रेखा के गुण बढ़ जाते हैं, फलतः व्यक्ति पर चारित्रिक नियंत्रण के साथ स्नायुविक संवेदनशीलता की वृद्धि होती है।

अशुभ शुक्र मुद्रा गहरी-चौड़ी लाल हो तथा भाग्य व सूर्य रेखा को काटे तो व्यक्ति की बुद्धि-धन नाश होता है। विचार दूषित, काम में उतावला, काम लोलुप व बदनाम होता है। भावनात्मक संवेदन को प्रकट करना इसका निश्चित गुण है। साथ ही मानवीय गुणों करुणा, दया, सहानुभूति, उदारता धैर्य आदि को जन्म देती है।

यदि किसी हाथ में निकृष्ट प्रकार की शुक्र मुद्रा हो तो व दोहरी-तिहरी-चौहरी एक दूसरे के समानांतर हो एवं सूर्य व भाग्य रेखा को काटती हो तो ऐसे स्त्री-पुरुष अप्राकृतिक नियमों को बरतने वाले होते हैं। ऐसी स्त्रियां रतौंधी, हिस्टीरिया से भी पीड़ित रहती हैं। पुरुष मृगी जैसे रोग से पीड़ित रहते हैं। ऐसे रोगों वाले व्यक्ति दुर्बल, पीत रंग के, कमजोर निर्बल मस्तिष्क के होते हैं।

दाहिने हाथ की शुक्र मुद्रा को इधर-उधर से आने वाली अवरोध रेखाएं काटें, तो वह व्यक्ति कामांध होकर यश-कीर्ति खो देता है। भाग्य रेखा भी इसके साथ खंडित हो तो भाग्यहीन, रवि खंडित हो तो कर्महीन बनता है।

शनि वलयः—यह रेखा बृहस्पति व शनि रेखाओं के बीच में से निकलकर शनि को घेरती हुई सूर्य क्षेत्र तक पहुंचती है। ऐसा व्यक्ति कभी कर्म क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता। शनि के दुर्गुण के प्रभाव बढ़ जाते हैं। आजीविका के लिए मारा-मारा फिरता है। बार-बार घाटा उठाता है, एवं व्यापार बदल-बदल कर करता है।

उर्ध्व मंगल की निर्बलता के साथ अंगूठे का छोटा होना बुध रेखा पर शीर्ष रेखा का सदोष होना ऐसा लक्षण है, जो निराशा का कारण बनता है, वह आत्महत्या की ओर उन्मुख होता है।

इस सब का कारण है अस्थिर मनोवृत्ति, धैर्य भाव जो शनि के दुष्प्रभाव से उत्पन्न होते हैं। उनकी कोई योजना सफल नहीं होती है। निराश हो ऐसा व्यक्ति आत्महत्या तक का प्रयास करता है।

कई अपराधियों के हाथों में यह रेखा होती है। इसका कारण शनि क्षेत्र को पूर्णतः काटना है, जिसमें उस स्थान पर शनि के श्रेष्ठ प्रभावों को बाधा उत्पन्न होती है। व्यक्ति की मनोवृत्ति अपराधी हो जाती है।

सुगठित व सुपुष्ट अंगूठे के साथ बृहस्पति, शुक्र और सूर्य क्षेत्र के सबल होने पर शनि दोषों का शमन होता है।

यदि वलय पूर्ण होने से पहले ही टूट जाये, तो शुभ लक्षण समझना चाहिए। इसके कारण शनि रेखा का शुभत्व बचा रह जाता है। परिणाम स्वरूप मनुष्य अधिक असफल या निराश नहीं होता है।

शनि वलय के साथ दोष पूर्ण मंगल क्षेत्र और बुध रेखा की निर्बलता साहसहीन की परिचायक है। ऐसा व्यक्ति आत्म-ग्लानि के कारण अनेक बुरे विचारों की ओर अग्रसर होता है, जिसमें असफल आत्मघात या अर्द्ध विक्षिप्तता भी सम्मिलित है।

उक्त दोषं के साथ यदि निर्बल बुध रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो यह साहसहीनता का प्रतीत होता है। ऐसा व्यक्ति अन्याय सहन करता हुआ भी उसके विरुद्ध साहस नहीं जुटा पाता व आए दिन नीचे गिरता जाता है।

हाथ का कोमल व ढीला होना, शीर्ष रेखा भद्दी व मंगल क्षेत्र की दुर्बलता मनुष्य को शनि रेखा द्वारा प्रभावित करने वाले लक्षण हैं। यदि शनि रेखा की उपस्थिति में शीर्ष रेखा प्रबुद्ध हो या शाखाएं चंद्र क्षेत्र की ओर झुक रही हों तो व्यक्ति कल्पना प्रधान होगा। वह दिमागी घोड़े दौड़ाता रहता है या रेत का महल बनाता है। अतः प्रायः निराशा होने से दुःखी होता है।

मंगल का उच्च व निर्दोष होना शनि प्रभाव को दबाये रखता है। ऐसा व्यक्ति साहस के बल पर आगे बढ़ता है पर असफलता से निराश नहीं होता।

शनि रेखा के साथ शीर्ष रेखा पर द्वीप होना क्षणिक विचारों का द्योतक है। इसके कारण मनुष्य अपने को कभी स्थिर नहीं कर पाता है, परिणामतः असफलता ही हाथ आती है।

भाग्य रेखा या सूर्य रेखा का दोष युक्त या खंडित होना शनि रेखा के प्रभाव को बढ़ा देता है। कार्य में मन नहीं लगता वह बदल-बदल कर व्यापार करता रहता है।

गुरु वलयः–गुरु व शनि की उंगलियों से निकलने वाली यह छोटी रेखा गुरु क्षेत्र के बाह्य किनारे को स्पर्श करती हुई जीवन रेखा आरम्भ होने के स्थान के ऊपर के भाग में समाप्त हो जाती है। इस प्रकार बृहस्पति क्षेत्र की मुद्रिका के सामने घेरने के कारण ऐसी रेखा को गुरु वलय कहा जाता है।

इस रेखा का प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क पर गूढ़ विद्याओं के ज्ञानार्थ पड़ता है। ऐसा जातक उन विद्याओं के अध्ययन से प्रेरित होता है, उनमें भावनाओं की अधिकता होने के कारण मनोविज्ञान के प्रति भी कम अभिरुचि नहीं होती है। यदि अनेक रेखाएं विभिन्न दिशाओं से उठती हों, तो वह लक्षणों की दृढ़ता को ही व्यक्त करती हैं।

ब्रह्म-ज्ञान या आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए भी योग्यता होनी चाहिए। जिनकी तर्क शक्ति प्रबल है, उनमें अध्यवासय की प्रवृत्ति भी हो सकती है। यदि यह सरल है, तो सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। गुरु वलय भी उन्हीं को अधिक सफल बनाता है।

सशक्त गुरु रेखा के साथ उंगलियों के वर्गाकार सिरे और गांठदार जोड़ों से युक्त उंगलियां मनुष्य को महान् बना सकती हैं। यदि उनमें अध्ययन व तर्क करने की प्रवृत्ति हो तो यह लक्षण सफलता व्यक्त करती है। यदि शीर्ष रेखा भी सशक्त है, तो यह अपने फल को अच्छे स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहती है।

इस रेखा का सुंदर होना निपुण व्यक्ति का परिचायक है, ऐसा जातक साहस, संकल्प करे तो सफलता अवश्यंभावी है। वह व्यक्ति आलसी न हो यह आवश्यक है।

गुरु वलय अकेला कुशल व्यक्तित्व का परिचायक नहीं यदि उसके लक्षण अनुकूल न हों।

गुरु वलय की दृढ़ता मनुष्य की कल्पना-शीलता को प्रोत्साहन देती है। उस जातक को स्वप्न अधिक दिखाई देते हैं, और देवी संकेत के प्रति अधिक निष्ठा और निर्भरता उसे दिव्य-दृष्टि देती है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि मनुष्य अवश्य सफल ही होगा।

☆☆☆

रेखाओं का विभिन्न योग

कोई हृदय रेखा जो बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य व शनि पर्वत के नीचे से गुरु पर्वत तक पहुंचती है, यदि उसमें से कोई अन्य रेखा निकलकर ऊपर की ओर चढ़े वह व्यक्ति उतने ही साधनों से अर्थोपार्जन करता है।

बुध पर्वत निर्दोष, जाल, क्रास, स्टार, चौकोर आदि समस्त चिह्नों से मुक्त हो, मस्तक रेखा सीधी, जाल स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति लाखों का व्यापार करता है।

मस्तिष्क रेखा से निकलकर कोई शाखा बुध पर्वत पर पहुंचती है तो वह व्यक्ति बड़ा व्यवसायी होता है, पर इसमें उंगलियां विशेषकर बुध की उंगली सामान्य से लम्बी होना आवश्यक है।

शुक्र भोग, ऐश्वर्य, वाहन, भौतिक समृद्धि का प्रतीक है। अतः शुक्र पर्वत खूब ऊंचा उठा, उभरा हुआ, दोष मुक्त, व्यर्थ के चिह्नों से मुक्त सूर्य सफलता, यश मूलक होने से सूर्य रेखा, साफ, हृदय रेखा पार करती हुई, बिना काट छांट के होने का अर्थ है वह व्यक्ति जीवन में लाखों से खेलेगा। वस्त्राभूषण, वाहन, चाकर, ऐश्वर्य व समस्त भोग प्राप्त करेगा।

जीवन रेखा, भाग्य रेखा, सूर्य रेखा तीनों स्पष्ट, पतलीदृढ़ व सुंदर होने का अर्थ है, उस पर लक्ष्मी व सरस्वती दोनों की विशेष कृपा है। वह अथाह सम्पत्ति का स्वामी, मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला विदेशाटन कर, समाज में सम्मानित जीवन पाता है।

ऊखल में नाज कूटने का मूसल होता है। एक मोटे डंडे के आकार का, जिसका अग्रभाग दोनों ओर से चपटा मध्य में पकड़ने के लिए छोटा ऐसा आकार हाथ में होने का अर्थ है वह व्यक्ति कहीं भी जाये यश व सम्मान पायेगा। उसकी शाख में नौकरी में अधिकारियों की कृपा बनी रहती है। वह स्वयं प्रशासनाधिकारी बन जाता है। अर्थाभाव से भी मुक्त रहता है।

जिसके आठ उंगलियों, दो अंगुष्ठ में से चार पर शंख या चक्र हो तथा पांव में ऊर्ध्व रेखा हो, वह व्यक्ति समाज सेवी तथा उच्चस्तरीय जीवनयापन करता है। महाभाग्यशाली एवं मृदु स्वभाव, सौम्याकृति का धनी होता है।

मणिबंध (कलाई) के ऊपर, वलय के बाद मछली की पूर्ण आकृति होने का अर्थ है, ऐसा जातक स्वकार्य दक्ष, चतुर, दूरदर्शी, विद्वान, सुशिक्षित व सुसंस्कृतज्ञ,

उदार, परोपकारी, जननायक, उच्चपद का अधिकारी होता है।

हाथ में कहीं पर भी परंतु किसी भी रेखा को बिना स्पर्श किये हुए छाते का निशान हो, तो जातक स्वपुरुषार्थ से समस्त अभावों को ठेलकर उन्नति पर उन्नति करता जाता है। ऐसा जातक यश, मान, ऐश्वर्य पाते हुए कुटुम्ब का पालक होता है।

दो मणिबंध रेखाओं के मध्य कहीं भी बिंदु लाल या सफेद हों पर धब्बे के रूप में नहीं अपितु शून्य रूप में (0) हों तो वह व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न, स्पष्ट भाषी, सद्भाव युक्त, जननायक, दयालु व जन-हितैषी कार्य का यश पाता है।

आयु रेखा पर त्रिकोण है, तो ऐसे व्यक्ति की साधु प्रकृति होगी। एकांत-प्रेमी, ईश्वर भक्त, साधु संयासियों का साथ करने वाले, मातृभक्त होंगे।

यदि दो पर्वत व तत्सम्बंधी रेखायें स्पष्ट हों, सुंदर व निर्दोष हों तो जातक फल-विक्रय या कृषि कर्म, जलज वस्तु के व्यापार से लाभ प्राप्त करता है। पूर्ण ऐश्वर्य भोगते हुए ईमानदारी से ही जीवन यापन करता है। घर, कुटुम्ब, परिवार, जाति, समाज में जाना, माना जाता है। धर्मभीरू, ईश्वर भक्त तथा साधु-सेवी होता है।

यदि शनि पर्वत व राहु पर्वत भी निर्दोष एवं उभरे हुये हैं तो भी साधु भक्त व ईश्वर-भक्ति में रमने वाले होते हैं।

नाखूनों की जड़ में छोट-छोटे अर्द्धचंद्र हैं तो दीर्घायु सुशिक्षित, गुणवान, गुप्तभेद में जानकार, अर्द्धपक्ष से निश्चित व सदैव प्रसन्न रहने वाले हैं। उन्नति की एक-एक सीढ़ी चढ़कर अंततः उच्च स्थान पा लेंगे।

ध्यान रहे हाथ में 9 पर्वत सूर्य, चंद्र, मंगल हैं, बुध, गुरु, शनि राहु, केतु में से चार या पांच पर्वत भी भली प्रकार विकसित, साफ, निर्दोष, शुभ, चिह्नयुक्त, पुष्ट हों और राजा तुल्य ऐश्वर्य प्राप्त होता है। अभाव पास तक नहीं आ सकते हैं। समस्त ऐश्वर्यों का भोग करने में समर्थ होते हैं।

शनि पर्वत पुष्प व निर्दोष, सीधा खड़ा हो, शनि रेखा पतली व साफ-सुथरी हो, शुक्र पर्वत पुष्प, मांसल सुंदरता लिए हो, लालिमा युक्त हो, भाग्य रेखा शुक्र से ही प्रारम्भ हो और शनि पर्वत के मध्य भाग तक जा पहुंचे, तो ऐसा व्यक्ति अत्यंत उच्च स्तरीय व्यापार करनेवाला, धनवान, सुपुत्रवान, समाजसेवी, कामुक, पर जननेता बनता है।

करतल में कहीं भी, किसी भाव से क्रमशः सात भावों में राहु-केतु को छोड़कर अन्य ग्रह हों तो माली का योग होता है, हाथ में सातों पर्वत हृष्ट-पुष्ट व निर्दोष हों तो ऐश्वर्य भोगना है। जन सामान्य का वह नेतृत्व करता है।

हृदय रेखा के अंत से या जहां हृदय रेखा, मस्तक रेखा, जीवन रेखा मिले वहां से कोई रेखा बाहर ही बाहर गुरु पर्वत की अर्ध परिक्रमा करते हुये गुरु उंगली पर चढ़ जाये तो यह समझ लें कि ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी, किसी कार्य में असफल नहीं हो सकता। इसे सफलता रेखा कह सकते हैं।

हाथ के अनुपात में उंगलियां लम्बी हों, नाखून लालिमा लिए हों, नाखूनों की जड़ों में अर्द्धचंद्र हों, सूर्य रेखा हृदय रेखा को पार कर गई हो या मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करती हो, तो भाग्य रेखा का आरम्भ मणिबंध से ही, जीवन रेखा के पास से हो तो जातक शासकीय सेवा में उच्च पदाधिकारी, विद्वान व ईश्वर भक्त, विदेशाटन करने वाला, परम उधमी, सतत कार्यशील, यशस्वी, धनी, दीर्घायु तथा स्वस्थ होता है।

गुरु पर्वत उच्च हो परंतु बाहर की ओर या शनि की ओर नहीं झुका हो, गुरु पर्व पर जोड़ + का चिह्न हो व्यक्ति जीवन में निरंतर खूब उन्नति करता है। आजीवन ऐश्वर्य, आनंद सुख का भोग करता है। सौभाग्यशाली व संतान उन्नति में सहायक होती है।

चंद्र पर्वत बुध के ठीक नीचे, शुक्र के विपरीत विकसित हो तथा चंद्र रेखा टूटते रूप में या छोटे-छोटे रूप में बुध की ओर ऊपर की ओर बढ़ती हो तो जातक सम्पूर्ण ऐश्वर्य पाने वाला, धनी, सम्मानित, धर्मभीरु, ईश्वर-भक्त, जन सेवक, सद्‌गृहस्थ, सुपुत्रवान, भाग्यवान व उन्नत जीवन व्यतीत करने वाला होता है। वाहन, भृत्य, भूमि, भवन, वस्त्राभूषण, सुंदर मनोनुकूल पत्नी वह सब कुछ प्राप्त करता है।

बुध पर्वत पुष्ट, स्वस्थ उभरा हुआ व विकसित हो तथा बुध पर छोटे-छोटे बिंदुओं से जंजीर बन गई हो, पर वह कहीं से खंडित न हो, तो जातक स्वस्थ, नीरोग, दीर्घायु सौंदर्य प्रेमी, माननीय, सद्‌गुणी, परिश्रमी, मित्र सहायक, शत्रुहंता ही होता है।

तर्जनी (अंगुष्ठ के पास) अनामिका (सबसे छोटी के पास) से लम्बी हो, गुरु पर्वत पुष्ट व खूब उभरा हो तथा गुरु पर्वत पर स्वास्तिक का चिह्न हो, तो जातक ईश्वर भक्त, स्पष्ट भाषी, मृदुभाषी, दयालु परोपकारी, छल-प्रपंच से दूर, गृह त्यागी सा होता है। एकांतवास का वह पक्षधर होता है।

विकसित मंगल हो और उनसे निकली रेखाएं शनि-सूर्य या बुध में से किसी को स्पर्श करती हों, तो जातक निष्कपट, दृढ़ चरित्र, महान्, साहसिक कार्यों में अभिरुचि रखने वाला सैन्य विभाग की नौकरी करने उच्च पद प्राप्त करने वाला भौतिक सुख-सम्पदाओं से युक्त, चतुर, बुद्धिमान, लोकप्रिय होता है।

जैसे जन्म कुंडली में बुध व सूर्य कहीं भी एक ही राशि में स्थित होने पर बुधादित्य योग होता है, इसी प्रकार करतल में सूर्य व बुध पर्वत मिल गये हों तो ऐसा जातक स्वकार्य दक्ष, यशस्वी, धनी, दीनों पर कृपा करने वाला प्रसिद्ध तथा ऐश्वर्य भोगने वाला होता है।

सूर्य रेखा खूब बड़ी परंतु कई एक छोटी-छोटी रेखाओं से मिल कर बनी हो तो ऐसा जातक 30 वर्ष की आयु तक अत्यंत कष्टमय, असफल जीवन व्यतीत कर, 30 वर्ष के बाद निरंतर उन्नति करता है। जीवन में सुदीर्घ यात्राएं करता है। एवं देशाटन तक कर जाता है। भाग्योदय भी यात्रा से ही संभव होता है। ऐसा व्यक्ति आवश्यकता से अधिक स्वाभिमानी बन जाता है।

गुरु खूब विकसित व उच्च हो तथा गुरु से रेखा निकलकर वलय रूप में सूर्य तक जा पहुंचे तो वह व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त मोक्षपद की प्राप्ति करता है। वह आजीवन सदाचारी, धर्मात्मा, ईश्वर भक्त, सद्‌गुणी होता है।

महाभाग्यशाली है वह यदि उसकी भाग्य रेखा जीवन रेखा से दूर हटकर मणिबंध यानी राहु से प्रारम्भ होकर मध्यमा के प्रथम पौर को पार कर मध्य पौर तक जा पहुंचती है।

सूर्य सफलता का कारक, यश, मान का परिचायक, गुरु साहित्य का धनी चंद्र से मिलकर गज केशरी योग बनाता है। व्यक्ति के हाथ में उक्त तीनों पर्वत बलवान, उच्च व पुष्ट हों तथा चंद्र रेखा बुध की ओर जाती हो तो जातक साहित्योपार्जन के द्वारा अर्थलाभ पाता है, एवं साहित्यिक क्षेत्र में अग्रणीय रहता है। अथवा मणिबंध से कोई रेखा सीधे पर्वत को जाकर स्पर्श करे तो भी वह साहित्य सेवी होता है।

तर्जनी के ऊपरी पर्व पर, नाखून वाले भाग के दूसरी ओर वाले भाग पर + का चिह्न होने पर साहित्यकार होता है।

बुध पर्व पर तारे का चिह्न होने पर भी जातक साहित्य-सेवा करता है। वह अर्थ लाभ भी करता है।

मणिबंध रेखाएं तीन पूर्ण होने पर भी व्यक्ति सहित्योपार्जन करता है, यदि कोई रेखा मणिबंध से निकलकर शुक्र पर्वत तथा शनि पर्वत पर जाती हो, अथवा हाथ कमजोर व संकीर्ण हो तथा भाग्य रेखा एवं प्रणय रेखा दोषी हो तो स्त्री का बूढ़े व्यक्ति से विवाह होता है।

यदि राहु-शनि मंगल रेखाओं का मिलन परस्पर होता हो तथा उक्त दोनों ही पूर्णतः विकसित हों पर साथ में गुरु व सूर्य पर्वत अपने स्थान से च्यूत या पथभृष्ट हो तथा दबे हों तो जातक दब्बू, भीरू होता है। कोई भी उसे ठग सकता है। जीवन में कदम-कदम पर ठोकर खाता है। ऐसा व्यक्ति शंकालु, आशंकित, हीन भावनाओं

से पीड़ित होता है।

यदि विवाह रेखा अनेक स्थानों पर कटती हो, तो विवाह बाधा उपस्थित होती है। अथवा-चंद्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं हों व शुक्र पर्वत पर दो स्टार हों। शुक्र अर्थात् शुक्र रेखा से हृदय रेखा को कोई रेखा गई हो तो तलाक अवश्यम्भावी है।

भाग्य रेखा पर द्वीप हों! या विवाह रेखा के अंत में रेखाओं का गुच्छा बना हो मंगल, सूर्य तथा चंद्र रेखाएं परस्पर मिलती हों तथा सूर्य पर्व कमजोर, अविकसित, पुष्ट न हो, दबा हो तो माता चाहे जिस कारण से हो पुत्र को त्याग देती है। तब अनाथ रूप में बालक जीवन यापन करता है।

मंगल रेखा यदि आगे बढ़कर चंद्र पर्वत तथा चंद्र रेखा को दो में विभक्त करती हो तो बालक के जन्म लेने के बाद ही मां की मृत्यु हो जाती है।

यदि शुक्र एवं चंद्र पर्वत विकसित हों तथा शुक्र पर्वत के ऊपर से कोई रेखा निकलकर चंद्र स्थापित चंद्र रेखा से जा मिलती हो एवं सूर्य रेखा कमजोर हो तो वह कुंवारी मां बनती है।

जिसके हाथ में मस्तिष्क रेखा पर सफेद गोल बिंदु हो तो जातक नई-नई चीजों की खोज करता है। वह सफल आविष्कारक होता है। यदि सूर्य व बुध पर्वत विकसित हों तब भी ऐसा ही समझा जाना चाहिए।

यदि भाग्य रेखा साफ, पुष्ट, सीधी, स्पष्ट हो, सूर्य पर्वत पर पहुंचती हो तो जातक भाग्यवान होता है।

अथवा–

1. यदि भाग्य रेखा गुरु पर्वत से प्रारम्भ होती हो।
2. सूर्य पर तारे का चिह्न तथा भाग्य रेखा पुष्ट हो।
3. हृदय व मस्तक रेखा गुरु पर्वत के नीचे मिलती हों।
4. सूर्य रेखा के नीचे तारे का चिह्न हो।
5. यदि भाग्य रेखा शनि रेखा से चलकर गुरु के नीचे समाप्त होती हो, पर वहां सफेद रंग का बिंदु हो।
6. मणिबंध पर क्रास का चिह्न हो तथा वहां से सीधी भाग्य रेखा बनी हो।
7. मणिबंध की प्रथम रेखा जंजीरदार पर टूटी न हो तथा वहीं से ही भाग्य रेखा भी प्रारम्भ हुई हो।
8. दोनों हाथों में लम्बी स्पष्ट भाग्य रेखाएं हों।
9. दोनों हाथों में लम्बी स्वास्थ्य रेखाएं हों।
10. गुरु पर्वत पर एक सीधी खड़ी रेखा बनी हो।

शुक्र वलय हो तथा उसमें त्रिकोण का चिह्न हो तो सर्प के काटने से मृत्यु होती है।

शनि पर्वत पर तथा शनि रेखा पर दो-तीन या अधिक वृत्त चिह्न हों तथा शनि रेखा व मंगल रेखा का संबंध बन गया हो तो वह अंगहीन होता है।

गुरु-राहु की रेखाएं परस्पर मिल जायें तो जातक दुर्भाग्यशाली व्यर्थ संघर्ष करने वाला मंद-जड़ बुद्धि होता है।

स्वास्थ्य रेखा पर त्रिकोण हो तथा उस त्रिकोण से कोई रेखा प्रारम्भ होकर चंद्र पर्वत पर हो तो वह जातक जीवन में लंगड़ा अवश्य होता है।

व्यक्ति सर्वथा बहरा होगा यदि चंद्र पर्वत पर बहुत अधिक धब्बे बिंदु और आड़ी-तिरछी रेखाएं हों।

राहु व चंद्रमा की रेखाएं दृढ़ता से मिलती हों तो जातक जीवन भर परेशानियों से ग्रसित रहता है, जीवन में निरंतर बाधाएं आती रहती हैं। हीन भावना से ग्रसित वह उन्नतिं नहीं कर पाता है।

यदि सभी हथेली में शनि व बुध दोनों पर मुद्रा हो तो जातक अपने कार्य में चतुर, प्रसन्न चित्त, सद्गुणी, चापलूसों से घृणा करने वाला, घर व परिवार का प्रेमी, अभावों व कष्टों से मुक्त शत्रुहंता तथा धनी होता है।

यदि नाखून दुर्बल व पतले हों, जीवन रेखा कमजोर हो या वह नीचे झुकी हुई हो अथवा जंजीरदार हो तो ऐसा जातक सदैव रोगी ही बना रहता है।

यदि पर्वत पर वृत्त का चिह्न हो अथवा चंद्र पर्वत पर त्रिकोण हो या बुध पर बिंदु या त्रिकोण अथवा सितारा जल रोग व जलोदर का परिचायक है।

मस्तक रेखा सूर्य पर्वत के नीचे या शनि पर्वत के नीचे यकायक टूट जाने का अर्थ है जातक कहीं चोट लगने से अवश्य घायल होगा।

यदि पर्वत विकसित तथा सभी रेखायें पुष्ट सीधी-सरल व स्पष्ट हों तो व्यक्ति अपने कार्यों से प्रसिद्ध होता है। अपने ही कार्यों से वह एक विशेष स्थान बनाए रखता है। सदैव समाज का नेतृत्व करता है। सामाजिक व लोकोपकारी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। वाणी में ओजस्विता व लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रहती है। अनेक यात्रायें कर भाग्योदय को प्राप्त करता है। बार-बार यह विदेशाटन करता है। राजकीय सेवा में उन्नति के सर्वोच्च पद को प्राप्त कर लेता है। पारिवारिक दृष्टि से भी वह सफल रहता है।

हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करे तथा मस्तक रेखा के बीच में क्रास का गुणात्मक चिह्न हो व जीवन रेखा कहीं से कटी होने का अर्थ जातक की किसी दुर्घटना

में अकस्मात् मृत्यु होगी।

यदि भाग्य रेखा के प्रारम्भ में अनेक या 2, 3, 4, शाखाएं निकलकर नीचे की ओर जाएं तथा भाग्य रेखा मध्यमा के प्रथम पौर को पार कर आगे निकल जाने का अर्थ है, जातक अपराधी प्रवृत्ति का है। वह कभी भी जेल जा सकता है।

यदि भाग्य रेखा के आरम्भ में कोई बिंदु का चिह्न हो तो 12 वर्ष से पूर्व जातक कहीं से गिरकर चोट अवश्य खा चुका है या खायेगा।

मस्तक रेखा पर लाल स्टार मस्तिष्क रोग का परिचायक है, अर्थात् उसके सिर में चोट अवश्य ही लगेगी।

चौड़ी स्वास्थ्य रेखा अंत में टूट गई हो या किसी जड़ के समान हो तो व्यक्ति की वृद्धावस्था कष्टमय होती है।

यदि जीवन रेखा यकायक समाप्त हो गई हो या बीच में कहीं टूट गई हो और हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा से बने हुए त्रिकोण में क्रास या दो स्टार स्पष्ट करते हैं, कि उस व्यक्ति को फांसी की सजा मिलेगी।

जीवन रेखा जरूरत से ज्यादा मोटी व गुरु पर्वत के नीचे जंजीरदार होने से बलारिष्ट होता है अर्थात् 8-11 वर्ष की आयु तक वह बालक प्रायः रोग-ग्रस्त रहेगा।

यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हुई हों या जीवन रेखा के आरम्भ में तारा हो तो जातक कैंसर से पीड़ित होता है।

दो हृदय रेखायें हों तथा बीच में आपस में परस्पर मिल जाती हों या हृदय रेखा शनि पर्वत तक पहुंच गई हो, तो अवश्य हृदय रोग होता है।

मस्तक रेखा नीचे की ओर झुकी हुई या लहरदार दिखाई देती हो तो युवावस्था में भंयकर दुर्घटना अवश्य होगी।

जीवन रेखा के मध्य में कई रेखाएं नीचे की ओर गई हों तो उसका शरीर विकसित नहीं होता, उनमें हारमोन्स की कमी रहती है।

यदि हृदय रेखा शनि पर्वत के नीचे जाकर यकायक गुच्छेदार हो गई या टूट गई हो तो आकस्मिक मृत्यु होती है।

जीवन रेखा जहां से आरम्भ हो रही हो, वहीं पर द्वीप का चिह्न हो तो परम्परागत-वंशानुगत रोग जातक भोगता है।

मस्तक रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो और उस पर काले या नीले धब्बे हों, तो मस्तिष्क रोग के परिचायक हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा, से ही आरम्भ हो रही हो तथा मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा की ओर जा रही हो तो बार-बार मूर्छा व फिट्स या मिर्गी का दौरा पड़ता है।

दूसरी उंगली का पहला पौर खूब लम्बा हो या भाग्य रेखा के अंत पर तारे का निशान हो तो जातक को आत्महत्या की ओर प्रेरित करता है।

यदि नाखून लम्बे, पतले, मुड़े हुए, पीलापन लिऐ हुय हों और साथ ही मस्तिष्क रेखा पर कई छोटे-छोटे द्वीप हों तो क्षय रोग की संभावना बढ़ जाती है।

अनामिका के नीचे के पौर पर तारे का चिह्न हो तो पिस्तौल आदि अस्त्र से जातक आत्महत्या कर लेता है। या जहर खाता है या जलकर मरता है।

यदि मंगल पर्वत पर बहुत ज्यादा हल्की-हल्की रेखाएं दिखाई दें तो गुप्तांग रोग जातक को पीड़ा देते हैं।

शुक्र पर्वत यदि दबा हुआ हो, उस पर धब्बा हो तो जातक समय से पूर्व नपुंसकता को प्राप्त करता है। इन्हें संतान सुख नहीं होता है।

दोनों ही हाथों में शुक्र पर्वत तथा सूर्य पर्वत का लगभग अभाव रहने पर भी यही फल प्राप्त होता है। शुक्र पर्वत क्षेत्र पर यदि जाल हो, हृदय रेखा कमजोर हो पर ऐसा दोनों हाथों में हो, तो भी उपरोक्त फल होता है।

चंद्र रेखा चलकर मंगल क्षेत्र को छूती हो अथवा भाग्य रेखा चंद्र रेखा निर्दोष हों व उनका मिलन कहीं हो जाता हो तो जातक खूब संपूर्ण सम्पन्नता युक्त, ऐश्वर्यशाली, कलाविद्, धनोपार्जन में दक्ष, खूब चालाक होता है। कुटुम्बी जनों से उसकी कम ही निभती है। जीवन में एकाधिक स्त्रियों से सम्पर्क बराबर बना रहता है।

शुक्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित व्यक्ति को व्यभिचार योग देता है। पर इसके लिए हृदय रेखा लहरदार अवश्य हो।

हृदय रेखा पर द्वीप का चिह्न भी ऐसा ही फल देता है।

यदि भाग्य रेखा के अंत में कई एक शाखाएं निकलकर नीचे की ओर जा रही हों तो पुरुष/स्त्री विपरीत लिंग से अवश्य ही इतर संबंध जोड़ते हैं।

इस योग में दोनों रेखाएं पतली-साफ व निर्दोष होती हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा पर तारे का चिह्न हो तो जातक को संतान की प्राप्ति नहीं होती है।

☆☆☆

हाथ में उपस्थित 'ग्रह क्षेत्र'

करतल में ग्रह क्षेत्रों के नाम सात मुख्य ग्रहों पर आधारित हैं। सूर्य, चंद्र, शुक्र, बुध, मंगल, बृहस्पति और शनि।

ग्रह क्षेत्रों को ये नाम यूनानी विद्वानों ने दिये थे, उनके अनुसार यह ग्रह क्षेत्र सम्बंधित ग्रहों के गुणों से प्रभावित हैं। जैसे नीचे दिया गया है।

शुक्र–प्रेम, कामुकता और उत्तेजना।

मंगल–जीवन शक्ति, साहस, झगड़ना।

बुध–मानसिक भावनायें, व्यापार, विज्ञान।

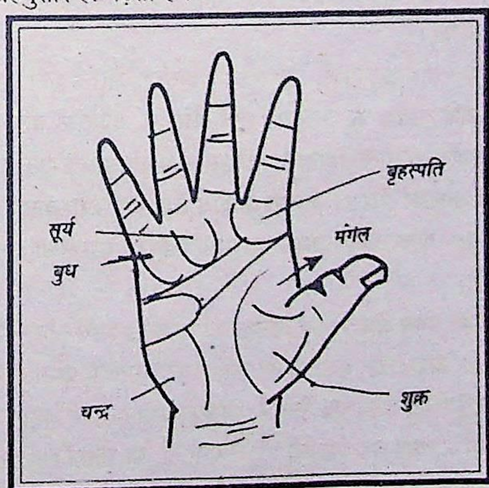
चंद्र–कल्पना, रोमांस, परिवर्तनशीलता।

सूर्य–प्रतिभा फलीभूत होना, सफलता।

बृहस्पति–महत्वाकांक्षा, अधिकार, प्रभुत्व।

शनि–संकोच, उदासीनता, गम्भीरता।

कीरो का मत है कि इन मुख्य ग्रहों का मनुष्य जाति से गहरा सम्बंध है। यद्यपि कीरो का इस पुस्तक में ज्योतिष की शिक्षा देने का अभिप्राय नहीं है, परंतु वह ग्रहों के मनुष्य जाति पर विचित्र प्रभाव के कुछ प्रमाण देना आवश्यक समझते हैं। ग्रहों का प्रभाव हाथ में ग्रह क्षेत्रों के आकार और स्थिति से प्रमाणित हो जाता है। ग्रहों का प्रभाव ग्रहनुसार ही पड़ता है।



खगोल शास्त्रियों और ज्योतिष विद्वानों की मान्यता है कि आकाश मंडल में चक्र एक सोलह अंश (डिगरी) का चौड़ा मार्ग है, जिसमें होकर सातों ग्रह भ्रमण करते हैं। यह चक्र तीन-तीन अंश की बारह राशियों या भावों में विभाजित है। सूर्य लगभग एक महीने में एक नयी राशि में प्रवेश करता है। बारह महीने में या एक सौर वर्ष में यह 360 अंश के पूरे चक्र वृत्त के भ्रमण को पूरा कर लेता है।

आकाश मंडल का सबसे रहस्यमय और जगत का जीवन दाता सूर्य हमारी पृथ्वी से 330,000 गुना बड़ा है। इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक नई राशि में प्रविष्ट होने पर सूर्य उस राशि के पृथ्वी पर आकर्षण शक्ति के कंपन को बदल देता है। इसलिए यह मानना अनुचित न होगा कि जिस व्यक्ति का जन्म अप्रैल में हो और जिसका जन्म मई में हो तो उसके गुणों में एक रूपता नहीं हो सकती है तथा दोनों के भाग्य एक से नहीं हो सकते हैं।

कीरो का मत है कि जैसा उसने ग्रक्षत्रों का विवरण देते समय लिखा है कि यदि जन्म की तारीख का प्रभाव भी ध्यान में रखा जाये तो करतल परीक्षा के बाद फलादेश अधिक सत्यता के साथ दिया जा सकता है। कीरो का कथन कहां तक यर्थात् है, इसका निर्णय आप स्वयं करेंगे।

मंगल क्षेत्रः– करतल में मंगल के दो क्षेत्र होते हैं—एक तो जीवन रेखा के आगे में उसके नीचे और दूसरा उसकी विपरीत दिशा में करतल के अंत में तथा हृदय और मस्तिष्क रेखा के बीच के स्थान में प्रथम क्षेत्र शारीरिक गुणों का प्रतीक है, और दूसरा मानसिक गुणों का।

प्रथम क्षेत्र यदि बड़ा हो तो आकारात्मक होता है, और उसका महत्त्व अधिक हो जाता है, यदि जातक का जन्म 21 मार्च और 21 अप्रैल के बीच में हुआ है।

दूसरा क्षेत्र नकारात्मक होता है, और उसका महत्व अधिक होता है यदि जातक का जन्म 21 अक्टूबर और 21 नवम्बर के बीच में हुआ हो और कुछ हद तक होता है, यदि जन्म 28 नवम्बर तक हो, वर्ष के इस भाग्य चक्र में मंगल का भाव (नकारात्मक) कहलाता है।

मंगल का प्रथम क्षेत्रः– जब जातक का जन्म 21 मार्च और अप्रैल के बीच हुआ हो या 28 अप्रैल तक हुआ हो तो जातक पर मंगल के प्रथम क्षेत्र का प्रभाव होता है। उसमें बौद्धिक स्वभाव होता है, जिसका प्रभाव उसके जीवन के हर पहलू पर पाया जायेगा, चाहे वह व्यापारी हो, सेनानी हो, या सामाजिक या राजनैतिक

नेता हो।

ऐसे लोग सब प्रकार से संघर्ष करने वाले होते हैं। उन्हें अपने किसी कार्य पर किसी का नियंत्रण पसंद नहीं होता है। उनमें नेता बनने की आकांक्षा होती है और वे किसी भी क्षेत्र को अपनी जीवन वृत्ति के लिए अपनायें, साधारण बुद्धि के होने पर भी उच्च पद पर पहुंच जाते हैं और भारी उत्तरदायित्व भी संभाल लेते हैं।

वे अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चयी और हठी बन जाते हैं। उन्हें आलोचना पसंद नहीं होती है, जो निर्णय कर लेते हैं उसी पर अड़े रहते हैं, और दूसरों की राय उनके सामने कोई महत्व नहीं रखती। वे अपने तरीके से काम करना पसंद करते हैं, और दूसरों का हस्तक्षेप उन्हें रुचिकर नहीं है। अपने घनिष्ठ मित्रों की भी परवाह नहीं करते यदि वे उन्हें उनकी बनाई योजनाओं को कार्यान्वित करने के विरुद्ध कुछ सलाह देते हैं। स्नेह, सब्र, दयालुता या कूटनीति ही से काबू में आ सकते हैं। यदि उन पर जबरदस्ती करने का जरा भी प्रयास किया जाय तो वे लड़ने मरने को तैयार हो जाते हैं। उनका क्रोध भी बहुत होता है, जिसका गुब्बार शीघ्र ही ठीक हो जाता है। क्षणिक आवेश में अपने पर नियंत्रण खो बैठते हैं, परन्तु उसके बाद पश्चाताप का अनुभव करते हैं। वे आवेशात्मक तो जरूर होते हैं, परन्तु मन से सज्जन और उदार होते हैं यदि ऐसे व्यक्तियों के हाथ में मस्तिष्क रेखा सीधी और सुस्पष्ट न हो तो अपने आप पर नियंत्रण खो बैठते हैं, आवेश और जल्दबाजी के कारण अपने आपको अनेक प्रकार की कठिनाइयों और संकटों में डाल देते हैं और सामने आये हुये सुअवसरों से मिलने वाले लाभ से वंचित हो जाते हैं। अधिकतर इस प्रकार के व्यक्ति प्रेम में और घरेलू जीवन में सुखी नहीं होते हैं। उनका मिलन बहुत कम ऐसी स्त्रियों से होता है, जो उन्हें समझ सकें और उन्हें यदि भाग्य से अपनी पत्नियों से विरोध न मिले, तो बच्चों से तो विरोध अवश्य ही मिलता है।

ऐसे व्यक्तियों को चाहिए कि वह शांत रहें और अपने ऊपर निरंतर नियंत्रण रखने का प्रयत्न करें। मद्यपान तथा नशीले पदार्थों के सेवन से (जो उनकी कमजोरी होती है) दूर रहें, और लोगों से अधिक उन्हें सोना चाहिए। अपने व्यस्त जीवन से मनोरंजन के लिए भी उन्हें कुछ समय निकालना चाहिए और खुली हवा में चहलकदमी करनी चाहिए।

यदि ये लोग अपने अवगुणों पर नियंत्रण पा जायें तो सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंचने में समर्थ हो सकते हैं।

मंगल का दूसरा क्षेत्रः– मंगल का दूसरा क्षेत्र करतल के किनारे हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच में होता है। वह अधिक महत्त्व का होता है, यदि बालक

का जन्म 21 अक्टूबर से 21 नवम्बर और 28 नवम्बर तक हुआ हो। वर्ष का यह भाग नकारात्मक मंगल का भाव भी कहलाता है।

ऐसे व्यक्ति स्वभाव में प्रथम मंगल क्षेत्र से प्रभावित व्यक्तियों से बिल्कुल विपरीत होते हैं। मंगल के जो भी गुण होते हैं, वे इनमें मानसिक रूप के होते हैं। मानसिक रूप से साहसी होते हैं, पर उनमें शारीरिक साहस से अधिक मानसिक साहस होता है। उन्हें लड़ाई-झगड़े पसंद नहीं होते और हिंसा और रक्तपात से बहुत दूर रहते हैं। वे लड़ते हैं तो अपने मानसिक बल से और बातों को बीस करके। समझा-बुझाकर और तर्क कर के अपनी समस्यायें सुलझाते हैं। कम हठी नहीं होते हैं। अपने निश्चित ध्येय प्राप्त करने में दृढ़ होते हैं, परंतु उसके लिए वे किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते हैं। वे ऊपर से तो 'हां-हां' करते रहते हैं, पर अवसर पाते ही चालाकी से अपने प्रतिस्पर्धी को पराजित कर देते हैं।

ऐसे लोग योग्य नेता नहीं होते, योग्य संगठनकर्त्ता होते हैं। वे उन लोगों में से नहीं होते जो युद्धस्थल में लड़ते हैं, परंतु उन लोगों में से होते हैं जो युद्ध करने वाले सेनानियों का संगठन करते हैं। वही लोग होते हैं जो युद्धस्थल के पीछे लड़ाई के नक्शे, व्यूह आदि बनाते हैं और युद्ध के लिए आवश्यक समस्त सामग्री का प्रबंध करते हैं।

अपनी योजनाओं को सफल बनाने के लिए हर प्रकार की चालाकी और कूटनीति का इस्तेमाल करते हैं। वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में किसी भी प्रकार की नीति को अपना सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर शत्रु को पराजित करने के लिए विश्वासघात करने में भी संकोच नहीं करते हैं। यदि उनका किसी से मुकावला हो तो तलवार के स्थान पर विष का इस्तेमाल श्रेयष्कर समझेंगे।

इन लोगों में रहस्यपूर्ण आकर्षण शक्ति होती है जिसे वे बिना जाने बूझे दूसरों से व्यवहार करने में इस्तेमाल करते हैं। वे सफल सम्मोहन शक्ति वाले बन सकते हैं और गुप्त विद्याओं के प्रति बहुत रुचि होती है। यदि उनका मानसिक विकास पूर्ण हो तो वे अपने आपको भलाई के लिए उपयोग में लाते हैं तथा सफल वैज्ञानिक और चिकित्सक बन सकते हैं।

नकारात्मक मंगल से प्रभावित व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होते हैं और अनेक विषयों में योग्यता प्राप्त होने के कारण, किसी विशेष जीवन वृत्ति को अपनाना उनके लिए कठिन होता है। यदि हाथ में बलवान मस्तिष्क रेखा हो तो मानसिक प्रयत्नों से सम्बंधित कोई भी ऐसा काम नहीं है जिसमें सफल नहीं हो सकते। इन

लोगों में विचित्र गुण यह होता है कि जिस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, उनमें टिकते नहीं हैं। वास्तव में इतने परिवर्तनशील होते हैं कि वे अपने व्यवसाय को बराबर बदला करते हैं।

इन लोगों की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि जिस वातावरण में पड़ जाते हैं, उसी में बुरी तरह से रंग जाते हैं। उन्हीं लोगों की तरह बन जाते हैं, जिनकी सोहबत में पड़ जाते हैं। यदि वे बुरे लोगों की संगति में पड़ जाते हैं, तो वे केवल उनकी तरह ही नहीं बन जाते हैं अपितु कुकर्मों में उनसे भी अधिक बढ़ जाते हैं। इसी प्रकार यदि वे अच्छी संगति में पड़ जायें तो उनमें सद्‌गुणों का विकास तेजी से उत्पन्न होता है।

प्राचीनकाल में भारत में चक्र में इस प्रकार के व्यक्तियों के जन्म के समय को, यदि विकास बहुत कम हो तो अपनी दुम को समेटे बिच्छू का रूप दिया गया है और यदि विकास सिर आकाश की ओर उठा हुआ है। इन दो रूपों से इन व्यक्तियों के दो प्रकार के स्वभाव स्पष्ट हो जाते हैं। यदि वे नीच बन जायें तो उनसे अधिक भयानक और हानिप्रद कोई नहीं हो सकता। वे अपने दुष्कर्मों से अपने आप तक को नष्ट कर डालते हैं। दूसरी ओर यदि उच्च सदाचरण के हों तो आध्यात्मिक क्षेत्र में उन ऊंचाइयों तक को प्राप्त कर सकते हैं, कि सांसारिक बंधनों से उनका कोई सम्बंध तक न रहे।

नकारात्मक मंगल से प्रभावित लोगों की शैशवावस्था की ठीक तरह से देखभाल करनी चाहिए। जब वे बड़े हों तो उंन्हें कामुकता पर नियंत्रण रखने का उपदेश देना चाहिए और अनैतिक लोगों से और अश्लील पुस्तकों से दूर रखना चाहिए।

स्वास्थ्य के मामले में व्यक्ति जीवन के आरम्भ में कमजोर होते हैं परंतु मध्यावस्था में उनमें मोटापा आने लगता है। पुरुष और स्त्री दोनों जननेंद्रियों के शिकार बन सकते हैं, विशेषकर यौवन के दिनों में। मध्यावस्था पार करने पर उनकी पाचन क्रिया कमजोर हो जाती है और गुर्दे में विकार आने का भय रहता है। अपने समस्त जीवन काल में उन्हें अपने भोजन पर भी ठीक तरह नियंत्रण रखना चाहिए।

बृहस्पति क्षेत्रः– बृहस्पति क्षेत्र पहली उंगली के मूल स्थान में स्थित होता है। यदि वह सुविकसित हो तो जातक में दूसरों पर प्रभुत्व जमाने की, शासन करने की नेतृत्व और संगठन करने की तथा किसी उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने की आकांक्षा प्रबल होती है निर्बल हो या किसी प्रकार से दूषित हो तो सुविकसित बृहस्पति क्षेत्र

जातक में आवश्यकता से अधिक घमंड देता है, और वह स्वयं ही अपने गुणगान करने वाला बन जाता है। यदि बृहस्पति क्षेत्र अच्छा हो और हाथ में कोई दोष न हो तो जातक को सदाचरण और आत्मविश्वास से आशातीत सफलता प्राप्त होती है। जातक को जीवन में सफलता की ऊंचाइयों पर ले जाने वाले जितने गुण बृहस्पति क्षेत्र में होते हैं, उतने किसी अन्य ग्रह में नहीं होते हैं।

बृहस्पति क्षेत्र को आकारात्मक समझना चाहिए जबकि जातक का जन्म 21 नवम्बर और 20 दिसम्बर के बीच में और 28 दिसम्बर तक हुआ हो ऐसे व्यक्ति स्वभाव में महत्वाकांक्षी, निर्भीक और दृढ़ निश्चय वाले होते हैं। वे जो कुछ करते हैं, उसमें विरोध की परवाह नहीं करते। अपना कार्य वह एकाग्रता से करते हैं, सत्यनिष्ठ और उच्च सिद्धांतवादी होते हैं, और जो विश्वास उनके ऊपर किया जाता है, उसको पूर्ण करते हैं। वे धोखाधड़ी का घोर विरोध करते हैं और चाहे उनकी योजना नष्ट क्यों न हो जाये धोखाधड़ी करने वालों का भंडाफोड़ करके ही दम लेते हैं।

वे सफल व्यापारी बनते हैं और अपनी संगठन योग्यता से उच्च शिखर पर पहुंच जाते हैं। वे सरकारी कार्यालयों में उत्तरदायित्व के उच्च पद योग्यता के साथ संभालते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में कम प्रविष्ट होते हैं, क्योंकि पार्टीबाजी और उससे सम्बंधित योजनायें उनके स्वभाव के विपरीत होती हैं। अपना व्यवसाय या जीवन वृत्त चुनने में स्वतंत्र होते हैं। यह जरूरी नहीं समझते कि जो व्यवसाय उनके पिता कर रहे हैं, उसी में स्वयं लग जायें। यही कारण है कि अपने आरम्भिक जीवन में वे अपने माता-पिता के लिए चिंता का कारण बनते हैं। उनके माता-पिता के लिए यही उचित है कि ऐसे जातकों को अपना व्यवसाय चुनने में पूर्ण छूट दे दें।

इस प्रकार के व्यक्तियों में सबसे बड़ा दोष यह होता है कि वे अपने काम में इतना उत्साह और जोश दिखाते हैं कि सीमा को पार कर जाते हैं

इसके कारण प्रायः उन्हें हानि उठानी पड़ती है और वे अपने एक लक्ष्य को छोड़कर दूसरे लक्ष्य की ओर दौड़ने लगते हैं। यदि मस्तक रेखा सुस्पष्ट हो और सीधी करतल को पार करती हो तो उत्तरदायित्व का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसके उच्चतम शिखर पर ऐसे लोग न पहुंच जायें।

स्वास्थ्यः– ऐसे व्यक्ति गठिया या पाचन के विकारों के शिकार होते हैं। इन्हें जीभ की सोजिश, फुंसी-फोड़े तथा एग्जिमा जैसी त्वचा की बीमारियां भी हो सकती हैं।

बृहस्पति क्षेत्र नकारात्मकः– बृहस्पति क्षेत्र को नकारात्मक तब समझना चाहिए जब जन्म 19 फरवरी और 20 मार्च के बीच में और कुछ हद तक 28 मार्च तक हो। ऐसे व्यक्तियों में महत्वाकांक्षा मानसिक रूप धारण कर लेती है। ऐसे लोगों में मानसिक विकास अधिक होता है, व्यावहारिकता कम होती है। ऐसे व्यक्ति ज्ञानोपार्जन में अधिक दिलचस्पी लेते हैं और इतिहास, वनस्पति शास्त्र, भूगोल, भूतत्व विद्या आदि में शोध कार्य भी करते हैं।

इन लोगों में मानसिक रूप से महत्वाकांक्षा होती है, पर इतने आवेशात्मक होते हैं, और उनमें आत्मविश्वास की इतनी कमी होती है कि उन्हें अपनी योजाओं को कार्यान्वित करने में अत्यंत कठिनाइयां होती हैं। इस कारण जन साधारण की दृष्टि से अपने आपको छिपाये भी रहते हैं और कभी-कभी तो ऐसा होता है कि उनकी योजनाओं में पूर्ण होने का श्रेय दूसरों को मिल जाता है।

बहुत से साहित्यकार, संगीतकार और कलाकार इन तारीखों में जन्म लेते हैं। इन व्यक्तियों के हाथ में भी मस्तिष्क रेखा इस बात का निर्णय करती है, कि उनकी मानसिक इच्छा शक्ति किस हद तक उनको जीवन में सफलता दिखायेगी?

स्वास्थ्यः– ऐसे लोग निराशावादी होते हैं, और उन्हें नींद न आने की बीमारी होती है। वे गठिया तथा जिगर के विकास और पीलिया जैसे रोगों से भी पीड़ित होते हैं। उनके लिए आवश्यक है कि वे ऐसे स्थानों में रहें, जहां खुली हवा हो और खूब धूप आती हो। समय-समय पर उन्हें अपनी जलवायु भी बदलनी चाहिए।

शनि क्षेत्रः– शनि क्षेत्र दूसरी उंगली के मूल स्थान में स्थित होता है। इस क्षेत्र के मुख्य गुण हैं, एकांत-प्रियता, बुद्धिमानी, चुपचाप दृढ़ निश्चय करना, गम्भीर विषयों का अध्ययन करना और भाग्य पर विश्वास। यदि यह क्षेत्र बिल्कुल विकसित न हो तब जातक में छिछोरापन आ जाता है। यदि यह क्षेत्र सीमा से अधिक विकसित हो तो उसके गुणों में इतनी वृद्धि आ जाती है कि वह अवगुण बन जाते हैं।

शनि क्षेत्र को आकारात्मक तब समझना चाहिए जब जातक का जन्म 21 दिसम्बर और 21 जनवरी के बीच हुआ हो और कुछ हद तक यदि जन्म 28 जनवरी तक हुआ हो।

इन तारीखों में जन्म लेने वाले लोग बलवान, इच्छा शक्ति और मस्तिष्क के होते हैं पर अपने जीवन में अपने आपको एकाकी और दूसरों से अलग पाते हैं। स्वभाव से वे स्वतंत्र विचार के होते हैं और उन्हें अपने ऊपर दूसरों का नियंत्रण

पसंद नहीं होता है।

भाग्य और परिस्थितियों के हाथों में वे खिलौनों के समान होते हैं और बलवान इच्छा शक्ति होने पर भी वे उस पर अधिकार पाने में समर्थ रहा करते हैं।

यदि उनके प्रति कोई स्नेह या सहानुभूति प्रकट करे तो वे उसके लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं, परंतु अपने आपको सबसे अलग पाते हैं, इसलिए उन्हें विश्वास नहीं होता है कि उनका कोई ख्याल भी करता है।

अपने आपको धार्मिक न दिखाते हुए भी धार्मिक होते हैं और सदा जनसाधारण के लिए भलाई का काम करने के प्रयत्न में संलग्न रहते हैं, चाहे उसके लिए किसी प्रकार की मान्यता न भी प्राप्त हो।

प्रेम और कर्त्तव्य के सम्बंध में उनका ऐसा विचित्र दृष्टिकोण होता है कि जो उनके निकट आना चाहता है, उसको वह सनकी ही समझने लगते हैं।

अपने जीवन के उत्तरदायित्वों को ऐसे गम्भीर रूप से लेते हैं कि परिणाम स्वरूप वे निराशावादी हो जाते हैं। यदि धार्मिक होते हैं तो धर्मोन्नत हो जाते हैं और धार्मिक विचारों का विरोध सहन नहीं कर सकते। अध्यात्म और गुप्त विद्याओं में उनको गहरे रूप से रुचि होती है, पर इसमें भी वे सीमाओं का उल्लंघन कर जाते हैं।

प्रायः उच्च और उत्तरदायित्व पदों पर आसीन होते हैं, पर यह होते हुए भी सदा भाग्य पर अंधविश्वास रखते हैं। वे यही समझते हैं कि जो कुछ भी है वह विधाता की इच्छानुसार है और यदि उनके द्वारा हजारों आदमी नष्ट-भ्रष्ट हो जायें तो वे यही समझते हैं कि विधाता की ऐसी ही इच्छा थी। यदि कर्त्तव्य की वेदी पर उन्हें अपना बलिदान देना पड़े तो अपना जीवन दे देने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं।

चतुर और बौद्धिक व्यक्तियों के प्रति आकर्षित होते हैं। गम्भीर विचारक होते हैं, पर अपने विचारों के प्रति विरोध को वे सहन नहीं कर सकते हैं।

ऊपर दी हुई तारीखों में जन्म लेने वाले व्यक्ति विचित्र स्वभाव के होते हैं, और दृढ़ आचरण के होते हैं। उनसे लोग स्नेह भी करते हैं, भयभीत भी होते हैं, और नफरत भी करते हैं।

स्वास्थ्यः– ऐसे लोगों की निम्नलिखित रोगों से पीड़ित होने की संभावना होती है। गठिया, पैरों में दर्द और सोजिश, दुर्घटना द्वारा पैरों, घुटनों और अन्य अंगों में चोट लगना, जिगर और गुर्दों के विकार और दांतों तथा कानों के रोग।

शनि का नकारात्मक क्षेत्र—शनि का क्षेत्र नकारात्मक प्रभाव का होता है, जब जातक का जन्म 21 जनवरी और 18 फरवरी के बीच में होता है और कुछ हद तक 26 फरवरी तक होता है।

ये लोग सब प्रकार से उन्हीं लोगों की तरह होते हैं, जो आकारात्मक शनि क्षेत्र से प्रभावित होते हैं। अंतर केवल यह होता है कि आकारात्मक का प्रभाव शारीरिक होता है और नकारात्मक का प्रभाव मानसिक होता है।

ये निष्ठावान और सच्चे होते हैं और अपनी मित्रता के लिए बड़े-से बड़ा बलिदान करने को तैयार रहते हैं। उसी तरह यदि धोखा देकर उन्हें कोई हानि पहुंचाये तो वे बदला लेने के लिये समस्त सीमाओं को भी पार कर जाते हैं।

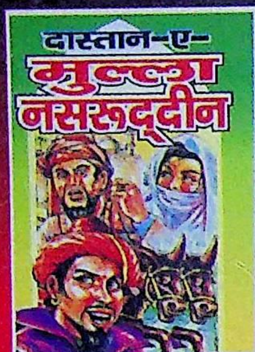
अपने जीवन में एकाकीपन अनुभव करते हैं, पर उसका प्रभाव मानसिक रूप से बहुत अधिक होता है। मानसिक रूप से अपने आप को बीना साथी का पाते हैं, जबकि आकरात्मक क्षेत्र से प्रभावित लोग अपने जीवन क्षेत्र में अपने आपको एकाकी अनुभव करते हैं। नकारात्मक क्षेत्र से प्रभावित व्यक्ति बहुत ज्यादा आवेशात्मक होते हैं और अत्यंत सरलता से उनकी भावनाओं को आघात लग ही जाता है।

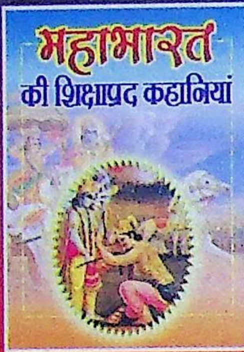
ये सामाजिक भलाई के लिये बहुत सक्रिय होते हैं और ऐसे कार्यों में अपना समय और धन दोनों देते हैं, पर सब काम करने का उनका अपना अलग तरीका होता है। आकारात्मक शनि क्षेत्र से प्रभावित लोगों की तरह धर्म के सम्बंध में उनका एक अपना निश्चित दृष्टिकोण बना होता है।

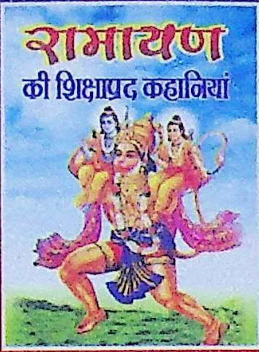
उनकी आंखों में छिपी हुई नियंत्रण करने की शक्ति होती है और यद्यपि वे स्वयं भीरू स्वभाव के होते हैं। आकारात्मक शनि क्षेत्र से प्रभावित व्यक्तियों से इस बात में भिन्नता रखते है कि ऐसे लोग सामाजिक समाराहों से दूर रहते हैं। ये लोग (नकारात्मक क्षेत्र से प्रभावित व्यक्ति) जनसभाओं और बड़े-बड़े समारोहों में दिलचस्पी लेतें हैं। उन्हें थियेटरों, संगीत-सभाओं और मनोरंजन के स्थलों में सम्मिलित होने में प्रसन्नता होती है, पर यदि उनसे सच पूछा जाये तो वे यही कहेंगे कि यह सब होने पर भी एकाकीपन का अनुभव करते हैं।

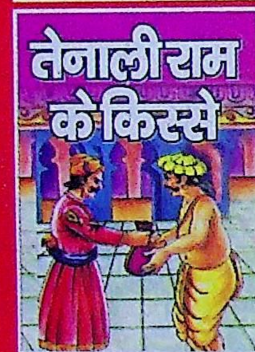
स्वास्थ्य—सबसे अधिक पेट और पाचन इंद्रियों के स्नायुओं के विकारों से पीड़ित होते हैं और साधारण औषधियों से उन्हें कोई लाभ नहीं होता। उनके शरीर में रक्त वितरण कमजोर होता है, हाथ-पैर ठंडे रहते हैं और उनके दांत सबल नहीं होते। दुर्घटनाओं में अधिकतर उनके पैरों और नीचे के अंगों में चोट लगती है। वे अधिकतर निर्बल स्वास्थ्य के होते हैं, पर उनकी इच्छाशक्ति बहुत प्रबल होती है।

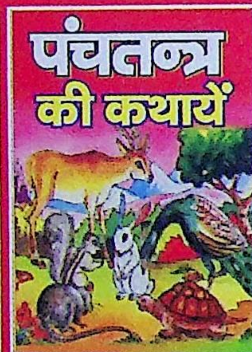
हमारी अन्य उपयोगी पुस्तकें

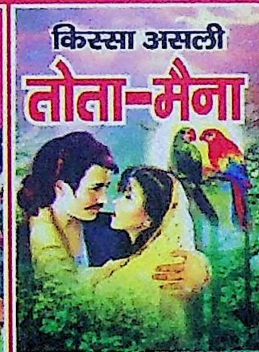


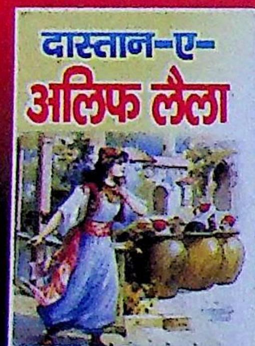


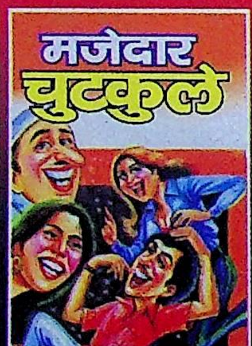


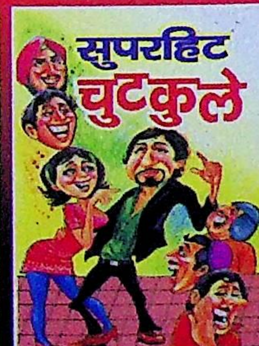














तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स